



ए अकसे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१. गजेंद्र मिश्र- छगनेमे एसाद फडवः एक्छी बौद्धावासी (आगाँ)



२.२. छगनेमे एसाद फडव-आछी बिरुनि कथा



२.३. गोबिन्द सा- (बाँक) गाग जएलै गाग जएलै गाग जएलै ना



२.४. रुखी कागत- एकांकी -रुखा संग्रह



२.७. गजेन्द्र ठाकुर- नाटक- गंगा बिज



२.७. पुष्पा मंडल-१.दाग (उपन्यास) : लोवीनाथ- लोकार्पण २."संगव वाति दीग जवग"क दोसर खेज (टका)क पहिल संगव वाति दीग जवग ०५ दिसम्बर २०१२ मेनि दिन सम्प्राके के दरभंगामे ३.सम्वय २-४ नवम्बर २०१२ गडिया हरौछेछे सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव SAMANVAY 2-4 November 2012 IHC INDIAN LANGUAGES FESTIVAL/ ३ नवम्बरके मैथिलीमे जौनपुराद, जातिबिम्बपुरी रियागति आ मैथिलीमे प्रेमक गीतगव भेल रौलस



२.९. डा.बिमानन्द सा 'बग'-कवकता बिदेहबिम्बपुरीमे मैथिली- बाबा ठाकुराथ चौधरी



२.९. नरेंद्र कुमार सा- आर्थिक संकट मे चेतना, दू दिनक रुत समारोह



३.१. ब्रजदेवे छद्म ठाकुर 'अनिव'- की जेठेव आ की लेवा लाव (आवे गीत)- (आगी)



३.२. ब्रजदेवे संवाद साधव लोठेक दर्जन गीत



३.३. झुल्ले कायत-गीत छी रीव करिता २



ब्रजदेव सा मन्त्र-रीव गजव



३.४. ब्रजदेव साधव झीक दू लोठे करिता



३.५. ब्रजदेवे छद्म ठाकुर 'अनिव'-रीव गीत



३.७. उम प्रकाश-गजन



३.१. बागबिनास साहू- रौन करिता



३.५. किशोर काबीगव- योष्टीनारैना गाग २.



अजीत शि-दीश्वारी ३.
श्याम दक्षिण- उरैया उरैया उरैया



बीनार प्रते-१.
करिता

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अग्नि'-रौन गजन २.



बाजुदेव माडन- रौन

बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट

VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्धी प्रवाण अंक (ब्रैल, तिबहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीटाँक लिंकगव उगल्लै अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link .



VIDEHA

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कगमे Vi deha e j ournal 's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म मँ आगाँक अंक



1 बिदेह आब.एस.एस.एल.डी एनीमेटेडकेँ अपन साँघे/ रैनांगनब नगाडु ।



रैनांग "लेखाड्डे" पब "एड गाडजेठ" मे "हरीड" सेलेक्ट कए "हरीड सु.आब.एन." मे
<http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगन केनसँ सेहो बिदेह हरीड प्राप्ति कए सकैत छी ।
गूगल बीडवमे पठराँ केन <http://reader.google.com/> पब जा कए Add a
Subscription रैलन लिंक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml>
पेस्ट कक आ Add रैलन दराँड ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egr oups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साँघे

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देवनागरी वा लिपिआकबमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write
Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact
at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाँड । सँगहि बिदेहक सुँभ
मैथिली भाषापाक/ बच्चा लेखक नर-प्रवाण अंक पढ़ू ।
<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रौन्समे आँनलाइन देवनागरी ठाँगन कक, रौन्स
कापी कक आ रड डाक्यूमेन्समे पेस्ट कए रड फाँगनेकें सेर कक । विशेष ज्ञानकारीक लेन



VIDEHA

ggajendra@videha.com पर सम्पर्क कर।)(Use Firefox 4.0 (from
WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/
Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e
magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/
photo files. बिदेहक प्रवास अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक संग्रह
सभ (डिस्क, रीड स्वथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पर जाँड।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबीश्वर पुरी महारि विद्यापति। भावत आ लगानक मष्टिमे पसवत मिथिलाक धवती प्राचीन
कालहिसँ महान प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि। मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना लोकनिक
चित्र मिथिला बने मे देखू।



लौरी-शंकवक पानरमे कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलाकबसे (१२०० रर्य पुरीक) अभिलेख अंकित
अछि। मिथिलाक भावत आ लगानक मष्टिमे पसवत एहि तबहक अग्रज प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र,
अभिलेख आ मुर्तिकलाक हेतु देखू मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अग्रज संगति बिदेहक मर्त-गँजन आ नृज सरिस आ
मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसंगाष्ट सभक संग्रह संकलनक लेन देखू बिदेह सूचना सर्क
अग्रज

बिदेह ज्ञानरतुक डिस्कमन होबसपर जाँड।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरतुक) पर जाँड।



এ রেব হারা পুৰস্কাৰ(২০১২)[সাহিত্য অকাদেমী, দিল্লী]ক জেন অহাঁক নজৰিমে কোণ কোণ লেখক উপহাস্ত ভূমি ?

Thank you for voting !

শ্রীমতী জ্যোতি স্মৃতিত চৌধুরীক “অৰ্চিমা” (কবিতা সংগ্ৰহ) 29.55%

শ্রী বিনীত উপেনক “হুম পুৰ্ণিত ভূ” (কবিতা সংগ্ৰহ) 5.26%

শ্রীমতী কামিনীক “সময়সঁ সম্ভাদ কৰেত”, (কবিতা সংগ্ৰহ) 4.05%

শ্রী প্ৰবীণ কাশ্যপক “বিষদন্তী বৰমান কানক বতি” (কবিতা সংগ্ৰহ) 2.83%

শ্রী আশীষ অৰ্চিমাৰক “অৰ্চিমাৰ আখৰ”(গল্প সংগ্ৰহ) 21.46%

শ্রী অৰ্পণাত সৌভক “এতৰে ঠা নহি” (কবিতা সংগ্ৰহ) 4.86%

শ্রী দিলীপ কুমাৰ না “কুৰ্ণক জগলে বহৰে” (কবিতা সংগ্ৰহ) 5.26%

শ্রী আদি যাদৱক “ভোখৰ পেমিনসঁ লিখন” (কথা সংগ্ৰহ) 4.05%

শ্রী উমেশ মন্ডলক “নিশ্চকী” (কবিতা সংগ্ৰহ) 21.05%

Other : 1.62%

এ রেব অম্বুৰাদ পুৰস্কাৰ (২০১২) [সাহিত্য অকাদেমী, দিল্লী]ক জেন অহাঁক নজৰিমে কে উপহাস্ত ভূমি ?

Thank you for voting !

শ্রী বৰেন কুমাৰ বেক “যাতি” (সবাতী উপহাস্ত শ্রী বিষ্ণু সখাবাম খাস্তকৰ) 34.43%

শ্রী মহেন্দ্ৰ নাৰায়ণ বাম “কাৰ্মেলীণ” (কোঁকণী উপহাস্ত শ্রী দামোদৰ মারজো) 11.48%

শ্রী দেবেন্দ্ৰ না “অম্বুৰ” (বোঁগা উপহাস্ত শ্রী দিবান্দু পালিত) 10.66%

শ্রীমতী মেনকা মল্লিক “দেশে আ অম্বু কবিতা সভা” (লোপালীক অম্বুৰাদ মুন- বেমিকা খাপা) 20.49%

শ্রী প্ৰশস্ত কুমাৰ কশ্যপ আ শ্রীমতী শিশিৰাণা- মৈথিলী গীতগোবিন্দ (জয়দেৱ সংকৃত) 12.3%

শ্রী বাম্ভাবায়ণ মিহ “মলাহিণ” (শ্রী তকয়ী শিৰশীকৰ পিল্লিক মনয়ালী উপহাস্ত) 9.84%

Other : 1%



जै शिष्ट, शोम्त्रम केव ए गीतमे धीरेन्द्र प्रेमसिर्के सरहावाक गीत ले शोम्त्रीय गीत देखरामे अरै छहि तँ ए गीत बिदेह अडियोमे अगल्लोड छै, आ ओ ओही पात्रक छैन (छाँकाव छैन) सँ लेकाडि कएन गेन छै जकब ए कथा छिअ, आ एएह गधव-ब्रौह्मरादी पवम्पवाक ज्ञीत अछि ।

बिद्यापतिक लोभ पर्वणा- ज्ञत२ ओ रात्रिय बरखुक समर्थन करै छथि रा म्नीक दर्दकेँ जेठोत: लोभ तग चकवई भेवई जखनी लो रा गरीरक बन्ध -सुख सगलई नहि भेव, गरै छथि

एतौ उतुव रह छि । समाणासुव पवम्पवा दूथावा लोभ सरदा लैशेनक कगमे छै । ज्ञातिवीम्बिब आ मयूत आ अरल्लुईरना बिद्यापति सेहो धुतिमागम आ लोभकरिजय नाष्टकमे एमशे: एकवा लैशेनक कगमे जेनहि । अरल्लुई सेहो माहिलिक भाषा बहे, आ समाणासुव पवम्पवाकेँ दूथा धावाक प्रगतिशीन लोभ द्वावा लैशेनक कगमे प्रयोग कएन गेलै । ज्ञन करि रा एकरीरिष्ट २-४-१०-२३-३० धरि पद्य लिखि क२ मत्तु, ले लोभ छै, दूदा जै ए लैशेनक कगमे प्रयाद हूअ तँ से ज्ञातिवीम्बिब आ मयूत आ अरल्लुईरना बिद्यापतिक मंग यात्री-नागार्जुनक लैशेनपवम्पु प्रगतिशीन मैथिली करितामे अरै छै । दूदा ज्ञातिवीम्बिब पुरि करि पागरेना गधव ब्रौह्म बिद्यापतिक पवम्पवा तँ रिदागत, पिआ देमोसुव आ बासदेर प्रसाद मन्दन माकन्दवक माक/ महामाकमे देखा पडत, हज्जावक हज्जाव माक लिखि क२ लोहा देनहि, हमवा सग लोभ जै ओगमेन किछु लिखि क२ ठाँग क२ ले छी तँ तकरो मथा म५-दु म५ ओहिना भ२ जाग छै ।

जै तलोनीक लोकाथ माक घवगव लैसि रात्रिय धर्म रैना करिता पदारनीमे घोमिया दियो, शिर सिंह, नथिमाक नाम घोमिया दियो तँ ज्ञातिवीम्बिब पुरि पदारनीक नय छुँछे जाग, आ रिदागत आ पिआ देमोसुव पाठी ओकव मल्ल गायन ले क२ गरैए आ ए यज्जत्र रिष परित्रियेक खतम भ२ जाग ।

‘डायमपोवा कम्युनिटी धरि गहूँरौक उद्धेयमे कलक असहति अछि, जे काज अखन हेरौक टाली से अछि लष्टर स्पीकव ज्ञतए बहि बहन छथि ओतुक्का दुधटावक जेन ए सुल्ला समाज आगाँ आरै । रचित, महिना आ समाणासुव पवम्पवाक स्पाक्कर्मनक कगमे । ज्ञहाँ धरि मैथिली लिखि मीडियाक गप अछि, ओतौ समाणासुव लेखन क्लानिटी आ क्लानिटी दुनुमे १००% स्वागव अछि । ग्लैबल्ले तँ लोभ छिअ, ४-३ म५ मैथिली पोथी, दम हज्जाव मैथिली तान-पत्र पीडीएफ. कैमवा लेडी कापीक कगमे बिदेह आर्कागरमे दूधत डाँनलोड जेन उगल्ल छि । ओगमे देरणागरीक अतिविद्ध तिवहूता आ ब्रैनमे सेहो मैथिली अछि । गुगल आ बिदेहक सोज्जसँ चारि म५ उँगव पोथी गुगल ब्रैनमे १००% डाँडज आ डाँनलोड जेन उगल्ल छै; एमे सँ मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शेनरीक मात ठी पोथी/ फागन फ्रिष्टर कामस (एट्रीब्यूशन-मैथिली अनागक)नागसेनक अन्तुअत १००% डाँडज आ डाँनलोड जेन उगल्ल अछि, माल कियो एकव उँगयोग फ्रेडिष्ट द२ क२ (माल साभाव लिखि क२) आ अही तवहँ आगाँ नागसेन रितरित कवरौक शेटि स्लीकाव क२ क२ सके छथि, एकवामे वृद्धि क२ एकव सरर्थन आ रारमणिक उँगयोग क२ सके छथि । ‘डायमपोवा कम्युनिटी लष्टर कम्युनिटीक प्रति अगन कर्ज उँतारि बहन अछि । लष्टर स्पीकव रहु आगाँ रँति गेन अछि, ओकव मोट आगाँ छै, ओ समाणासुव पवम्पवाक लेखनसँ अगल्ले आगडेष्टिफाग क२ बहन अछि, दूदा सुथाएन दूथावा समाजसँ सकावामेक दिना आ म५ स्फेवमे पाडौ अछि ।



सूचना

मैथिलीमे डी० लिट० उपाधि प्राप्त:- डॉ० नरेन्द्र नाथ झा ग्राम+पत्रालय- मेघौल, भाया- सकरी, जिला मधुबनी, बिहारक निवासी छथि, जे सम्प्रति अध्यक्ष मैथिली विभाग पं० यमुना कार्यी जयन्ती कॉलेज बगाही (ढोली) मुजफ्फरपुर, बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरमे कार्यरत छथि। जनिक पी-एच०डी० उपाधि जून २००६ ई०मे "मिथिला-भाषा रामायणमे शक्ति तत्त्व" विषय पर डा० रमण झा ल०ना०मि०वि० दरभंगाक शोध निर्देशनमे भेलनि।

हिनका डी०लिट० उपाधि "मैथिली साहित्यमे सीतातत्त्व-निरूपण" डॉ० नीता झा, विश्वविद्यालय प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग, ल०ना०मि०वि० दरभंगा शोध- निर्देशनमे ०३.०९.२०१२ (Viva-Voce) सुसम्पन्न भेलनि। जकर वाह्यपरीक्षक रूपमे डॉ० वासुकीनाथ झा पटना एवं डॉ० भगवानजी चौधरी, साहिबगंज (झारखंड), विषय-विशेषज्ञ उपस्थित छलाह। हिनक डी०लिट० परीक्षाफल १०.०९.२०१२ सोमदिन प्रकाशित भेल तथा डी०लीट० मूल उपाधि प्रमाण पत्र ल०ना०मि०वि० दरभंगा चतुर्थ दीक्षान्त समारोह दिनांक ०३ अक्टूबर २०१२ ई०क भारतक राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जीक अध्यक्षतामे प्रमुख रूपमे प्राप्त भेलनि।



डॉ० नरेन्द्र नाथ झा

प्रेषक
श्री राम नरेश राय
NET /J.R.F (U.G.C)
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
B.R.A.B. University मुजफ्फरपुर
मो०- 9709712118



(बिदेह ई पत्रिकाले ३ जुलाई २००४ मे अखन धरि ११९ दमेक १,७२७ ठाममे +३,७२२ गोठे द्वावा ४३,७३१ बिभिन्न आग.एम.पी. मे ३१४,७०७ लेव देखन गेल अछि; धन्यवाद पाठकगन। - गुगल एनालेटिक्स छेटी।)

अगल मतब ggajendra@videha.com गब गछै।

२. गद्य



२.१. राजेंद्र ठाकुर- छगनेमे एषाद फडवः एठ्ठौ बौयाबान्नी (आगाँ)

—



२.२. छगनेमे एषाद फडवः-आठ्ठौ बिरुनि कथा



२.३. गौरिन्द सा- (बाँके) गाग छएलें गाग छएलें गाग छएलें ना

—



२.४. अम्मी कागत- एकाँकी -रुलावा मगछ



२.३. गजेन्द्र ठाकुर- नाटक- गंगा बिज



२.६. पुष्प मन्दन-१.दाग (उपन्यास) : लोवीनाथ- लोकार्गण २."सगव बाति दीप जवय"क दोसर खेज (चर्चा)क पहिल सगव बाति दीप जवय ०१ दिसम्बर २०१२ मेनि दिन सम्बन्धकेँ केँ दरभंगा मे ३.समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ गडिया ठेरीछैठ सेन्टर भावतीय भाषा महोत्सव SAMANVAY 2-4 November 2012 IHC INDIAN LANGUAGES FESTIVAL/ ३ नवम्बरकेँ मैथिली मे लोकार्गण, जातिबिम्बपुर बिद्यापति आ मैथिली मे प्रेमक गीतगव भेल रत्न



२.१. डा.कमानन्द सा 'कमा'-कवकता बिदेहमे मैथिली- बाबा ठेकनाथ चौधरी



२.१. नरेन्द्र कुमार सा- आर्थिक संकट मे चेतना, दु दिनक हप्त साराह



गजेन्द्र ठाकुर

जगदीश प्रसाद मन्दन: एकठाँ रीथोग्राफी (आगाँ)



1978 ई.मे पंचायत चुनाव भेल । सीधा झुकावना (दुर्गम उम्मीदरावक) भेल । रूढ़त-अनुपगतक परिचय गामक सब रूढ़तेत भेल । एकठा कनीठा उम्मीदराव- जखन विरोधी नीक झुकाव भेल, तब रीट भोगेद्वारा जीक मध्यस्थतामे पण्टेतिओ मारि लेल गेल । झुकाव पंचक रीट विरोध ईमि जाए । अंतमे ई भेल जे ल कम्युनिस्ट पार्टीक रूढ़तेया पंच उता आ ल प्रमुखजी (विधायक ठाकुर) क रूढ़तेया पंच अरिजे तैयाव बहनथि । झुकाव पण्टेती तँ पढाएल अछि । जखन सब छोट दिनेस तखन गामक पंच रूढ़ति । जगमे एकठा शक्ति भागन जे दुनु पक्षक रीट जे ल समर्थित होथि ओ पंच हेत । तकरियाण भेल तँ एका छोटे शैव ल रीटनाह । ओहल शैव रीटना जे तीस झुकाव अभिमानक संग बहनथि ।

पंचायत चुनावसँ पुरि 1977 ई.मे दिनेसीया सबकाव आ पण्टेती सबकाव रूढ़ति गेल । एक घर परिवारिनि पौदा लेलक । गामक पार्टी (कम्युनिस्ट पार्टी) अलका नई ग नई चुकन भेल । जगसँ गुण-अरुण रूढ़ति चुकन भेल । तँ ए टोपना उम्मीद बहल करे । छुट्टेत साराती रूढ़तिथीक एकाठा घृति काज पंचायत चुनावमे शैव ल बहन । एकठा उम्मीदराव- रूढ़त अनुपगतमे लामो रूढ़ति देन जागत भेल । जहिया कतो बाक्सक अर्थ बका केनिहल भेल, सबक अर्थ सुवापन करेना । काज करेमे हलना बाक्समे छी । असंगत नहामकेँ पीठपव नादि असमान नह गेल ।

चुनाव घोषणाक विरोधमे झुकाव आ सबपंचक मामला केँ पढ़ल । सबपंचक मामला निचले कोर्टसँ हल जा गेल । झुकाव चुनावक मामला हाईकोर्ट पढ़ल । चुनाव अरिज भेल । जहिया ठाकुरक विरोधी ठाकुर-ठाकुर तहिया रूढ़ति पंचायतीक झुकाव रूढ़ति सब झुकाव झुकाव । झुकाव-सबपंच काजो तहिया । मात्र गामक पण्टेती । सबपंच लेल सेहो रूढ़ति गेल । ओना पार्टीक तीतब किछु दवायि रूढ़ति गेल । दवायि ई जे जिनका सबपंचक उम्मीदराव रूढ़ति गेलनि ओकरे विनाश दोसब लामोलेन कइ देलनि । पार्टी अणन निरुपे आपस करेत चुनाव नहल ।

गामक रातारकामे गुमावले बहल । नीक-नीक अणवाधीक गाँव लेलमा । एक गुण भुल-भुल रूढ़ति जेन काँट चुकन भुलल । ओहो सब जहिये । जे चुनाव (पंचायत चुनाव) मे रूढ़ति नाहीं तबे किछु छोटे रूढ़ति आ किछु गामोमे घुमेत । कमकम बहल चुनाव शक्तिसँ भेल । झुकाव पण्टेती काज एक छोटे (प्रमुखक पण्टेती एजेण्ट) दम-रूढ़ति मोहल देन रूढ़ति हाँक-हाँक कइ था गेल । तही रीट पार्टीक एजेण्ट देखलक कि हाँक-हाँक कइ पण-सात थापल झुकाव नगा देलकनि । थापल नगिते झुकाव उगलक ।

भुल रूढ़ति जहल कठनाह एक छोटे एकठा अनुपगत केरिमे पकड़ । गेल । अनुपगति शिरनाह महलक । छेव-मेले पकड़ । गेल । गेल-पण्टेती शुक भइ गेल । आदति छोड़ले जोकब गेल नगलनि । संग-संग झुकाव भेल जे पकड़ कइ थाणा पढ़ल देन गेल । तहिया दोसबक संग (दोसब अणवाधीक) सेहो भेल । ओना खुदा-खुदा रूढ़ति होगते बहल भेल, झुकाव से सब कमल ।

पंचायतक रिधि-विधानक जे कितारें भेल सेहो तेहल भेल । लोक-सभामे भोगेद्वारा जीक अनुपगतसँ सूर्यप्रति भेल । गंधी जीक कण्ठा आ मण्डल जगत रीटविके दुनियाँमे भेल रूढ़तिविके जमीनपव ल भेल ।

अही रीट (1977 ई.मे) एकठा पण्टेती जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ भेल । ओ बहति म. काली कान्त मा, आ.ग.पी.एस ।



रैवमाक रैगले पुर कडुरी गाम छै । कानी राँरु कडुरीयेक । 1969 ई.क रैटक आग.पी.एम. ओ गाम आएन बहनि । समावपुव रैजावक कोला काज बहनि । रैवमा कडुरीक रीट राधक अर्छा पेरियामँ न२ क२ पक्की मड़क धरि कतेको बाम्ता अछि । अगला घबसँ सीधा पुर हुनकब घब छन्हि । असकले पएले समावपुव जागत बहनि तँए सोम-सोम बम्ता हिया-हिया रैठेत बहनि । जखन रैवमा दूमहरी नग एला तँ बम्ता दु दिशिया रूमि पड़नि । दू घुमि क२ आगु मिलेत अछि जगठाम सँ समावपुवक बाम्ता सोम भ२ जाग छै । दूमहरी रैगले गामक छिरावक स्थान । स्थान बहल टाक दिससँ लोकक आराजाली तँए टाक कात बाम्ता अछि । जगठाम आरि जखन आगु हियोननि तँ सोमका पछिम दूहँ रूमि पड़नि । छिराव स्थान घबक रैगलेमे पुराबि भाग अछि । ओही बम्तासँ आगु रैठनाह । तँ दवरैज्जेपव छनि एला । ओना छेहवासँ जगदिने प्रसाद मण्डन छिन्हैत बहनि । दूदा एक सकुनमे पठैक कहियो अरुमव ले भैठनि । तेकब काषा छन, शुक्रमे ओ गाममे किछु दिस पठि नरानी रियायमे नाँउ लिखोननि आ जगदिने प्रसाद मण्डन गामक सकुनसँ छनि कडुरिये अपन प्राणवारीमे नाँउ लिखेननि । अखन तँ मिछन सकुन धरि मिलि गेल अछि दूदा ओग सम्य मिछन सकुन अलग छन । सब रैरस्था अलग छले ।

मयमा पास क२ जखन धुमाड सन्ध्यात पठ्य-लिखए आरि गेलनि, पितार्क सतोय भ२ गेलनि । तखन ओ (कानी राँरु) तद्विया हाग सकुनमे दसमाये नाँउ लिखोननि । ओग सम्य रिय सँष्टियो हिकेठक दसमा धरि एडमिशन होग छन । दसमा-एगवहमाक मिश्रित मिलेरस छन । साल भरिक पढाति दसमाक परीक्षा होगत छन जे सकुनमे होगत छन । बहिये जकाँ रियाथी हेलन कबैत छनाह । जेना आन-आन रैहूत देगेमे अखला अछि । दसमा-एगवहमाक रीट एमेसमेंट प्रथा सेहो छन । दु सए नम्रवक होगत छन । जगसँ मैट्रिकक रौडि परीक्षामे अस्मिये-अस्मिये नम्रवक रिय होगत छन । अस्मियेक नम्रव रियायमे (सकुने) सँ पठाउन जाग छले जे रौडिक (मैट्रिकक) विजयमे जोड़ा होग छन । दूदा एकठाँ रात रीटमे जकब छले जे राँगस-राँगस नम्रव एनापव पास होगत छन । दूदा तद्व भितर एकठाँ आलो छले जे समाज अग्रगण्य दमे नम्रवमे पास होगत छन । एकब साल ई ले जे दस नम्रव असाध भेल । अरिक्कि रियाथी रीस नम्रवक भितर बहैत छनाह, गोष्टि-गुवा आगु रैठेत छनाह । अष्ट रियय (हैकनष्टी) न२ क२ नाँउ लिखोननि । दूदा साल भरिक पढाति (दसमाक परीक्षा) सकुने ले आला-आन सकुनमे टर्क पात्र कानीराँरु रैनि गेला । काषा भेल जे अखन धरि हाग सकुनमे अठमसँ न२ क२ रौडि परीक परीक्षामे मागसक रियाथी विजय अग्रअएन बहैत छन । दसमाये फर्म (पहिल स्थान) भेलनि । अष्ट रिययमे एकठाँ धक्का लागल । धक्का ई लागल जे अखन धरि परीक्षाक नम्रव दगक रैरहाव छन ओ दोसव वगक छन । घुस्फुनियाँ कठैत आठक नम्रव घुस्फुनैत छन, जखन कि मागसक रिययमे सए-मे-सए छन । कनीष्टा उदावहण- जखन हाग सकुनक समर्थनमे टर्क भेल तखन ओ कहनि- “आ क२ सकुन रिदा होग कान हाथक तबहत्थीपव पाँछी अथेजि शिरद रा एकठाँ प्रमक उतव लिखि नग छलौ आ सकुन पड़ैत-पड़ैत वष्टि नग छलौ । जागयो कान आ अरैयो कान कले छलौ । सकुन पड़ैत पहिल कनपव जा रैठि या जकाँ हाथ पोग नग छलौ, तखन रैस छलौ । ओना शिक्षा पछतिमे सेहो किछ अन्तव अछि । वष्टैक छनि सब वग अछि ।” प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक पास केलनि । दूदा घबक स्थिति ओते नीक ले तँ खवारो ले । काषा जे ओ महापात्र परिवारक छनाह । से जमीनदारिये जकाँ पसबन अछि । तद्वमे महापात्रक कम जन-संख्या बहल अखला धरि अरौदे छन्हि । ओग सम्य सी.एम. कउलेज रैहूत नीक कउलेज रूमन जागत छन । नीक रियालीक एडमिशन होगत छन । 1959 ई.मे टाबिष्टी कउलेज खूजन जगमे जनता कउलेज समावपुवो आ सरिसो कउलेज सेहो खूजन । मैट्रिक केना पढाति सी.एम. कउलेज ले जा, ओना आव.के. कउलेज सेहो नीक छन, दूदा दूगु रैरहाविक पछतिमे किछ अन्तव छन । जगठाम आव. के. कउलेजमे सरहक प्रणजागनि छन तगठाम सी.एम. कउलेजमे ले छन । दोसरो



काका भुन सी.एम. कठलेख सबकाबी रैनि टुकन भुन । डाव थलेमेक सीमा निर्धारित भुन । सी.एम. कठलेखक गच्छा बहिनो कानी रौरु सविमो कठलेखमे नाँउ लिखोननि । काका भेवनि जे एकठास दूठा रिग्याथी पठरैक रैदनामे बहे-खागक जोगाव गणि गोननि । परिवारक आगदनी ओते खबार ले जगम सी.एम.कठलेख ले जा मले भुनाह रुदा सहयोगक अन्तर बहननि । निष्ठलेख गणनीमेक रंग प्रथम श्रेणीमे आग.ए. पास केननि । दबडगामे बहेक गव गणि गोननि । अंग्रेजी आगमक रंग सी.एम. कठलेखमे नाँउ लिखोननि । आगम थ्रेजुएठ भन् निकननाह । एकठा कनीठा रौत- जगदीने प्रसाद मन्डन जग समये जगत कठलेखमे पठेत बहनि तग सम आगमक पठ । ग ले होगत बहे । खानी मैथिलीमे तीन शिक्षक बहनि, जगम मैथिलीमे होगत बहे । जगदीने प्रसाद मन्डन हिन्दी, बाजगीति शोमक रिग्याथी बहनि । आगलेठे म हिन्दी आगमक तैगारी केननि । ओना दू गोठे (दूठा शिक्षक) कठलेखमे बहनि रुदा पठ । ग ले होगत बहे । री.ए.क हार्म धरि जगत कठलेखमे भवननि, परीक्षा सी.एम. कठलेखमे भेन ।

जगदीने प्रसाद मन्डन डिराव मथानक पडरकिया बस्ता पकडल दवरजजागव आरि गेना । आग.पी.एम. अमरबक आरै अपनारै सौभाग्यमोनी रूमननि । पकडा क२ दवरजजागव रैमोननि । पडननि त कहनि जे समावधुव जाग डी, काज अछि । कहनि जे अहाँ अमरबे डी, तहमे पाएले डी दिक्कत छत । कहनि जे कोना दिक्कत ले छत । हव कहनि जे हमरूँ रंग भन् जाग डी । किछु गग-मग करैक मोका मेहो भेटेत । रुदा ओ पुनिस नजरिना । कहनि जे मागकिन दिख घुमेकानमे द२ देरै ।

मागकिनम समावधुव गेना । जिनगीक तेना क२ पहिने भेटै दू गोठेक रीट भेन भुन । ओग दिन आ अन्दाजमे ले आन भुननि जे समरूप एते गाठ आ जिनगी भवि निमहतिनि । अन्दाजमे ले अरैक काका भुननि जे कतेको पुवान हित-अपेक्षित छुँछि गेन भुननि । ओना नरको रैदरौ कवननि । एकठा उदाहवा- एकठा गामेक रंगी भुननि, कठलेखमे रंग पडल बहनि । रुदा जागतक सीमा घेबल भुननि । मठेठे रैकमे हुका लाकवी भेननि । नीक दवनाह । अमरुष आगदनी । रिटाव एते रैदनि गेननि जे गाम एनागव भेटै-घाँ ले होगत भुननि । समयोग एहेन भेननि जे दमे-रौव रैथि पडाति मकुठव एकसीठेठेमे जखनी भेना आ गाम आरि किछु दिनक पडाति मरि गेना । अथला दूथ होगत भुनि जे रुगना पडाति देखे (जिडना) ले गेननि । रुदा रिटाव एहेन रैनि गेन भुननि, जिनगीक अमरुषम, जे दोम-दुमेलक रीटक दूविक हमारुन कि होगत छै मे रूमि गेन भुना । कनीठा उदाहवा- एक गोठे नजदीकी बहनि । हुका एठास रिखाह बहनि । दिन-वाति बहना । रुदा हुका (जिनकव काज बहनि) दोम-दुमेलक रूमिक ले बहनि । सब रंगक लोक काजमे नागन भुन । एक गोठे जिनका रैदनाम करैक रिटाव मममे बहनि, चाहे जे पडिना कोना काका होड, दानिमे दोहवा क२ नुष द२ देननि । पडाति जखन दानि नुषगव भन् गेलै तखन जगदीने प्रसाद मन्डनक नाँउ नगा देननि । एलिा दोमवठास भेन । रिग अदहन देल रैवतनमे सुखले दानि न द२ नाँउ नगा देननि । तहमँ एकलेव भेन जे गामक दुर्गापुजामे कार्यकर्ता भुना, नाचक भाव भेटेननि जे नीक नाच हुअ । तग सम गाम-घवमे नष्टक-लोठकी कम भुन आ नाच रैमी अलको तवहक भुन । एक गोठे नाच अलक भाव न२ केननि । रैठि याँ नाचक खुरै प्रचाव भेन । जखन नाच आन त जेहल नीकक प्रचाव भेन बह तेलल रहामो भेन । रुदा जखन कियो परिवारमँ निकनि समाजमे डेग उठरै त ओ आ मणि छलै जे नमर काजमे रैगियो आ भविष्यो, दू काज होगत छै अगना भवि लोक परिगामे करै, रुदा किछु छुँछि बहि जाग छै, तखन कि कवन जात । हँ एते जकव जे अधिक-म अधिक काजक सब पहनुगव नजरि बाखक छल । एलिा कोना घटलोक होगत छै । कियो रैगाव भुनि



बा कोला दोसरे काबा डुबहि, बंग-बिबंगक स्मारक लोक दैत छि। नीको बहे छै अथवा बहे छै, तगठास एहल समया उठरौक सभारना बहे छै।

सुरगीय काली राबूक पहिने रहानी डी.एस.पी.क कपमे अगवतना (त्रिपुवा)मे भेल बहनि। चाबि सए कपैया महीना दवानी। समेयो समत बहए। अत तक अ रात रैजेत बहनाह जे सिगरेट आ दाक पीरैत छलौ। करीब पाँच रथ पीलौ। परिवारमे मत्तदेक उभरि गेल बहनि। उभरैक काबज सगरे छल। एक साधारण थाना सिगाली दम रीघाक गुराँठ कीनि, तीनि मजिना मकास रँगा, पाँच नाथक रैष्टियो रिखाह क२ नगए तग संग मगाँतो सतकेँ लोकरी नगा नगए तगठास अ (काली राबू) डछ्छे हाकिम छथि। दूदा ओ परिवारकेँ रूनिआदी ठगसँ रँदनाह छै छल। अगल थनदानी वृत्तिकेँ अथवा वृत्ति कहे छल। परिवार कर्जमे डूबल छल। दियानीक मगड़। केँमे चलेत छलनि। ओग रिवादकेँ जेना-तेना काली राबू निगठौननि। कर्जसँ परिवारकेँ दूकत लेननि। पछाति घब रँगलैक रिदाव लेननि। छुट्टी नगा रँलौननि। अगलसँ छेष्ट ताए मामिन भएकेँ अगवतनेक हाग-सुकुनमे काज धड़लनि।

मानमे एक रँव निश्चित कपे अरिते छल। मास दिस गाममे बहेत छल। तग-रीट तीन-चाबि छेँ जगदीने प्रसाद मण्डनसँ भ२ जाग छलनि। दूदा मात्र तीन-चाबि छेँमे मान भविक किरिया-कनापक कि छैत। हुनक अगल कष्ट छलनि। काजो-उदेम ठेकना क२ अरैत छल। आठ दिस होगत-होगत काज निरैरै छल। पछाति कर्दुमाले (मासुब-मात्रिक-रँलिन गह्रादि) कले छल। मास दिस प्रवेत-प्रवेत काजो निरैरै जाग छलनि। आ छष्टियो रीत जाग छलनि। काजक दोड़मे काजे गग-मग कलेक योको दैत छै। एकठा काजक भाव अगला उगव बथे छल आ मगाँतो सतकेँ नगरैत छल। मरँल रँदलनि। एनाग-लोगागक संग थोनाग-पीनाग सेहो रँदल लेननि।

हाग सुकुनमे फसल कलेमे तुलोकक योगदान रँसी छलनि। एक दु लमरँव कम होग छलनि। पूर्वाचनक त्रिपुवा, महीपुव, मोजोव, अकशाचन, नागोलौड गह्रादि नीक अथवायल छलनि। ओना धार्मिक प्रवृत्ति दिस रँदल। गुजा-पाँच दिस रँदल लेना। डी.एस.पी. सँ एस.पी. तेना पछाति अगल रँदनी छैनिग कओजेनमे कवा लेननि। ता एस.पी. ओमे बहनाह। तीन-चाबि मान पछाति (अपेछा तेनागव) जगदीने प्रसाद मण्डनकेँ त्रिपुवा अरैले क२ नगल। दूदा जगदीने प्रसाद मण्डनकेँ दोहरी ओमरी लागल बहनि। परिवारसँ न२ क२ दूकदमाक खर्च धरिक। ल केँ-कचरवी अरै-जागसँ छुट्टी आ ल दोसव दिस जाग-अरैक छुट्टी।

जगदीने प्रसाद मण्डनकेँ १९९५ अ. धरि अरैत-अरैत पूर्वाचन देखेक एते जिक्रमा रँदल लेनहि जे अगलकेँ ओ ले समहानि लेनहि। ओना समेक पनथति छेँ लेननि आ से छेँलेनि दुर्गागुजाक जिम्मासँ अगल तेनागव। दोसव काबा एहो लेननि जे पचामो सँ उगव दूकदमा निरैरै लेन छल जगसँ काँटे-कचरवीक आराजाली सेहो कम लेननि। दूठा मेलन केने (३०१ आ ४३३ अर्थात् मृत्युक प्रयास आ अगलगुगी।) मात्र रँदल लेन छल। तद्वमे ४३३ (अगलगुगी) केने हवागये लेले। हवा अ लेले जे सभावपुव-मधुरनीक रीट जे केँकेँ रँदना-रँदनी लेले ओगमे अ केस हवा लेले। ओना कते गोठे दूकेँ सुनल बहनि जे केँकेँ केनेक हागलो गाँव होग छै। आ एहो सुनल बहनि जे केनेो हवा जाग छै। ओना दूरिवा बहलै कबहि। जगसँ थुनियो होगलि आ टिनतो। दोसव ३०१ (एठेम् ४ मडिब) बहलि ओगमे तँ सजा भ२ लेन बहनि दूदा थुनी अ बहलि जे जते सजाए काबुनी दोड़मे हेरौक छली बहे से ले लेन बहे, तँ मजगुतो जोबी भता तोडा-तोडा छुँ छै जाग छै,



नात-हासि झकदमासँ (३०मँ) जे भेन होगहि झदा एकठा अश्वतर जकब भेनहि जे अश्वर न्यायानयक
हवसी केना डोलीत बहे छै । ओना कोष्ट-कटहवीसँ मिसटिती जकाँ जकब भेना । झदा टिन्ता तँ
बहरें कबहि । हज्जाव देरी-देरतसँ जहिना एक जगदमारी तगतगब, तहिना दूनु केशे बहहि । एक
दिन जखन सब केशेकें मल पाड़ा आग.पी.सी.सँ मिलेनहि तँ रूमि पाड़नहि जे जँ शुकते सँ मज्जा
होगत अरौत बहितिहि तँ भविसक सब दिन जहनेमे अगिला केशेक हँसना सुनिती । झदा केहेना
फड़न आगक गाढ किअए ल हुअ झदा पकनागब रौ बिहाड़ा से रहबि एक्री-दुकी गितीमे छनि अरौए
तहिना भेन बहहि । तीस जखन अतिमहाकें सातक फष्टक तोड़क भाव न२ लेननि तेहेन मलमे
उठननि । हव ठामकन सब केशेक मज्जा जोड़नहि तँ १०१ रर्थ पुरेत बहहि । जिगगी दिन तकननि
तँ रूमि पाड़नहि जे म१ रर्थक काज तँ पुरिये गेनहि । जँ ले केन बहितिहि तँ दोधी केना
भेना ? साँढक साँप जकाँ केदूआ छोड़क मोमस देखि जिगगी रँदलेक रिटाव केननि । पेटुना
जिगगी तँ अगिला जिगगीक मोगब रँनि गेन छननि । साहित्य-दिशेमे रँदक रिटाव उठननि । झदा
साहित्यक रिवाही तँ बहि टुकन छना, मूब-पता तँ रूमि टुकन छना । ठेरिया-ठेरिया किछ
साहित्यकावक साहित्य पढ़न गगना, झदा मल हव ठामक गेननि । मल ठामक गेननि ए जे कितारै
रात जँ आँखि देखन हुअ ओ रँसी नीक होगए । कितारै किलेक थटिक कठौती क२ घुमेक रिटाव
केननि । देशेक केवन, कर्षक, कर्षीव छोड़ि सब बाज्य देखननि । झदा जून २०१२ ए.मे
केवनक धवतीगब कोटिमे जखन “गामक जिगगी” नयकथा संग्रह लेन ठेगोव साहित्य प्रबन्धकाव प्राप्त
भेननि तँ केवन सेहो घुमि लेननि । १९३.१ ए.मे केवनमे रामपंथी सबकाव रँनन छन । देशेक ओ
बाज्य जगठाम शेत-प्रतिशित पढ़न-लिखन छथि । खुशी भेननि ।

अखन धरि भुगोन एतरे रँमे छना जे देशेक पुरी भाग असाम छी । आन-आन बाज्य जे रँनन ओ
पडातियो रँनन आ चर्चे संक्षेपे छन । हायब सेकेण्ड्री धरि भुगोन पढ़न छना । पडाति नहिये
पढ़ननि । तद्धमे किछ फष्टरिये भ२ गेननि, फष्टरियो सराबारिके भेननि । सराबारिक ए जे जहिना
एम.ए. पास, हाग सुकनक शिक्षक रँनि, हाग सुकन पास मिडन सुकन भेजोपब रँवदास क०ये नग छथि
तहिना एहेन केननि ।

आमीन मास, दुर्गापूजाक समय । जगदीश प्रसाद मंडन एठेनस निकलि अजमरँन गगना । घबसँ रिवाँनगब
पहुँचि जेता, रिवाँन गगवसँ सिनीगुड़ी । ओतो बहेक ठौब छहि, ओतए सँ असाम आ गौहाँसँ त्रिगुवा ।
झदा दूनुमे रँहूत अतब भेन । गौहाँसँ अगवतनाक रँस चाबि रँजे अपवाहनमे जे खूजनि ओ दोसब
दिन डेठ रँजे अगवतना पहुँचन । जहिना तेडि जेबमे छुड़ि ब छनि अरौए तहिना रँससँ उतवनागब
रूमि पाड़ननि । भायाक दुवी, जहिना हिन्दी जगनिहाव तहिना अंग्रेजी । रँस धरि तँ हिन्दीसँ काज छनि
टुकन छननि, रँससँ उतबिते, त्रुथाएन बहरें कबथि, पहिल हाँठेनमे जा खेननि । झदा एकठा मयष्ट
अतब ए रूमि पाड़ननि जे जे समत खेलाग सिनीगुड़ीमे भेठेननि ओ आगु कतो ल भेठेननि । कनीछी
उद्दहवा- रँवपेछी असाम वातिक एक रँजे रँस एकठा हेठेनक आगुमे नागि गेन, अकड़न वाली सब
उतबि हेठेन पहुँचन । हाँन जकाँ हेठेन जगमे तीन रँसक वालीक रँरमथा । चाबि रोछी-तबकावीक
दाम रँस कपेया लेनकनि । झदा देखननि जे एक पलेष्ट माछ रा मासिरेना बहे तँ ओकवा सभसँ एक-
एक म१ कपेया लेनके जे सिनीगुड़ीमे दु कपेया पढास पागमे खुअरैत बहे । हेठेनसँ निकलि
खेलागब गेना । कियो हिन्दी रूमनिहाव ले । कानी राँबूक नाआए कहिते एकठा सिंगी डेवागब पहुँचा
देनकनि ।



खावे...

ई बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पर पठाउ ।



जगदीश प्रसाद माडन

बिहारी कथा-

१

हुँट लोव

भुतीयाक साँम भगवती स्थाण द२ मारित्री रौरा नग आरि हुँदकेत रौजन-

“रौरा, एकठा रात बुँसलौ है ? ”

मद भवन पौतीक रात सुनि आगु सुलेक आगिमे आस कशीनाथ उग मंगीत प्रेमी जकाँ जे एकक पछाति दोसरो सुख चाहैत, झूठ रौरा पौती दिस देखै नगनाह । झूठ बोकि मारित्री महवागक उग पनगाँ जकाँ प्रतिष्ठा करै नगनी । कशीनाथक मन हड़हड़नेनि जे भबिसक दुग्गा-दुग्गा, दुग्गा-दुग्गा खेन ल भ२ लोव । हमरा ठूँठेसँ काज तँ हमरा रैसनेसँ काज ।

मारित्रीकेँ कशीनाथ प्रह्वनथि-

“की सुनलौ ? ”

“अरै छलौ ते अनौ दे लोक सब रैजे छनाह जे ओ आर ककरो लै गबिअरै छथि ! ”

गागविक नाँउ सुनि मारित्रीकेँ अश्रुकुन रँसलैत कशीनाथ रँजनाह-



“बूछरी, कते के गबिआएरै । अगल झूह दुआ जागए । छोड़ा देनिअ तँ डुष्टि जेन ।”

२

अकाम दीप

दिरानीक एक दिस पहिल गाममे बैग-बिबैगक अकामदीपक थूँषी गड़न देखि मल्लाहबोक मसमे उठन जे अगला एठाँय जवारी झुदा नगले मस घेड़ । जेले जे पारनि-तिहाव तँ गबम्पवाक हिमारे छलेत अछि, जँ से ले तँ एके समाज माल (एक जातिक) एकेछी पारनि किछु गोष्टेकेँ होगत छन्हि, किछु गोष्टेकेँ नहियो होगत छन्हि । काबशो मगयष्ट अछि जे जाति दियादमे रँष्टन अछि । जँ दियादीक भीतव पारनिक दिस अमोच भऽ जागत तखन ठुष्टि जागत । किछु गोष्टे खंडित रूमि जोड़ा लेत छथि, किछु गोष्टे छोड़ा दैत छथि । तग मग अहो होगत बहे छै जे रहबरीया अमामदीपव जिनका नहियो होगत छन्हि ओहो नर गिबाम शुकलो करैत छथि । ओमवागत मल्लाहव राराम पंडेक रिचाव केनक ।

मल्लाहव हाग मकुनमे पढ़ैत अछि । सबक कोला काज करैसँ पहिल राराम पंडेक जकबी बूमनक ।

सात रँजे साँस । चाह पीर पाव खागते श्यामानान गप करैक मुडमे एना । केकरो ले देखि टोक दिस जागक रिचाव कबिते बहथि आकि मल्लाहव आरि राजन-

“राराम, एकछी रिचाव मसमे भेन ?”

श्यामानान- “की ?”

“एरैव अगला गाममे मगयोसँ रेशी अकाम दीप दिरानी दिस रँडत ।”

“अ तँ नीक रात भेन ।”

श्यामानानकेँ अशुकुन होगत देखि मल्लाहव राजन-

“राराम, अगला दवरँज्जापव... ?”

काँट कछरी रा गबिनन काटकेँ जेहेन साँटामे देन जागत तेहल ल रस्तुओ रँलेत अछि । मल्लाहव रँछा अछि हनहोड़ा मे मस उड़ा जेले । श्यामानान कहथि-

“रौआ, जग गाममे मष्टिया तेन, जेकव उपयोग गाममे खानी डिबिये छामे होग छै, तहक हाकाकव मचन बहे छै । तगछाम तु भवि बाति मामो दिस डिबिया रौडरह से केहेन हएत ?”



अथय यैथिनी पक्षिक अ पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



कथन

माझ चाबि रँजेत । हाग मकुनसँ अरिते सुधीव नज्जवि दवरँज्जागव रैसन रौरा श्याम सुन्दरगव पड़ननि । दवरँज्जा-अगणाक रीट मोड़गव सुधीव तेकठी जकाँ ठाठ तेन । केमहव डेग रँठ १०८ मे फर्चा छैरै ल करैत । रौराकेँ पुछियनि जे किअए मल खसन अछि, आकि कितारै बाथि कपड़ । रँदननि आरी । बस्तेसँ झुथो-पियाम नगले अछि । नरै रँजेक खेनहा छी ।

तेकठीक तीनु खूँठाक रीट अगणाकेँ सुधीव पौनक जे दूठाक कलात तेकठी नाँउ धड़रैत अछि जखन कि तेमवक नाखाँ * गोरी भ२ जाग छै, जेकरा हुँगव नाद नादि नदना दग दग छै । रौराक रीत रूमरै सतसँ जकवी अछि, दूदा रँवदएन हाथे कगये कि मकरँनि । कपड़ । रँदनरै ओते महत ले बथैत अछि तँ एना कवी जे रौराकेँ कहियनि जे हमरँ आरि गेलौ जगसँ जारै ओ अगल रीत रँजता तारै कितार बाथि आरै । कनी डेगमे माड़ अ लए पड़त । महए केनक । रौजन-

“रौरा, किअए मल खसन अछि ? ”

कहि कितार बाथि आगल गेल । कितार बाथि श्याम सुन्दर नग आरि सुधीव रौजन-

“रौरा, मल खसैत कावण कि अछि ? ”

आम-निआमक रीट श्याम सुन्दर गुमड़ एन बहनि, तँ नज्जवि खसन छननि । पौताक जरौर तारी पुरैत छनाह । दानीस रँथक मगी हेवा-हेवामे जहन छनि गेल छननि, तेकले मोग । दूदा रौन-रौध नग रौजी रा ले रौजी । डिगाएँ मूठ हएत ले डिगाएँ मोहे तँ नीक नहिये हएत । नीकक चर्ट हेरौक चाली, अथनाक तँ फलो अथले हएत । एहना तँ भ२ सकैए जे डिगँरैत-डिगँरैत डिनावक छिनवगिये जीग जाए । दूदा एहना तँ भ२ सकैए जे एक-दोसबाक अथना डिगँरैत-डिगँरैत डिगावकेक समाज रँनि जाए । तह-मह करैत श्याम सुन्दर रौजन-

“रौरा, अखल सुनलौ जे कगना जहन छनि गेल । मिवटागक माँस जकाँ ओह मलकेँ मलीन केल अछि । ”

श्याम सुन्दर जे कहि अगणाकेँ छरँए छै मे नगले ले छननि । कावण तेननि जे जहनक नाँउ सुनि सुधीव दोहरा देनकनि-

“किअए कगना रौरा जहन गेल ? ”

सुधीवक प्रश्न श्याम सुन्दरकेँ जरब आनि देनकनि दूदा जरब ले रँनि तुड़छैत जरबि तँ आरिये गेल बहनि । रूमरैत रँजनाह-



“एते प्रवास बहिनो कपाना समेके ठेकावरे ल केनक । प्रवना टागिसँ आर काज चलेरना छै । रूमथुन जे केहेन दादामँ पढ़ना पड़ल ।”



बिबलेछ

आकाशवाणी केन्द्रक कार्यक्रमक शुषि रितागम दयाकाशत तीस रर्थ पढाति मेरा-मिबृति मेना । खेती-पथारीक कार्यक्रमक चिन्ताव देखा रलील बहना । लोकरी पारि जिनगीमे रूत किछ केनमि । तीनु रैठे आ दूनु रैठियोके पठ ।-निखा, लोकरी धड । लल डुधि । अगला बहेक रैरस्था शिखरेमे क२ केनमि । मेरा-मिबृति क चारि रर्थ पढाति मम उरिअममि जे शिखरेमे ले बहर, राप-दादाक रैराउम रौमेमे बहर । मम उरिआगक काका केनमि जे पुरना रंगी सभमे किछ गोठे आन शिख, तँ किछ गोठे गाम आ किछ गोठे मरियो गेनाह । पढाति जे रंगी भैठममि, कृषका सभसँ तेहेन समरूप ले रंगि सकममि जेहेन पहिबका सरहक रंग डममि । दूब बहल परिवारक (रैठे-रैठीक) समरूप पतवाये गेल बहमि । पणियो रंगी ले रंगि सभ दिन भनमिये बहि केनमि ।

थडहव जकाँ घब-घवाड़ । गाम अरिते पहिल घब-अगला, रीम रर्थसँ पवता पडल टागाकन उँड लममि । दवरज्जापव अरिते-अरिते मम ममि गमि केनमि । दवरज्जापव अरिते देखममि जे अगला राड़ । पवता पडल अछि । जँ एकवा टोगाम रंगा रेर तँ मारो भवि परिवारक तीम-तवकारी तँ चनर कवत जे किछ रैठियो-थोष्टि रेर ।

मम केनमि । कहिया कत सँ पवता पडल खेतके गहीकसँ ताम कवर दयाकाशत टोगाम रलीममि । अमलुक खेतीक केनमि । अख धरि जे अमलुक खेतीक समरूपमे रूने डनाह तही हिमरसँ तैयारो केनमि आ खाद-कीटनामिक द२ रोगरौ केनमि ।

रीम मम रोगना पढाति खेतमे चारि आना गाड देखममि । दूदा घरडना ले, सरुब केनमि जे अख जन्मगयोक सम्र छै । तीम मम पढाति अख ओहो टोअली गाडमे सँ आधम रैमी जविये केनमि तख माथ ठमकममि । दूदा पडरौ किनकसँ कएन जअ । तहमे जिनगी भवि अगल दोसबके रूमेरौ । उना उमरी मममे नग नगममि दूदा देत केनाह । जे खेतीक मर रूनेत होथि तिनकसँ रूमर नीके छी । रूमर, गहवागसँ रूमर आ मर रूमर भिम होगत अछि ।

ठेहिआएन दयाकाशत दीनाथ उगठाम पहुँचनाह । दयाकाशतके देखिते दीनाथ रजना-

“आहुँ-आहुँ, नान भाय ।”

रेडियो स्टेशनमे नान भागक नाँसँ दयाकाशत डना तँ नान भागक नाँसँ जलित डनहि ।

टाह पीर दयाकाशत रजना-

“दीना भाय, अमलु रोगरौ मे गाडे ल भेल ?”

जलिा सौवथीक पात देखि डष्ट पकड़ि सौवथी उखाड़न जागत तलिा दीनाथ पकड़ि पडममि-



“अननु खुनि कऽ देखनिं जे मर्छि गोन आकि जिरिते अछि ? ”

“है, मभ मर्छि गोन । ”

“तेतमे हान केहेन अछि ? ”

“मे तँ रैछि या अछि । ओते ले अछि जे अननु मर्छि जाएत । ”

“तखन ? ”

“सएह ले रूने छी । ”

“रीखा काँछि कऽ रोगल छलौ कि सौमे ? ”

“गोष्ठगवना सौमे रोगल छलौ । तग मंग खादो आ कीठनगिको भवगुव देल छलौ । ”

खादक मात्रा सुनि दीनानाथ रैजना-

“देखियो कहिया कतए मँ जमीन पड़ता छन थिनतोड़ भेल । ओकवा अगलमे ओते शक्ति छै जे स्वभव उंगजा दऽ सकैए । तगमे तते खाद दऽ देखिं जे रीये जवि गोन । ”



झूह-कण

कालिये रैकक मेलजब आरि सुनबनानक गाएकेँ सेहो देखि गेल छलन्हि । एकैस हज्जाबक गाए । गामक किमानक रौट एकछाहा छट । कियो मिलेर बगक छट करैत तँ कियो मिह-मिगलेठीक । कियो थूथक छट करैत तँ कियो गबदमिक अगिनाक ।

जगठाम मस्ययोकेँ उटित अल ले भेलै बहन अछि तगठाम मरेशी पानन धीया-पुताक खेन छि । कते दुधक जकबत अछि, तगले कते मरेशीक जकबत पड़त मुन प्रम भेल ।

एक तँ एकैसक हज्जाबक गाममे आएन अछि । अखन धरि जे ले आएन छल । रैकक नाभ जकब भेल । मसधला काका गाए देखै सुनबनानक उगठाम एना ।

गागक बग-कण देखि मसधला काका टेल होगत तमाकु खागले रैसनाह । थूमीसँ थूमीआएन भेल सुनबनान रौजन-

“काका, रैद्धमिसँ लोक गछन छल जे एकठा नीक गाए थूठीपब रौनहरे, से भगवान पुव लेननि ।”

भरधाबमे रैहत सुनबनानकेँ देखि मसधला काका कहनथि-

“रैड सुनब गाय छल । मसकाब की मत कहनकह ?”

काजक जर्ज दिस रैठेत सुनबनान रौजन-

“टावि माम पछाति एक समु भ२ जखत आ छल माम नागत ।”

“कते दुध होग छल ?”

“दु किलो भिसमब आ डेढ किलो माँसमे ।”

दुधक नाँ सुनि मसधला काका टोक गेला जे रौग ले कतए सँ रैकक कर्ज टूकाओत, कतए सँ गागक थट जूठाओत आ कतए सँ अगल थजन कबत । रात आगु ले रैठ । मसधला काका सुनबनानकेँ चबिअरैत कहनथि-

“डरै दे तमाकन थूआरैह । एकठा काज मस पछि गेल ।”

“एना अग्रताग किअए छल ?”

झुदा मसधला काकाकेँ कोला जराँ ले थूडननि । मसमे नटैत बहनि हग तँ आर्थिक मोड़ न२ बहन अछि । झुदा घिड़नीक टालि किमहब छै रसतक थग दिस आकि सुआद दिस ?



प्रथम यैथिनी पक्षिक अ पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

७



बूधनी दादी

जहिया कमहावकेँ बादरक लौद रौदनमे सगा गेल दुर्दिन आगुमे षाछै नछैत तहिया बूधनी दादीकेँ मान भसिँ भ२ बहन छन्हि । मान भवि पहिल तक, जारै गति जौरैत छन्हि तारै दिवलीक कमागसँ जे सुख केनहि, बहिनो आरै ले भ२ पारि बहन छन्हि । मोनह कोठवीक हथिमाव जकाँ मकानमे अमकले बैठत डब होग छन्हि जे कही सुतरी बातिमे तूमकम भेल आ घब खमन तँ महीला न्हिमे डुगब हएरँ कि ले । तलेमे सड़ा क२ महकि जाएरँ ।

जहियासँ बूधनी दादी लेहबसँ मासुब एनी तहियेसँ कछु आकि लेहबोमे तगसँ पहिलसँ कछु, नहेना पढाति हनुमान चलीमा पढ़ा ते छथि । कितारै देखि क२ ले दूह जूझागिये । गामक तीस ठेगक आरौ-जाली बूधनी दादीक छन्हि । कोन-पारनि कहिया हएत आ कोन उपास कहिया पड़त से हिसार जोड़ए अरै छन्हि । तग मंग एहो छन्हि जे सामाक गीत ठेगक कोन रौत जे गामेमे सभसँ रैसी अरै छन्हि ।

डुर्दिन तिससुबका अर्थ पड़ा गेल आगसँ सामाक गीत हएत । दसरी श्रेणीक बाधा बूधनी दादी नग पहुँचन । पहुँचते बाधा बूधनी दादीकेँ गोड़ नागि रौजन-

“दादी, अगन मोरौगन गरैव द२ दिख । जखन अरैक छुट्टी हएत एरौ कवरै ले तँ मोरौगनेगव निधि देरै ।”

मोरौगनिक नाँउ सुनिते बूधनी दादीक मन गाढसँ खमन कछहव जकाँ आँगी उड़ा कते, लेवहा उड़ा कते, डहोछित भ२ गेनहि । रौजनह-

“बूछटी, आरै तौवा सरहक जूग-जमाणा एनह । रैथी मोरौगन पठा देनक जगसँ कहियो कान धीयो-पुतो आ रैथे-पुतोहसँ गग-सग होग छनए । सेहो केदैन टोवा जेनक । मरि दिन अंगलमे रैसन बहरै से पाव नागत । मुस तते भ२ गेल अछि जे ले नुआ-रिस्तक सेथी बहए दगए आ ले थाग-पीरैक ।”

बाधा- “दादी, एहिया जिनगी चले छै ।”

बूधनी दादी- “बूछटी, जौरैक मन होगए दूदा तेहेन-तेहेन आपेत-रिपेत सभ अछि जे हाँ गए तगसँ नीक भवमे-सवमे मरि जाग ।”



अवस्था

शिक्षक अवस्थाथके देखिते बायकिसुष रोजन-

“मास्तर, अवस्था गामे देखे छी ?”

बायकिसुषक प्रश्न अवस्थाथ अटित भइ गेला जे एहेन रात किछ पढ़नि । दूदा रोजरो तँ उठित बहिये छैत । बग-बिबगक जल्मा शिक्षक छथि तहिना बियाथियो अछि । जेहेन चनरैरना अछि तेहेन चलोनिहारो अछि । कि हमरा कहल मुठ भइ जेते जे शिक्षक सब दबाने छी उठरैए बियाथियो जाग छथि, तँ कि एहेन मुठ भइ जाएत जे सबकारी दलिन गरैया जकाँ महिले-महिले दबाना देरें छोटि मानक-मानक पाहि नगरै छै । अवस्थाथक मन ठमकनि । अवस्था गामे देखे छी, अहाँ गामँ छोटि लोकरी करै छी, बिबु छुट्टीक दिन गामे छी कि समाजक एतरो दायित्व रलै छै जे फलनाँ भागक मातो रैछी थकजो रनि गेनथि । अवस्था दूदा दैत अवस्थाथ कहनिथि-

“भाय, की कहै छी, जूगेमे डूब भइ गेलै । अमेयो छुट्टीमे गाम एतौ हेल आ एतौ देखे छी जे छैजनी सब कोशेरौ ल कएन हेल ।”

दिन ठेकनरैत बायकिसुष रोजन-

“कते दिन छुट्टी अछि जे एना हनिया गेलौ ।”

“आर कि ओ जूग-जमाना बहन जे बोलनियामँ छैजनी तक थागक छुट्टी होग छै । आरामँ रैनी छुट्टी कष्टयो गेल अछि । जरै हमर सकुन खूजन तेकर गढाति आन-आन सकुनमे छुट्टी छैते ।”

बायकिसुष- “आ तँ अजगुते भेल ?”

दलिया हाथमँ छानि ठोकि अवस्थाथ रोजन-

“अहाँ अजगुत कहै छि । एतरो अछि । पहिल सबकारियो ऑफिसमे आ आला-आला ठाम किवाली होग छलै अथला अछि । तलिया सकुनमे शिक्षक होग छला अथला छथि । दूदा आरक शिक्षक सालो तबिक लै छह मसिया रनि गेलाह । छह मास मिया-पुतारै पढ़ा छै आ छह मास ऑफिसक काज करै । जल्मा बाटमे जेरवा सब लै जेरवाग करैए तलिया ल हमरँ सब कथला मातृम वरिणमन करै छी तँ कथला आरि घरे-घर रकबी-भागवक गिनती करै छी ।”

अवस्थाथक रात सुनि बायकिसुष ओन जकाँ करैकरना लै, दूदा दैत रोजनाह- “हो, अली सरहक जूग-जमाना छी, जे कष्टरै से कष्टि निअ ।”

बायकिसुषक काठरँ सुनि अवस्थाथ अनादित होगत रोजनाह-



VIDEHA

“ग्रीके ल अहाँ कहे छी । अप्पना सभकेँ जे सभसँ छोटका दिस लागै, ओगये कथीक छुट्टी लागै मे
सुनल अछि ? ”

“ले । ”

“रैड । दिसक ! ”

+



अणन कज

तेजसँ सगए अग्रएल, बिकास लेल महगियोक बृद्धि धकधका गेल । तहमे तीसल-तबकारीक तेजस लेल, रौड १-माड १ सँ ठेगि खेत-गथाव दिस रैठल । जग टोमामे अउरी-रैगहडीसँ न२ क२ भाँग-धखक बिबदरण बहेत आएल छल ओ कष्ट-थोष्टि टोमामो दिस घुसकनियाँ कठनक ।

अखल धरि कपलसब परिवार धरिक तबकारी उंगजरेत छल सेहो कोणटबसे सज्जनिक गाढ, आ तौमारपब अमल-कोरी, मिबटाग, तछ्ठा उंगजरेत छल ओ टाबि कछ्ठा कोरी खेती कबत । ओना पाँट रीया जोतक किमल कपलसब, ह्ददा खेतमे खादक हिसार धाल-गहूमक बुनेत अछि ।

मिबटाग रौड १ सँ कडरीसँ तोना रतिअरेत बहनि आकि कपलसब अरिते पुढनकनि-

“तेया, टाबि कछ्ठा कोरी खेती कबर, तगमे कते खाद नगते ? ”

कपलसबक प्रश्न सुनि तोना ताबतमामे पडि गेल । बग-बिबगक प्रश्न मसमे उठननि । जग खेतमे पहिल लेब खेती हएत आ जग खेतमे माले-मान होग दै, उंगजेक दृष्टिसँ दुनु एक केना लेल । कोरीक पछिना हसिन कि छले, मिला तँ बग-बगक होग छै । कोना छह अग्रब उंगले धरिक तँ कोना रीत तरिक, कोना तोहसँ गहीबक । जँ खेत खमले अछि तँ कते दिसँ खमल अछि तही हिसारसँ ल बसेरौ कबत । तहमे पृथरीक बस तँ आरो एकतप् छै । तोनाक मसमे नगले उठननि जे अखल रैचावा पुढए आएल सेहो ओहिला ले देखरौ करै । तखन किछ ले कहिँ से केलेल हएत । किछ कहले ठाव छैपठेननि ह्ददा मसमे उठि गेलनि जे कोल खादक बाँड कहलै । ओहोमे तँ कबामतिये अछि । एक्क खादमे कथुक मात्रा रैसी बहे छै तँ कथुक कम । मल अकछए नगननि । जे अलले अगला काज रैबदा मगजमावी क२ बहन छी । ह्ददा पाँग द२ किछ कहियो देर केलेल हएत । मल घुमननि अणल जराँ अणल उठननि जे काज रैबदागए आ कि दोसब काज ठाठ करै । असखिब मल होगते पोथरिक पानिमे जलिया हरा पारि हिलकोब नछैए तलिया हिलकोब उठननि । प्रकृतिक हिसारसँ मोनम रैले-रैदलेत अछि । हसिनक अणल गति छै । तगठाम फेव-फेवक मिला ले हएत तँ उंगजाक कते बोस कएन जएत । दुनियाँ घब अणला रैनि गेल अछि दुबसक रीत रैसी बुने छी आ घबक रीत बुनेते ले छी । गहूमक रौडगक सगए गलाका-गलाकामे अणल-अणल तिथिसँ होगत अछि, तेकवा केना बुनर । अणल रीत सहजे शीतगृहमे बथि देल छी नग तँ जराँ रौड १ मे पोड रलहएत । मल थीब होगते तोना रौजन-

“कपल, गठन-लिखन जेहेल छी से तहँ जमिने छह, आर तोना उमेब कम बहिये लेलह । खेती करै छी पुढनह तँ कह छिअह । टाबि किलो डी.ए.पी. तीस किलो पोष्टाणि, कीटनाशिक सग खेतमे मिला दिहक । नरका किशक रीआ छेरै कबल सरा-हाथ, डेठ-हाथपब बोपिहह । ”



এ বচনগৰ অংশ মন্তব্য ggajendra@videha.com গৰ পঠাও ।



গৌরিনাদ মা

(গাঠক) গাম জএলৈ গাম জএলৈ গাম জএলৈ না

(আবস্তু 23.09.2012 ----- সমাপ্তি 17.10.2012)

পল্লি দৃষ্ট

বুঠা। খাট গৰ লৈসন ভুথি। দুব সঁ হুয়া স্মি পড়ত অছি ---পকড়- পকড়।
দৌড়-জৌড়। কোলব বৌ। হে ওলব গাভী দিস। বুঠী দৌড়ি কৈ অলৈত ভুথি।।
বুঠী। অএ, গা কথীক হুয়া ভএ বহন ঠৈ ?
বুঠা। কৈ কহত কথী।
তাত্ৰিক (বৌহবহি সঁ) ওএহ হম কহৰ জে কথীক হুয়া থিকৈক।
বুঠী। আউ-আউ। হমবা তঁ বঁড় ডব ভএ গোন।
[তাত্ৰিক থাৱেণে কএ ফবসী গৰ লৈসত ভুথি]
তাত্ৰিক কোলা ডবক বৌত নহি। এহি গাম যে তঁ কোলা-ল-কোলা হুয়া-ফসাদ হোওতহি বহি ঠৈ।
বুঠী। এখল কথীক হুয়া ভেলে। ?
তাত্ৰিক ফুটফুটীয়া গৰ সৰাব ঢাবি-পাট ঠা জৌড়ী সৰ হুড়হুড় কলৈত অলৈ আ ও বগদাব জৌড়ী।
বঘুৰিবৰী অছি ল তকবা পকড়ি কৈ নএ গোলৈ।
বুঠা। অগলবণ ?
তাত্ৰিক নহি, অগলবণ নহি।
বুঠা। তখল কী ?
তাত্ৰিক একঠা জৌড়ী ওকবা সঁ লিখাহ কবতে।
বুঠী। বঁজোবী ?
তাত্ৰিক হৈ, সএহ বুন্ম।
বুঠা। লিচি বৌত।
তাত্ৰিক আজুক হাগ যে কোলা বৌ ত লিচি নহি। স্মু, বুন্মা দৈভী। আজুক পড়ুয়া ডঙুড়। সভ
হঠে লিখাহ নহি কবত। মাএ-বাপক কথা কৈ স্মলৈএ। বৌপ এক সঁ এক উত্তম কথা তকৈত বহু
লৈঠা কৈ কোলা মতনৰ নহি। জখল জৰাণী জোব মাবটে তঁ বঁঠ-ঘাঠ যে অচলী কলৈত
ফিবত।



रूठ । ठीके कहेछी अहाँ ।

तात्त्विक । छौंड़ । केँ एहि मे कोला खतवा नहि । खतवा छै खाली छौंड़ । केँ । तेँ छौंड़ । सत एकठा दन रैना कए अतिशय दनउक अछि जे एहन-एहन छुट्टी करब सँ केँ एक-एक नद । कु छौंड़ । नगा नाथि देन जाए जे जीवण भवि ठीक पकड़ल बहेक ।

रूठ । ओ, आरै रूमन । एही अतिशय मे एखन ए बघुरिबरी पकड़ । एन । उँटित सजए भेटेलैक ।

रूठ । की कबटे ओकरा ?

रूठ । नहि रूमन । आब की, मदिब मे नए जा कए रिखाह कवा देते ।

तात्त्विक । अस्तु, छौंड़, अकब गप । एखन हम एकठा शुत सराद नए आएन छी ।

रूठ । केहन सराद ?

तात्त्विक । हमरा हाथ मे एकठा एहन रस्तु आएन अछि जे पारि केँ अहाँ बग-बग भए जाएँ ।

रूठ । एहन कोन रस्तु से तँ कह ।

तात्त्विक । एक ठो कथाबने । पवित्र स्रष्ट ?

रूठ । (गम्भीर सँ नए) कथाबने, (गुम) ।

तात्त्विक । (प्रतीक्षा कए) एना गम्भीर किएक भेलहुँ ?

रूठ । हमर सँ हान अहाँ केँ रूमन अछि, तखन कह की ।

तात्त्विक । तेँ ओ एक रात रूमि निख । गाम मे एखन जे घटना भेल अछि से गामहूँ सँ रौनी रिदेने मे भए बहन अछि, तबीका भवि किछु भिन्न हो ।

रूठ । जले छी ।

रूठ । - जले छी तहि सँ की । किछु सोचहुँ पड़त ।

तात्त्विक । सोचन जाए । एखन आब हो । हेब भेटे होएत ।

[तात्त्विकक प्रश्न ।]

रूठ । स्रष्ट ?

रूठ । स्रष्ट की कपाव । हम कहत-कहत हारि गेलहुँ जे रिगारिओक नाथे रौखा केँ रैजा निओ, नहि तँ पड़तएँ ।

रूठ । की तेँ रैजा कए । अएजे तँ छन पककाँ कि तेसककाँ । की कहनक से मल पाक ।

रूठ । मल अछि । रिसवत कोना । ह्मदो एक रैव जे हाव मे कि हेब.... ?

रूठ । दुप बह । हमर छुट्टन मल केँ आओव नहि तोड़ । जेहन हमर-अहाँक मल तेहन आबूक जगमग ओकव मल कोना छेते । हम-अहाँ दुप्ली बली सए उँटित ।

रूठ । अहाँ तँ कोना रात मे तेना जिद पकड़ि ले छी जे हमरा किछु नहि हूँए । जँ एक रैव रैजागए जेरे तँ कोन अर्थ ... ।

रूठ । है, भए जएते अर्थ । अहाँ नहि जले छी जे आग-काहि नीक लोकवीक की हान छै । केहना जकरी काज बहए, जँ छुट्टी जेनहुँ तँ रूम लोकरी गेल । हम अण मोह-ममता देखु कि रैठोक कणा । अणना भरोमे जिरैत बहनहुँ, अणना भरोमे जिरैत बहर । अहाँ घरबाँड नहि ।

रूठ । जहिना अहाँ केँ रैठोक लोकवीक छिन्ना अछि तहिना तँ हमरा अहाँक रिगारिक छिन्ना ।

रूठ । हम ठीक भए बहन छी । कोला छिन्ना नहि ।

[अटानक डाकैवक प्रश्न ।]

रूठ । आँ-आँ, रैसु । रूमरिओन हिनका ।

डाकैव । (रूठिक प्रति) ठीके कहनि जगदल राँ, कोला छिन्ना नहि । फाशि: निके भए बहन छि । (आना नगा देखि केँ) ठीक छी । छित प्रमल बाख । एखन आब दिख । मरीज सँ राँ तकेत हैत । (रूठ । उँटन नलीत छि) अहाँ उँटु नहि, रैसल बह । हेब आब दराँग जेल । (जागत छि) ।



रूठि (ठाठि भए अविवाहेत) एक कस चाहो नहि देनहूँ ।

डाकठब (रूठि क काण नग) छदय किछ कमजोर भए गेल छनि । हिनका हवदय प्रसन्न बखरौक प्रसन्न कर । हम तकब उचित उपाय कए बहन छी ।

रूठि - कोण उपाय ?

डाकठब से एखन नहि कहब । गछाति अगलहि रूमि जखैक ।

[डाकठब जागत छथि । रूठि घुबि केँ रूठि नग आबि केँ रैसित छथि ।]

रूठि (रूठि केँ माथ पब हाथ देल देथि) एना माथ पब हाथ किएक देल छी ?

रूठि नहि गुछी सएह नीक । जँ मलक रात कहब तँ अछूँ हमबहि जकाँ माथ पब हाथ देब ।

रूठि ए कोणा हेत जे अहाँ कलैत बली आ हम हँसित बली ?

रूठि अछूँ कनरौ मे मंग देबैहि चली तँ स्रु छती केँ मजगुत कए केँ । (कलक बकि केँ) एखन जे ओ घटना स्रुन तकब की अर्थ से अहाँ नहि रूमिअ । स्रु हम रूमा दे छी हूनक स्पेक रात । पहिन रात ए जे ओ हमबा छेतउननि, जँ हम रैछी केँ रैजाए छैपछै ओहि कथाबने सँ विवाह नहि कवाए देखैत तँ गामक रा बिदेशक छौड़ी सब ओह हान कबतनि जे बघुरिबरौक कएनक ।

रूठि ओ कोण रैजाए कहनि ।

रूठि रात तँ रैछ स्रुदब, ह्रदा एना धमकी दए डब देखाए क्यूँमेती होअए ? आ असन रात ए जे की रैछी अहाँक रात मनि केँ दोइन आओत आ अहाँक रात मनि केँ ओहि कथाबने केँ अगल अर्धागिनी रैजाए जेत ?

रूठि तँ साह-साह जरौर दए दिओन । एहि जेन सथा हाथ किएक ?

रूठि हमबा मल केँ अहाँ जेतक थोबर ततेक नर-नर बाक्स रैहवागत जाएत । हमबा तँ नछीए जे अहाँक रैछी ओतहि विवाह कए छूकन अछि । तँ दु-तीन रैबथ सँ आबि नहि बहन अछि । तेसवाँ अएन बहए तँ अहाँ रैछ आग्रह कएल बलिअक, ह्रदा ठस सँ मल नहि जेत । किएक ?

रूठि अही कछु किएक ।

रूठि हमबा तँ नछीए जे ता ओ विवाह कए छूकन छन ।

रूठि अहाँ तँ अलले किदन-कहाँन सोटैत बँ छी । छोड़ु ए सब छिन्ना । . छबु भोजन कए ।
[दुनुक प्रस्थान]

नोसब दृष्ट

[जूँगठ कम मे एक उँच अधिकारी आदिह मिह, हिनक युगोपिअन गणी जेन फ्रिस्टन उँह प्रभावक मंग मोहा पब रैसन आ पाँच बर्यक रौनक रक्ता फर्म पब खेलागत ।]

आदिह (मोरागन काण मे नगरैत) आदिह स्पीकिड ।

मोरागन हम अगलक गाम सँ राजि बहन छी ।

आदिह की रात ?

मोरागन अगलक पिता राँरु जगार्दन मिह.... ।

आदिह कमेन छथि ल ?

मोरागन हँ, जिरैत छथि । ह्रदा हिति नीक नहि छनि । अगलक माता रैब-रैब कहैत बहनथि जे रौआकेँ रैजाए निओक । ह्रदा ओ नहि रैजओत । अगल सथाम्भर शीघ्र अएन जाए ।

आदिह पितार्जी अगल किएक नहि सुचित कएनि ?



- मोरांगन गुठि छिअनि तँ कहि छथि, अगला भरोसै जौनहूँ, अगलहि भरोसै जिअ दिअ । एक टिकिसकक कग मे हम अगल कर्तरा बुझल जे अगल केँ सुटित कए दी ।
- आदित (मोरांगन कात कए पगौक प्रति) सुनहूँ ? कनिअँक आँखि मे लाले ल, गड़ मिनि भोकायि पावथि । (प्रतिफिया जगलक हेतु प्रभाव कहूँ निहारे छथि) ।
- प्रभा हमर कहूँ की निहारे छी । चनराक गन्तिजाम कक । हमर फादर गल नँ रँड स्वातिमानी आ स्वारनयौ छथि । अन्तिमो अरुआ धरि ओ नहि रँजउताह । अमा कवी तँ तकब कावणो कहि दी ।
- आदित कहलक प्रयोजन नहि । हम अगल अगलाय सुन जलै छी । रेंव-रेंव रँजलैत बहलाह, ह्दा..... ।
- प्रभा ह्दा अहाँ केँ ह्दसति नहि । नलैए जे अहाँ राँग केँ आगिओ नहि दए सकर । अहाँकेँ कोण ? अहाँ खुँरि भोगि टुकल छी माए-राँगक दुनाव । हम तँ ल माँगक कहूँ देखल ल राँगक । सुलैत बली जे अहाँक देगे मे मासु अगल गुठोहूँ आरेंस रेंडिअहूँ सँ रेंसी करैत अछि । एह मोटि केँ अहाँक मंग धनहूँ । ह्दा अहाँ तीस रय सँ ठकैत-ह्मिअरैत बहनहूँ । अहाँक दोथ नहि, हमर कपावक दोथ ।
- आदित (तेज अराज मे) अही सुनलैत बहर कि हमरो रात सुनर ?
- प्रभा (आओर तेज अराज मे) नहि सुनर अहाँक रात । सुलैत-सुलैत काण पाखर भए जेन । (कलै छथि) ।
- प्रशी (राहबहि सँ) ए कोण गटक भए बहन छै, मेडम ?
- आदित प्रशी , आरह-आरह ।
- प्रशी (प्रवेशे कए मस्जिद) अहाँ, श्रीमतीजीक आँखि मे लाल ?
- आदित ए एकठा बिकट समझा ठाठ कए देननि अछि ।
- प्रशी कोणा समझा नहि । मेडम, एना लाल अरबल ए पाखर नहि पमिजत । पहिल लाल सोछु आ मल प्रसन्न कक । तख देख जे कोणा ए मिष्टिब मोनुमिण छल भवि मे अहाँक मत समझाक समाधान कए दै छथि । (आदित दिस आओर देखाए) एकवा कानि-खिजि केँ अहाँ नहि सोम कए सकै छी । (आदित सँ) हउ, हमर कहल मागल आ तुवस्तु गाम जएँक तैआवी कबह । एकसर नहि, तीनु एक मंग ।
- आदित ह्दा छुष्टी ?
- प्रशी मूर्ख छह तौ । हो, आओ-कालि लाकवी मे छुष्टी देन नहि जाग छै, छुष्टी जेन जाग छै । केरल सुछा दए निकलि गइल । हम छी ल, कोणा खतवा नहि । छुष्टीक मजबूक प्रतीक्षा कवरैत तँ राँगक सरापो नहि कए सकरैत ।
- आदित एकठा आओर बिकट समझा अछि तोहव मेम साहेब केँ नए । कष्टव प्रवणा रिचावक लोक हमर माता-पिता हिनका घरो नहि छैए देखिष ।
- प्रशी हउ, एतेक दिस मंग बहनह तैओ तौ छिह नहि सकनह हमर मेम साहेब केँ । जे तोवा सल रेंकुह केँ नाथि देननि से अरुम छल भवि मे मासु-मासु केँ रिमाए जेतैह । की से आमेरैत अछि ल, मेम साहेब ?
- प्रभा - गुठनहूँ तँ जडा सँ सुनु । हमरा सल अभागनि दोसर नाबी नहि छैत । हम ल माए केँ देखनहूँ ल राँग केँ । एकठा अमेका बृद्ध शेष देननि । जखन हिनका सँ रिवाह भेल, मलह मल प्रसन्न भेलहूँ जे आर मासु-मासु सँ ओ दुनाव छैत जे माए-राँग सँ छैतैछै । एही जेन भावतीय गड़ मी सँ माड़ १ पहिबर सिखनहूँ । एही जेन रँड जतन सँ मैथिली सिखनहूँ ।
- प्रशी राह, अहाँ तँ मैथिली रँजरा मे प्रशीहूँ सँ प्रशी भए जेनहूँ ।
- प्रभा अहाँक मि केँ अउलेजी सँ रँड अगुवाग ।
- प्रशी तखन सिखनहूँ कोणा ?



प्रभा ओ अँबबलेजरी राजथि तँ हम कास मुनि जी । एखनहूँ से जिद ठलल जी । झुदा.... ।
 प्ररीण और झुदा की ?
 आदिल हम एकसब तँ जेएँ जेन तेखाव जी, झुदा हिनका अँ जेएँ ये एकठाँ रीधा अछि ।
 प्ररीण कहल रीधा ?
 आदिल हम बिराह कएनहूँ से रात माए-राग सँ आग धरि छिगल बहनहूँ । तखन कोना हिनका
 जेल.... ?
 प्ररीण हम तोहब मलक सत रात जलेछिअहूँ । तौँ रागक तीन तीन ठाँ रँझका अपवाद कएल छह ।
 पहिन तीन रँवथ सँ माए-राग केँ झुह बहि देखओलह । दोसब दुपेछाप बिराह कए
 जेलह । तेसब गसाग कथा सँ बिराह कएलह ।
 प्रभा ठीक कहेछी अहाँ । एही नाजें... ।
 प्ररीण तौँ पढ़ी-लिखि केँ लोट । भए जेलह । हओ, जले बहि छह, सतक राग धृतवाष्ट्र होगछि,
 पक्का धृतवाष्ट्र । नाथ अपवाद माफ । तखन डब कोन ? रँड आध हेतमि त कहथुन, कास
 पकड़ि केँ दस रँव उठल-रँसल । रँस, सत आध निपता ।
 रकण (तेनाएँ छोटि कास पकड़ि केँ उठल-रँसल सुनि केँ सुनि करैत) डेडी, अछूँ एहिना कक
 ल । (नाथ पकड़ि घिटेत अछि । आदिल सँग दैछथिन ।)
 प्ररीण राह ले रौआ, राह ! एक्काएँ ! देखल, हओ, रागक हृदय कहल हगछि । एहिना तौँ
 रागक आगाँ कास पब नाथ देल ठाँ भए जेएँ कि रँस, आनन्द आनन्द । (प्ररीण सँ राँड,
 तौँ सँ गाम जेएँ ।

रकण सत गाम जेएँ ?
 आदिल आ प्रभा है, सत गाम जेएँ ।
 [रकण नाचि-नाचि गेलैत अछि । ताहि से माए, राग आ प्ररीण तीनु सँग दैत छथिन]

गाम जेएँ गाम जेएँ जाम जेएँ ना
 दली खेएँ दुवा खेएँ आम खेएँ ना
 गाम जेएँ गाम जेएँ जाम जेएँ ना
 दादा के देखै दादी के देखै तैया के देखै ना
 गाम जेएँ गाम जेएँ जाम जेएँ ना

प्रभा रँस, नाच खतम । और चलेछु दिनब से ।

[सतक प्रस्थान]

तेसब दृष्ट

[खवान-सग पक्का सकास । लमल रँवडा । रँसा कात एक कोठनी । रँवडा पब थाँ, ताहि
 पब योगक्षुत रँड । जगदल ठाँ पड़ल । रँडनी पाएब जँतेत । थाँक एक कात किछ
 कबसी]

रँड । अहाँ किछ कहए नागल बली ?
 रँडनी है, ठीके ।
 रँड । कहनहूँ बहि .
 रँडनी है, झुह सहायि जेनहूँ । मलक रात मलहि बाखन ।
 रँड । से किअक ?



- बूढ़ी कहत-कहत बेखब्र भए गेलहूँ । सभ रोकव । तखन होब कहि केँ कोन बन ? जेहन
राग छै तेहन रौंछी ।
- बूढ़ी (ऊँट केँ रैसैत एषाँ सँ) हे, हमरा जे कहै सँ कहूँ, हमर रौंछी छै नहि अछि । कोना
बूमाँ अहाँ केँ जे नीक लोकबी कहल रहूँ थिकेक । की हमर कहूँ आ अहाँक कहूँ देखैत
बहल ओकर कहूँ भवते ?
- बूढ़ी हमर कोना बूमाँ अहाँ केँ । जेना अहाँ केँ रौंछीक लोकबीक छिन्ना अछि तहिना तँ हमर
अहाँक प्रणाम छिन्ना ।
- बूढ़ी देखू, पाँच-पाँच छै डाकैर-रौंछ तपेवतापुरीक गमाज कए बहन छथि । हम सुनू भेल ज्ञा
बहन छी । तखन कोन छिन्ना ?
[राम दिस सँ आदिल, प्रता आ रक्का प्रवेशे । तीनु अगमित कए कत मेँ ठाढ़ छथि ।]
- आदिल (कातहि सँ) गएह, गएह थिक हमर घर ।
- बूढ़ी (अरौज सुनि केँ मठकावल आगाँ बूढ़ीत कटकए) अहाँ, के ? रौंछी ? आरि गेल, आरि
गेल हमर रौंछी ।
- बूढ़ी (हठबुद्धि एँ ऊँट केँ दौड़-त) अहाँ, अचानक आरि गेल ।
- आदिल बाँरुजी, बाँरुजी, एषाँ नहि दौड़ । थमि पड़ै । (रौंछी पकड़ि केँ थारै पव रैसए पिता आ
माता केँ प्रणाम करैत छथि) ।
- बूढ़ी (माथ पव लथ दए पँजिअरैत) जहाँ बहल, मिकेँ बहल ।
- बूढ़ी जूगजूग जीरैह, मिकेँ बहल ।
- प्रता आ रक्का (दुबहि सँ कव जौड़ि केँ) प्रणाम बाँरुजी, प्रणाम माताजी ।
- बूढ़ी (दुबुक कहूँ निहारि मरिअस) अहाँ, ज्ञा के ?
- आदिल (अचानक बूढ़ीक आगाँ ठाढ़ भए) बाँरुजी, बाँरुजी, हमरा ओहिना काँन एँठू जेना लला मेँ एँठे
डनहूँ । एँठू, एँठू ल । (आँधि मेँ लोव) ।
- बूढ़ी (अकटकाए) अले, तोवा ज्ञा की मोन पड़लहूँ । (कहूँ निहारि) अहाँ, हँसिक जगह लोव किएक
?
- आदिल अहाँ नहि एँठरै तँ हम अगनहि एँठेछी ।
[आदिल काँन एँठेत ऊँटेत -रैसैत छथि । रक्का नकन करैत अछि । प्रता पकड़ि केँ
लोव नए लेछथि ।]
- बूढ़ी (आदिल केँ पकड़ि थारै पव अगला नग रैसए) एषाँ नहि कबह, बाँड । रात की थिके सँ
कहल ।
- आदिल आग, बाँरुजी, अहाँक आगाँ आ माए, तोवा आगाँ हम नाज-रीज कात कए अगन अगवाध करूँ
करैछी आ तकर जे दण्ड हो सँ ।
- बूढ़ी पहिले ज्ञा तँ कहल जे तौ कोन अगवाध कएनह ।
- आदिल एक नहि, तीन-तीन छै अगवाध । नयँव एक तीन रय सँ गाम नहि अएनहूँ । नयँव दु
अहाँ केँ रिग पड़लहि छुपेछाप रिवाह कए जेनहूँ । नयँव तीन अहाँक प्रस्तावित कथावनेक
उपेक्षा कए एहि फिश्तल कथा सँ रिवाह कए जेन । आग अहाँ एहि सभ अगवाधक दण्ड
दिअअ, हम सह्य तोगि जेर ।
[आदिल, प्रता आ रक्का तीनु कव जौड़ल एक पाँत मेँ ठाढ़ होगछथि । एक छिन्ना सभ
सुनू भेल एक देसबाक कहूँ अगनक तकेत छथि ।]
- प्रता हम हिमकव पुरोह दुबहि सँ गोड़ नहोछिअ । (आँजूव माँठि धरि मुकाए प्रणाम करैत
छथि) ।



रूठि (सहमा आगाँ रैठि के कोव करैत) अहोभाग, अहोभाग हमर । केहन सुनब पौता आ केहन सुनबि गतौह । दुधे नहाड गुते रिखाड । (रूठि । सँ) नहुमी घब अगलीह । नग आरि के आसिध दिठेन । (प्रभा के आशीर्वाद देरौक जेन हूक माथ दिस हाथ रैठरैत नग जागत छथि ।)

प्रभा (पाछ हठैत) हाँ-हाँ । हमरा छुरैथू नहि ।

रूठि (अकटकाए ठामि के) अएँ, मे किअक ?

प्रभा हम अङ्गलेजक रैषी, अङ्गोप ।

रूठि (मर्माहत भए दु डेग पाछ हठैत) अएँ, मे.....म ।

[रूठि । अचानक रौहोस भए ठामि गडि बहेछथि ।]

रूठि (छाती पिठैत) देरौ गे देरौ ।

प्रभा माग पाँड । हमरा सतक अरितहि ए की भए जेनमि ।

आदित दीज ओह ह्याक फड नष्ट ठेनलेष्ट आरब थेजेस । जेष्ट अस ह्याग रैक एज सुन एज पमिरुन ।

प्रभा मीज हत पेशेस ए मोमोस्ट । (रूठि सँ) माज्जी, नग मे कोला डाकठब छथि ?

रूठि हाँ, नगहि मे छथि । टाकि-पाँट घब रागा दिस ।

प्रभा हम डाकठब के रैजा अलेछिअन । ए पंथा नैकैत बहथू । किछ ठेकथू नहि ।

[कलक कान सत सुट्ट । प्रभाक संग डाकठब अलेछथि ।]

रूठि डाकदबराँ, देखिअन, की भए जेनमि हिनका ।

डाकठब घरबाँड नहि । नगले ठीक भए जएतमि । (जाँट कए छाती पकडि के डोमरैत) जगार्न राँ, मल केहन अछि ?

रूठि । (अस्पष्ट ध्वनि मे) म.....म, मम...ता.... ।

डाकठब की कहनहूँ ?

रूठि । ध....धब...धब ।

डाकठब डेलिया, निअब केस आँफ डेलिया । एक दिस ममाता आ दोसब दिस धर्म दुनूक प्ररैन आघात सहि नहि सकलाह ।

आदित एकब प्रतिकाव ?

डाकठब पहिले ए कहन जए जे अगल के ?

आदित ए हमर पिता, ए माता आ ए... ।

[तीसुक रीट नमकाव]

डाकठब तखन तँ एकब प्रतिकाव अगलहि दुनूक हाथ मे अछि । खस कए अगलक श्रीमतीजीक हाथ मे ।

प्रभा मे कोला ?

डाकठब ममाता के ततेक जगाँ जे ओ धर्म पब रिजय पाँए । अगल के होष हमरी कएल बही । नीक कएन जे आरि गेनहूँ । आरि कोला चिन्ता नहि । होस आरि बहन छमि । कलक कान मे नर्मन भए जएताह । एखन आजा हो ।

[डाकठब जागत छथि । आदित, प्रभा आ रकषा हब ओआआहिना पाँती नगाए ठाठ भए जागछथि । रूठि । भारी दूरिवा मे गडिनि रैकब-रैकब गतौहक अह तकेछथि ।]

आदित राँ, जे मे आरि गेलाह । आरि की कएन जए ।

प्रभा जेष्ट मी म ए ट्रिक नाड । (रूठिाक नग जए के) राँ, जे, आरि हिनक मल केहन छमि ?

रूठि । ठीक अछि ।

प्रभा कहथूँ तँ, ए के थिकाह ?



বুঠা । রেঠী ।
 প্রভা । হম কে ভী ?
 বুঠা । হমর পুতোহ ।
 প্রভা । আ গা ?
 বুঠা । গা হমর পোতা ।
 প্রভা । হম এতেক দুব সঁ কিএক এখনহু ।
 বুঠা । অগল সাম্ব, অগল সম্বব আ অগল ঘব-আঙল দেখএ ।
 প্রভা । সে তীশু দেখি জেন । আরি আতন হো, জাগজী ।
 বুঠী । (অকচকাএ) অঁ, সে কিএক ।
 প্রভা । হম অজোপ মেম ভী । হমরা বহল হিনকব ঘব ভুতি জএতনি । (কলিত) হাএ বে হমর
 কপাব । রুড় মল্যাবথ ভল, নহি মাএ-রাগ তঁ সাম্ব-সম্বব সঁ মাএ-রাগক দুলাব ভেঠত ।
তেহন থকথক হাথ ধএনহু জে সাম্বও-সম্বব দেখি কে দুব পড় গত ভথি ।লিনকা
 লোকনিক ভাখা মিখনহু, মাড়ী পহিবর মিখনহু । সরি রৌকাব, সরি রৌকাব ।
 বুঠী । (দৌড়ি কে জাএ প্রভা কে পঁজিআএ আঁচব সঁ লাব পোড়িত) নহি রৌজহ, এহল কথা নহি
 রৌজহ হমর রেঠী (দ্রুত চুমেভথি) ।
 বুঠা । (উঠি কে প্রভা কে ডেন ধএ ঘিটেত) রেঠী, পহিল রাগ কে গোড় আগহ, তখন মাএ কে ।
 প্রভা । (ঠেহুনিআঁ দএ বুঠা ক পাএব পব মাথ দএ) প্রণামরাঁজী ।
 বুঠা । (দুব ডেন পকড়ি কে উঠরিত) কমাগরতী ভর, সৌভাগ্যরতী ভর ।
 প্রভা । রাঁজী, আরি গা পড়ি বহথু (রাঁহি পকড়ি কে খাষ্ট পব রৈমাএ ওহিরা বুঠী কে প্রণাম
 করিত ভথি । ভল ভবি বুঠীক দ্রুত মিহরি কে) মা, তো সন্ত হমরা অগল রেঠী বুমেভে
 ?
 বুঠী । সন্ত নহি তঁ ফুদি ।
 প্রভা । হমরা তখন বিশ্রাম হৈত জখল তো হমর হাথক ভুখন থএরৈ ।
 বুঠী । থোআ দে জে থোআরাঁক হোড় ।
 প্রভা । (রৈগ সঁ ঠিফিল রাঁজা নিকালি ওহি সঁ এক-এক চমাচা তএ সন্তক হাথ মে দৈত ভথি, রকণ কে
 ভবি ঝেঠ) থো দলী-চুবা-আম ভবি পোষ্ট ।
 রকণ । (খাগত আ নাচি-নাচি গরিত অছি)
 গাম জেরৈ গাম জেরৈ গাম জেরৈ না
 থেরৈ চুবা থেরৈ আম থেরৈ না
 গাম জেরৈ গাম জেরৈ গাম জেরৈ না
 (মাএ-রাগ কে হাথ পকড়ি কে ঘিটেত) শীজ একমণী মী ।
 আদিহ । নহি মাণত । রুড় জিন্দী অচি গা ডুওড় । (তীশু নটৈত-গরিত ভথি ।)
 [তাত্বিক, জোতখী, রেণ্ড আ হোমিওপেথিক প্ররেশে । নাচ সমাপ্ত কএ তীশু যথাস্থান রৈসৈত
 ভথি ।]
 তাত্বিক । স্বপন জে অগল অচেত ভএ গেল বনী, তেঁ হমরা তোকনি পহুঁচি গোনহু । এতএ তঁ আনন্দ-
 আনন্দ দেখেভী ।
 বুঠা । ঠীকে ভল ভবি অচেত ভএ গেল বনী । ডাকঠব সাহেরৈ কহননি, অধিক আনন্দ ভেবা পব এনা
 হোগটে । আরি ঠীক ভী । আনন্দ কোনা নহি হো । এতেক দিন পব গা পুত্রবনে অএতাহ
 অছি ।
 আদিহ । নমস্কাব ।
 বুঠা । আ তনিকা সঁগ গা পুত্রবধুবে
 প্রভা । নমস্কাব ।



रूठ । आ तमिका कोव मे आ पौत्रवने ।

तात्रिक एना अचेत होएर नीक नहि थिक । हएव नहि हो तकर उपाए हम कए दैछी । (रूठ । क माथ पव हाथ दए हंसुव-हंसुव मन्त्र पठि) रैन, मा दुर्गाक प्रसादे हएव कहिओ नहि हैत ।

जोतखी ओझी, ग्रह रिपवीत बहते तँ अहाँक मा दुर्गा की कबतीह ? ग्रहक महिमा आर रँडका- रँडका रैत्रागिको सर मलैत छथि । मुर्छा थिक मलक योग । मलक मागिक थिकह चन्द्रमा । सतत टागीक ठाँही पहिबल बद्ध, हएव कहिओ एना नहि हैत ।

होमिओपैथ कलक दूह रौतन जाए (रूठ । दूह रँडैछथि, डाक्टर टागि-पाँट गोली खा दैछथि ।)

आदिह अगल किछ रँजनहूँ नहि ?

होमि - हमर रौनीक काज हमर गोली करैत अछि ।

रैद्य मल तँ आनन्द-आनन्द भए गेल दूदा रैन ?

रूठ । रैन एखनहूँ नहि आएत अछि ।

रैद्य (एक पुर्छा आ दैत) हमर आ तीमगवाफेय बस रँकवीक दुध मे घोबि तीस दिन थाए जेल जाए । अगल तीमहि केँ पढाछि देरैमि ओहिना जेना जराणी मे पढाछि बहिन ।

आदिह अगल लोकनिक हलम ?

रैद्य बास-बास ! हमरा लोकनि कारणीक ओत कहिओ एक छूँक स्वप्राप्ति नहि जेल ।

तात्रिक है, तेओ जँ सकोब कवरौक हो तँ मा दुर्गाक प्रसादक संग एक सॉम.... ।

रैद्य ध्वज ! एना घिनाई नहि । आरँ टलेत टनु एतए सँ । हिनका रैछी-पुतहूँ सँ गप कए दिओन ।

(सब टकिसेक जागत छथि ।)

आदिह रौरूजी, स्वर्ण तत्रिक महोदयक प्रस्ताव ?

रूठ । रैद्यजी तनहि ध्वज कहि देखूँ, हमरा तँ रँड आनन्द भेल ।

आदिह से किएक ?

रूठ । स्वर्ण ! हमरा आनिका छन जे समाज रौबि ल दिअए । समय रँहुत रँदमि गेलै । पवभु समाजा अछि जे संभवत कोणा ? हम सँ अथरन आ तौ सँ पवदेसी ।

रूठ । जौलन दूह थोमि केँ बात मडनमि तँ कोणा नहि देरैमि ? जेना हैत तेना हम संसारि जेँ ।

प्रभा गुड आगडिआ ! सुलैछी मिथिना मे खुरँ भोज होअए आ तहि मे खुरँ रांग्य-रिहाद, तस- पविहाम होअए ।

आदिह ठहाका पव ठहाका टलेए । जे सुलैत बनी से देखि निअअ । (रूठ की प्रति) माए, तौ कोणा चित्ता नहि कब । देखैत बह, आगए सॉम खन भोजक सब सामग्री हरी गाछी पव आरि जअत ।

रूठ । भोजक ओरिआओन पढाति, पहिल भोजनक ओरिआओन होअओ ।

आदिह - आग पाँटो गोष्टए एक संग भोजन कवरँ । माए, तौबहूँ हमरा सबक संग थाए पडतौ ।

रूठ । (रिसस सँ दाढ़ी पव हाथ दए) हो मेसा ! एहना कतहूँ भेलैये ।

प्रभा ओना नहि मानरै त हम पकडि केँ अगला संग रैसा जेलौ ।

रूठ । (रूठ की प्रति) अहाँ जाई पुआ-पकमान डालए ।

रूठ । रैछी, टन हमरा संग, तौवा अगल घब-आओन, रौछी-साछी देखा दैछिओ ।

आदिह (रिहादक दूदा मे) तौबहूँ घब छततौ नहि ?

रूठ । छतत किएक ? नडमीक पाएव पडत तँ अल-धल सँ भवन-पुवन बहत ।

[रूठ, प्रभा आ रकणक प्रस्थान]

रूठ । तौछ ओहि कोठनी मे रिश्याम कब गए । रँछ-माँछक थाकन-ठैहियाएन छह । हमबहूँ आरि रिश्याम कबक टाली ।



[दूनुक प्रश्नान ।]

टाक्खि दूनुक

[दूनु कात टाक्खि-टाक्खि कबसी । रीट ये टोकी । एक कातक कबसी पब तान्त्रिक आ जोतथी । शेष खाली ।]

तान्त्रिक मा दुर्गे, मा दुर्गे । देखु तँ अशिश्रुता ! अतिथि आरि गेलाह आ घबरेला घबरे ये सृष्टकन छथि ।

रौघ ओझी, ओ भोज नहि थिकैक, ओ थिकैक पाछी । पाछी मामूली लोक नहि दए सकैए । आदि रौरू, सुठ-रुठ, झा-पाड्डव नगण ल एक मेकेड पहिल, ल एक मेकेड जेठ ठीक घड़ी क स्वर्ग पब उपस्थित भए जएताह ।

तान्त्रिक आ भाषम-भात तकरो कतहु धुआँ-धुआँ नहि देखैछिथि ।

रौघ रौड बुख नागन अछि ? जमाएल हाँकि केँ आएन छी की ? बैस धक । समय पब सब सामग्री पहुँचि जएते ।

[डाकठव आ होमिओपैथ अरैछथि आ दोसब कातक कबसी पब रैसैछथि ।]

होमिओ. देखु तँ तमासा, एतेक दिन राँगक कोला खोजे नहि । राँग-पुक्खाक रँगाउन मकान ठहर-ठगलाएन जा नहन छथि तकब सुविध नहि, आ पहुँचि गेलाह पाछी कए केँ अपन रँडपन देखैए ।

डाकठव पहुँचलाह कोला आ किएक से नग आँड, कासमे कहेछी । हम हेलन कएनिअन जे राँग मरे पब छथि तखन अएलाह । ल राँग केँ रैछी सँ मतनर, ल रैछी केँ राँग सँ । उँछ चटि-चटि देखा घब-घब एके लेखा । रुठ भेला पब हमरो-अहाँक एह दमो हेत ।

रौघ आ पाछी किएक भए बहन छै से रूमनिअ ?

तान्त्रिक हम छह थोनि केँ रँजवहूँ ते ।

रौघ मा दुर्गा अहाँ केँ जीह तँ रौड सुन्दर देनहि, छदा रूँछि देरी ये कल कजूसी कएलैल । एकवा पाछी नहि, रुठ एक त्रौछ रूम ।

तान्त्रिक धुबजी ! राँगक जिरितहि कतहु त्रौछ भेलैए ?

रौघ जीरी तँ की-की ल देखी । आरँ गेलो चलेलै । राँग केँ सुन्दर जे छुगला पब रैछी त्रौछ कबत कि नहि । रैछी सेहो सोचनहि त्रौछ कबए हएव आरँ नहि पडत ।

तान्त्रिक (घड़ी देखि) आरँ गप रँद । पाछीक समय भए गेल । जे घड़ी ल साहेर पहुँचलाह ।

[आदि, प्रभा, रुठ, रुठ आ तनिक कोब ये रकणक प्रवेश । आदि ठाठ बहेत छथि, आओव सब सोहा पब रैसैत छथि ।]

आदि हम अपना दिस सँ आ पुजा पिताजीक दिस सँ अपन लोकनिक अतिरादन आ स्वागत करैत छी । अपन लोकनिक हमर पुजा पिताजीक प्राणवक्ता कएन तदर्थ हम अपन सबक सदा आतावी बहर । हमरा ओ जामि केँ रौड प्रसन्नता भेल जे टिकिनो ये अपन लोकनिक प्रीति आ सेरापरायताक प्रसादे हमर ओ गाम आदर्श सुनु ग्राम घोषित भेल । आओ हमरा अपन लोकनिक श्रीमथ सँ ओ सुनराक नामसा भए बहन अछि जे कोना-कोना अपन लोकनिक हमर गाम केँ ओ सौभाग्य प्राप्त कवाउन आओव कोना-कोना हमर पिता केँ योगदान करैत गेलहुँ । धन्यवाद । (प्रभाक नग रैसैछथि ।)

तान्त्रिक (ठाठ भए) ओ नमो दुर्गायै । आदवीय जनार्दन रौरू, आ आदि रौरू, एहि गाम केँ ओ सौभाग्य आन ककरो कएल नहि, मा दुर्गाक प्रणा सँ प्राप्त भेलैक । हम घब-घब, गाम-गाम चन्दा माँझि-माँझि....

रौघ (रीटहि ये) अपन मकान रँगवहूँ ।



तान्त्रिक (तमसाए के) दुग । पहिल हमरा रौजए दिअअ, गढाति जतेक रैकरौक हो रैकरै ।
की कहैत बही ? हँ, मग पड़ल, चन्दा कए-कए ग्रामरानीक कन्याक संकल्प कए तीस रौव
सहस्रच्छती मनायल कएन । तहिआ सँ एहि गाम मे हमर छडीपाठे सभ योगक बासरीण भए
गेल । तेँउ केँउ-केँउ आतुरतारने छडीपाठक संग-संग डाकैव-रौदक ओखनो भकमि जेत
अछि, भनहि ओहि मे जहव-गाहव बहउ ।

डाकैव (ठाठ भए) की रैजगहूँ, की रैजगहूँ ?

रौव कह ससारि केँ रौजु ।

डाकैव प्रगया सुनल जाए एहि दुनु धनुषीक एक प्रसिद्ध कथा । एक दिन ए तान्त्रिकजी आ रौदजी
अगला मे की गप करैत बहथि मे सुनल जाए । तान्त्रिकजी गूढनयिण रौदजी सँ, अउ, ल
अहाँ छडीपाठ कएगहूँ, आ ल हम ककबहुँ कोला दरौग देखिअक, तखन टिता किएक जेत
अछि ?

रौव दुग बह । अहीक, अहीक गजैकमिण तँ ओकव जाण जेनके ।

तान्त्रिक एहन कह बहत तँ रौठ-घाँठ मे मारि खाएँ ।

होमिओ. गवरुता दए गाम सँ रौनाड एहि डाकु डकडवरी केँ ।

डाकैव माह कएन जाए । हम सुन पड़ । जाए छहिली । अगल सभ शेतवाही रौव आ सहस्रवाही
रौवबाज थिकहूँ । तजेत आ तजैत बह एहि सुन ग्राम केँ ।

तान्त्रिक जगदीश रौव, काश थोनि केँ सुनि लिअअ । गवरुता दए केँ एतए सँ निकानु किडलीक
सौदागर एहि डकडवरी केँ । बहि तँ थाँड अगम पाछी अगमहि । छेत चनु सभ केँउ
एतए सँ ।

प्रभा हाए ले हमर कपाव । की करैत की भए गेल । जगदी पड़ ७ एहन गाम सँ । हमरा रौड
डव होए ।

आदिल अहाँ घरवाँड बहि । कल काग बैस धक ।

प्रभा माग पाँड । (ठाँठ भए नग जाए काश मे) एहि तयारक आगि केँ अहाँक टुक भवि पाणि
किन्नरु मिमाए बहि सकत । जगदी पड़ ७ ।

आदिल कोला डव बहि । डल भवि बैस धक देखु तमागि । हम जलेडी, एहन सिद्धेश केँ कोला
कल्पान कएन जागत अछि ।

प्रभा रौस, नडेत बह अहाँ एहि सिद्धेश सँ । हम आथि मुनि जेडी । (आरि केँ रौसडिथि ।)

आदिल आदरणीय अतिथि ग, प्रगया हमर दु गेट, सुनि जेन जाए, तखन जमिका जे कवरौक हो मे
करैत जाएँ । अगल लोकमि एहि अगम प्रतिस्पर्धा केँ देखि केँ हमरा अगाव आनन्द
भेल । किएक तँ एकव मुन नम्र बहन गामक लोक केँ सुन बाथर । तेँ हम सभ अतिथिक
हृदय सँ प्रसिमा करैत छी । अगल सभ एक सँ एक आगाँ रौठ केँ हमर गूजा पिताक
प्राणक कएन तहि हेतु हम अगल सभक प्रति आजीवन प्रतल बहँ । अगल सभक
पाव पकडि प्रार्थना करैत छी जे जेना हमर पिताक प्राण रौटाउन तहिना हमर प्रतिष्ठा
रौटाउन जाए ।

रौव रौह । अगल रौड कोमिण सँ एहि ग्रियम परिवर्ति केँ ससारि जेन ।

तान्त्रिक रौव जी भनहि सभुछ भए जाथु, हमर समाधान बहि भेल । हम अगलक गूजा पिताजीक
कह सँ ए सुन छहिली जे ओ ककब टिकिसो सँ सुन भेलाह ।

[किड काग सभ रूठ १क कह तकेत अछि ।]

रूठ । (किड काग मोटि केँ) हमरा गूडेडी तँ हम एतरेँ कहँ जे हम ककरो टिकिसो सँ बहि,
रौठ सगबिराव आरि गेलाह तकव तकेत, तकेत आनन्द भेल जे सभ योग-रौना रिना
गेल ।

[सभ टकित भए एक दोसबाक कह तकेत छथि ।]



- डाकठेव आरू दूह की तकेछी । तेछी गेन उँचि रिदाग । छेत छु अपन-अपन घर । थायू
आदि रौं अपन रौंगक शौहक पिन्ड अपनहि ।
- आदि (घरबाए के दुनु हाथ जोड़ा) हम सबक पाएव धरेछी । एहन कठोव दंड देरौ सँ पहिल
एहि अपवादीक दूह सँ दु गेह, सुनि गेन जाए ।
- रूठ । (आसामपुरीक ठाठ भा के) एक रूठ आ ताहि पब टिब रोगी । हमरा होम नहि बहन जे
की राजी की नहि । माह....मा..(रौन कष्टपठागत छुनि आ खसित जकाँ रैमि जागत छुनि ।)
- आदि पिताजीक एहन ह्रिति के देखेत प्रपत्ता अपन लोकनि छन भवि रैमि गेन जाए । (सब
रैमि छुनि ।) सुनन जाए जे पिताजीक दूह सँ एहन कथा किएक रैबएननि । (प्रभा सँ
) कल पानि । (दु गेह पानि पीरि के) सुनन जाए । हम आजूक दुनियाँक टकाटोह मे
पछा के आ (प्रभा दिस सकेत कए) हिनक मायाजान मे रैमि के....
- प्रभा आ हमरा अपन मायाजान रैमा के ।
- आदि छुप बद्ध । एखन मज्जाक नहि । हमरा कलको होम नहि बहन जे पिताक हृदय आ माताक
ममता केहन होगछि । हम माए-रौंग के मानक मान कनपरैत-कनपरैत बहनहूँ । धन्यवाद
डाकठेव साहेब के जे हमर ओ मोह निद्रा तोड़नि । धन्यवाद एहि (प्रभा दिस सकेत)
ममतामयी नाबीबने के जे हमरा मायू काण पकड़ा के एतए घाँटि अवननि । रूठ-रूठ
रय पब एक सँग रैछी, गेहो आ गेहोतक दूह देखितहि आनन्दक महरी मे सब रोगरोगि
दहा गेननि । तहि ओहन कथा दूह सँ रैबए गेननि । एहि सब दुखद घटनाक अपवादी
हम छी । झमा कक अपन लोकनि । झमा कक रौंरूजी । झमा कब माए । (माए-रौंगक
पाएव पकड़ा के कलैत छुनि । माए आँच सँ लाव पोछित छुनि ।)
- रूठ । (डेन धए उँठैत) रौं, अ अहाँक दोख नहि । अ एहि घोब कमिकानक दोख थिक । उँ
आ सब के आदरपुरीक भोजन कवरिण गए ।
- तांत्रिक आरू रितय किएक ? मा दुर्गाक प्रसादे रीमो होखओ ।
(आगाँ आदि आ प्रभा, तनिक पाछाँ सब टिकिसक जागत छुनि ।)
- रूठ । रौं, आँखि खोलन । आरू भोज हेतै । चमक देखेन ।
- रकण (मछ उँठ के हर्य सँ हँसैत नैछैत)

भोज हेतै भोज हेतै भोज हेतै ना
भोज थेरै भोज थेरै भोज थेरै ना
गाम जेरै गाम जेरै गाम जेरै ना
भोज थेरै भोज थेरै भोज थेरै ना
भोज थेरै भोज थेरै भोज थेरै ना

[रूठि आ रकणक प्रश्न ।]

- रूठ । (मुँह दृष्टि सँ टाक दिस ताकि) टाक दिस सुन । सब छन गेन, सब । एहि सुन मे
कतेक कान, कतेक कान एना रैमन बहर ? कतेक कान ? हमरू आरू जेराक
छाँ । कोसब ? कतए ?
- सगथा सँ जतए सँ खेब केओ घुँवैत नहि अछि ।
यद् गन्ना न निरति । यद् गन्ना न निरति

একাকী -হলোবা সমাজ

ସ୍ୱର୍ଯକଣା- କାକୀ..... ହସ୍ତ ଘରକୀ କାକୀ, କତଃ ଛେତହିନ ?

সূর্যকনা- কাকী, কাকনিয়া মৈ কং সুলে ডিও ফেব কিডু ঠে, আগ ভোবকা গবী সঁ কাকনিয়া বাঁবু
নং কং গেলৈও স্বর্গসাদুস্ত কবরৌ নং দবঙগা ।

মরকী কাকী- বৈড়বব ৬৬৬৬ পাণী নবকী ক২ কী রাত কৰে ভী... ভৌবা ট জাণ সঁ মাৰি দেটে
 মৌগীকেঁ । দেখিযৌ, দেহমে কোলা জাণ টে জে ফেব গোলৈ খু... খমা-খম হোগ ন২ ।

মরকী কাকী- তোহেব রাত সলী ডু২ কনিয়াঁ পব খলী মোচলৈ তঁ বদলৈ ক২ ডৈ। জে লোগ নিখম
 বলাল ডৈ আ কহি ডৈ বৈঠী বৈঠী এক সমাল, বহু বৈঠীক গজ্জতক দুমান বঁনি জাগ ডৈ। ঘোব কনহাগ
 ডৈ। সভ মজবৈব ডৈ।

বামেশ্বির- বসাকালী গায়, কী কবরৈ, ডাকঠব সাহেব কহি টে জে ফেব রৌপী ঞগ। মহগ হাগমে চাবি
ঠা রৌপী পহিলে সঁ ঞছি। রৌপীক খাতিব ডু: রৌব ঞহাকৈ সফেয়া কবা ঢুকৌ, আর তঁ ঞহাক শেব
দেখ ডাকঠব সফেয়া কবৈসঁ মেহো মফা কবৈত ঞছি। কহি টে জে ঞহাক দেহমে খু... ন লৈ যং। ঢনু
গাম ঢনু, ওতং মিঢ়ে... সঁ মিঢ়াবি কং কোলাং কাজ কবরৈ।

কমলা- হযৌ কাকালী রাঁধ, হম ঐহাঁম সত্ত বেঁধ নিহোঁবা কলে ভী কি ঐহাঁ হমবাসঁ এতেক রাঁডকা পাগ লে কবাওঁ । ঐকব রাঁধ হম দুশু পবাণিয়ে ঠা কৱ লে থলে পবিত্রাবকে নাগত । ঐগ রেঁঠী রেঁঠাসঁ কম ভে জে ঐহাঁ রেঁঠী নৱ ঐগহব ভেন ভী ঐ হমব জাণক দৃশ্যগ রাঁধি বহন ভী ।

বামেশ্বরি- অগণ ঝাঁক তুঁ রীদে বাথ। লে তুঁ ঐতিম নতিয়ারিত গাঙ্গ নং জেরৌ। জেগা ঐতেক সাল
তক ঝাঁক সিলে উঁ তলিগা আগুও সিলে বহ। তুঁ যব যা জী, হমবা তকব গবরাহ লে ঐছি। জারিং
তক তোবা দেহমে জাণ ডুঙ তারিং তক জেগা জেগা কহরৌ কবিত বহ।



कमना- तँ नऽ निश्च ल हमर ज्ञान, श्रुति गिन जेत हमरा । अहाँक मारि-गारि मँ आ अग पाप करैमँ.....

बामेश्वर- की कहनी पाप..... पाप ले करिषँ तँ की करिषँ । माने-मान रैषी जन्मरैत बहिषँ । जुरै हम घबसँ निकलैत छी तँ नरैग हमरा देखे झूठ खेब नऽए । बोले-बोले कोग हमरा देखे सऽ तँ कहे सऽ कि अही निपुतबाहाक दक्खन करि हमर अजुका दिन खबार् भऽ गेल । तँ की बुझैली कि अग रैदनामैके नऽ कऽ हम केना तिन-तिन मरि बहन छी । छन घब छन, हम सहेया करैरैना दराग नऽ कऽ अरै छी ।

पठाक्षेप ।

तेसर-दृष्ट

(कमना गार्डीमँ उतड़ि किछ दुब छलैत रैलेशि भऽ गिब पडैत अछि ।)

बामेश्वर- बमकानी माय..... बमकानी माय..... की भेल ? कोग कनी पापि दिख ।

(एक रज्जि एक गिनाम पागल बामेश्वरकेँ पकड़ रैत छथि । बामेश्वर पागल कमनाक झूठ पब छिठैत अछि । कमना तक मँ आँखि खोलैत अछि ।)

कमना- कनी पिये नऽ पागल दिख ।

(बामेश्वर पागल गिनाम कमनाकेँ दै छथि ।)

बामेश्वर- बमकानी माय, की भेल ? ठीक छिषँ ल, ठीगव गार्डी मंगारी घब पब मँ आकि बसे-बसे जएन भऽ जएत ।

कमना- हम ठीक छी । उँ गार्डीमे छेलिषँ ल, तग मँ मल घुब गेल । अहाँ चनु, हम धीले-धीले अरै छी ।

(कमना मल-मल भगवानक स्पर्श करैत कहैत छथि- हे भगवान, हमरा देहमे ग की भऽ बहन अछि जेना नछीए पुरा देह कोग पोषण पोषे सऽ । कथला कऽ तँ जेना पताए नछी छी । भगवान अगव हम मरि जागँ तँ हमर रौन-रैचाक बक्सा करिहक ।)

पठाक्षेप ।

चौथ-दृष्ट

बामेश्वर- कतऽ गेलिषँ..... निश्च, ग गोली खा निश्च ।

कमना- हमर रौत मायु आ अग रैचाकेँ ले गिवाउ । टकिस महिना छनि बहन छै । आरैऽ दियो जे आरैए, अगल भागे एतै । हमरा भागमे रैषी ले निखन छै तँ तँ ले होग छै । हम ग दराग ले खएँ ।



बामेश्वर- (एक थप्पल कमलक गानपव दैत कहैत अछि) मै किअ एहन कबम डुई तौहव जे तौवा कोणथमे रौंठी पणपरै लै करै डुई । कोण लौ घबमे आगि नगोल छैनल मै एहन रौंमेलि कोणथ द२ क२ भगवान पठैतको । कर्मिन्दी... कर्मकनी, कहाँ क२ हमरे कपावमे सँतन छैन । छुपछाप अ दराग था जे लै तँ ज़रबदस्तियो खुँन होग छै हमरा, रूमजिली कि लै ।

कमला- ठीक छै, अहाँक मज़ीक थिनाफ आग तक एको गो काज लै केलौ आ आगयो लै कवरै, अहाँ जे छहि छी हम रहै कवरै । हम दराग थाग छी, आगु बास बाथै ।

(कमला दराग थाग य२ आ बामेश्वर पएव नगाडैत ७त२ मँ छलि जाग य२ ।)

पठाम्फेग ।

अतिम-दृष्ट

(गायक सबकारी अस्पतालमे अकमला अरुहामे कमला खुँन मँ नतगत पडन अछि ।)

बर्म- डाक्टरब साहेरै, की कविअ ? कावनी क२ हागत रँहूत सिबियस भेल जाग य२ । खुँन रँहूत लै त२ बहन अछि । देखक आवास रौंमी खुँन निकलि छेलै, की कवरै ?

डाक्टरब- हम अहाँ की कवि सकै छिअ । हम तँ रँम प्रयास कवरै जे कि बागतेमँ क२ बहन छिअ । गमन जे जेना करै छै, तहिना परै छै ।

(10 सालक बमाली कलैत डाक्टरब नग अरै अछि । डाक्टरब साहेरै देखियौ ल, माय क२ की भेलै । माँ लै लै छै ।)

(डाक्टरब साहेरै नौड क२ कमला नग जाग छथि जत२ बामेश्वर कमलक मथा अगला कोवामे न२ क२ रिनाग करै छथि ।)

डाक्टरब- छुप बहू, अत२ एना कनगाग रँद कक, सरँहक जडि अहाँ छी । आरँ अग लोवमँ हमददी देखै छी ।

(डाक्टरब कमलक नारी देखै आ आनसँ सेहो जाँट करै ।)

बामेश्वर- की भेलै डाक्टरब साहेरै, किअ अ एना नाक-रौतू त२ गेलै ।

डाक्टरब- अकवा झुझि गिल गेलै । अहाँक अवाचारमँ । आरँ अग पागक नगरीकें छोटि छलि देनथि । न२ जाँड अकवा आ गुडरै कि अहाँक रौंठी देल रिना अ किअ दूनिगाँ छोटि देनक । अहाँक मज़ी रिना किअ आँथि रँद क२ लेनक । जाँड आ गुडियौ । अकवा देहमँ निकनन अग खुँनक लेतमँ । अहाँ हलावा छी । रौंठीक नामछमे यवरागीकें मारि देलौ । अहाँकें तँ मोतो नमीरँ लै हएत ।

बामेश्वर- हँ डाक्टरब, हम कातिन छी । अगल खुँनीकें...अगल ज़ीरन मंगनीकें...अग रँचा सरँहक मफातकें ।

46



एकठा लोक (ठका रंजनाथ छोटि मजदूर सभकेँ अकालेत छेवलो देनसब वग अरैए) : देथे छिं जे काज तँ चनियाे बहन छै, तखन फेब ?

छेवलो देनसब : एतरेँ मजदूरसँ काज ले चनते । पूरा पुन हिन बहन छै । (छेवलो दैत) सुले जाई, सुले जाई । ... गंगा ब्रिज । परिव गंगापर रैनन ए पुनक मरानाति जेन मजदूर चली । स्त्री-पुनक, रान-बृह सभ कियो आरदन द२ सकै छथि ।

देनसब लोक (ठका रंजनाथ छोटि क२ छेवलो देनसब वग अरैए) : एतरेँ दिसमे कोणा ए हान भ२ गेलै । सुले छिं जतेक पाया ए पुनमे छै ततेक कए कवाड ठीका एकवा रैनरैमे थर्ट भेल बहे ।

छेवलो देनसब : काज ठगसँ ले भेल बहे । सुले जाई, सुले जाई... । गंगापर रैनन ए पुनक मरानाति जेन मजदूर चली । स्त्री-पुनक, रान-बृह सभ कियो आरदन द२ सकै छथि । सुले जाई, सुले जाई ।

एकठा लोक : देथे छिं, जहिया रैनिये बहन छलै, रैन क२ तैयारो ले भेल बहे, तहियेसँ ए पुनक मरानाति शुन छै ।

देनसब लोक : टिप्पीपर टिप्पी पडि बहन छै । उद्धाठनसँ पहिनहिये सँ टिप्पी पडनाग शुन भ२ जेन बहे ।

छेवलो देनसब : सबकारी पुन छिं, टिप्पी ले पडते तँ गंजीनियर आ ठिकेदावक घबपर डब्बा कोणा एते । सुले जाई, सुले जाई... ।

एकठा लोक : हो छेवलोरेना, से तँ रूमनिं, हूदा से ल कह२ जे दुनियाँ मे आला ठाम पुन रेलै छै, से उतका गंजीनियर आ ठिकेदावक घबपर डब्बा पडै छै आकि ले हो ।

छेवलो देनसब : किजा ल गेलिं, हूदा सुले छिं अथेजरेना पुन मजगुत होग छलै । सुले जाई, सुले जाई... ।

देनसब लोक : हो, अलबक पाग आरै छलै वृष्टक तँ जे एकाध ठी पुन अथेज रैननके से मजगुते ल हेते हो ।

एकठा लोक : गंजीनियर आ ठिकेदाव सभ वृष्टमे अथेजसँ कम ले छै, हूदा पुन मजगुत कि ए ले रैनरै छै हो । उग रैनरैमे अथेज सन कि ए ले छै हो ।

देनसब लोक : मजगुत रैना देते तँ फेब मरानातिक ठेका कोणा भेटैते हो । की हो छेवलोरेना..

छेवलो देनसब : किजा ल गेलिं । सुले जाई, सुले जाई... । गंगापर रैनन ए पुनक मरानाति जेन मजदूर चली । स्त्री-पुनक, रान-बृह सभ कियो आरदन द२ सकै छथि । सुले जाई, सुले जाई ।

(छेवलो रेना चलि जागए । पाडसँ दु-दूरी तिवंगा नन्दा जेल रैचा सभ अरैए । संगमे दूरी शिफक छै । एकठा शिफक (रा शिफिका) आगा-आगा आ एकठा शिफक (रा शिफिका) पाडा-पाडा चलि बहन



हुथि । सत गजदुवकेँ एक-एकटी सन्डा दऽ देव जाग छै । “उग दुनु छी लोककेँ सेहो एक-एकटी सन्डा देव जाए”- अ गग शिक्षक गगिवासे कहे हुथि, दूदा सन्डा घटि गेलै, से उ दुनु थाली हाथ बहि जाग हुथि आ सतक दूह तकऽ नहो हुथि ।

गजदुवक सोसाँ उ दुनु लोक ठाठ भऽ जागए आ हएव डके नग आरि ठाठ भऽ जागए आ आश्चर्य देखऽ नहोए ।

विरारिक सन्डा नऽ कऽ रौकी सत गोठेँ गटगव छितवा जाग हुथि आ नृजगव ठाठ भऽ जाग हुथि । उमसक रातारका सगल गमबन अछि, दुनु लोककेँ छोडि सतक दूहगव (गजदुव सतक सेहो) हँसी-प्रमसता आरि जाग छै ।

जखन सत ठाठ भऽ जाग हुथि तखन दुनु शिक्षक (रा शिक्षिका) रौटा सतक आगाँ आ दर्मेक सतक सोसाँ ठाठ भऽ जाग हुथि ।

“१३ अगस्त” अ नावा दुनु शिक्षक रौजेँ हुथि आ “स्वतंत्रता दिवस” अ सत गिनि कऽ (दुनु लोक केँ छोडि कऽ) रौजेँ हुथि ।

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) १: रौआ-रूँ । आग अ विरारिक सन्डा हमरा सतक हाथमे रहवा बहन अछि । पहिल हम सत दोसबाक अवीन छुलौ, गवावीन छुलौ, अ सन्डा सुकन छन, रहवा ले सके छुलौ । सन्डा रहवागत बहए उग लेन हमरा सतकेँ जेव नगरैत बहऽ पडत । (टाक दिस हाथ गमावेत) अ गनाकामे आरि खुँ गमबत । जमीन्दावक बाज खतम भऽ गेल । सत कियो पठि सके हुथि । सगड १-सटी, हाह, आरि सत खतम भऽ गेल । हमरा सतक जीरनमे एकटी नरका भेव आएन अछि । नरका शिक्षा, नरका खेतीक चनणि हएत ।

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) २: रौडका टिमलीक धूँआ आ रौडका-रौडका रौह । रिलेँतसँ आरैरैना सत सगाण टिमलीरैना हेल्लेँमे तैयाव हएत । रौडका-रौडका रौह उग धावकेँ रौहि-ढुक कऽ सङ्गत कऽ देत । खुँ उगजत खेत, रौथा रौवखत गन्दक ले हमरा सतक प्रतापसँ । खेत-खेत रौहत धाव, हएत गँथेली । छेष्ट-पेयक भेद मेष्टी जएत ।

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) ३: छेष्ट-पेयक भेद मेष्टी जएत ? रौडका टिमलीक धूँआ आ रौडका-रौडका रौह छेष्ट-पेयक भेद मेष्टीएत ?

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) ४: हँ । गँथेली हएत खेत-खेत । रिलेँतसँ आरैरैना सत सगाण आरि एते टिमलीरैना हेल्लेँमे तैयाव हएत ।

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) ५: रौडका रौह आ रौडका हेल्लेँमे देव बाम सगाण सेहो आरै छै । ओक निदाण जकवी छै । बिकास एकतप्पा भऽ जएत ।

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) ६: बिकास एकतप्पा कोणा हएत ?

निष्कर्ष (रा निष्क्रिका) ७: रौडका हेल्लेँमे सत ठाम ले नागि सकत, कतौ-कतौ नागत, उतऽ रौमिहावक पडिण हएत । रौडका रौह रौनसँ ओक तीवक गागसँ सेहो लोकक पडिण हएत । रौडका रौह जँ



मजदूर तै हएत तँ ओ छूटैत आ प्रणय आएत । रँडका लैकट्टी आ रँडका रौन्ह लोकक जिनगीकेँ
ढोहोछित कइ देत ।

निष्कर्ष (वा निष्क्रिया) २: एक पीढ़ीकेँ तँ रँनिदान देरैए पडत । रँचा सभ, रँजै ज़ाँड । अहाँ सभ देशे
जेन अपनकेँ समर्पण करै आकि तै ।

निष्कर्ष (वा निष्क्रिया) १: रँचा सभ, रँजै ज़ाँड, अहाँ सभ की रँनरँ चहै छी । समाजकेँ की देरैरँ चहै
छी ।

रँचा १: हम ञ्जनीयव रँनरँ आ सडक, पुन, नहव रँनएरँ । ज़गसँ लोकक दुःख दूर हेटे ।

रँचा २: हमरँ ञ्जनीयव रँनरँ । रँडका-रँडका रँन्ह, रँडका-रँडका टिम्ली धूँआ । धूँआ सँघेमे हमरा
रँड्ड नीक नलैए । कतेक नीक दिन आएत, रँडका-रँडका रँन्ह, रँडका-रँडका टिम्ली देशे भविष्ये पसरि
जाएत ।

रँचा ३: ह्रदा धूँआसँ थोँथी होए छै । हमर माए थोँथी करैत बहैए । हमरा धूँआसँ पवहेज अछि ।

रँचा ४: ह्रदा हमर माए तँ तनमाघव जागतै तै अछि । ह्रदा हम जाग छी, घेबा-बुका कइ, आ धूँआक
गंध, रँडका देराव, ज़ सभ हमरा रँड्ड नीक नलैए ।

निष्क्रिया २: नीकगण । ह्रदा विकास केहन हूँअ, ज़ सभ हमरा सभक हाथमे तै अछि । पठना आ
दिनीमे ज़ निर्णय हएत जे हमरा सभ जेन केहन विकास हेरौक छी ।

निष्क्रिया १: नीकगण, नीक गण जे हमरा सभक विकास जेन पठना आ दिनीमे मोहन ज़ा बहन अछि ।
ह्रदा ओतइ रँसि कइ रा एकाध दिनक हनतनरीमे कएन दौड़ सँ ओ सभ उचित निर्णय नइ सकत ?
जे से, ह्रदा हम सभ समाज जेन काज करी, से सतत ध्यान बहए । पुवा ञ्जानदावीसँ, ज़ाण ज़ी नगा
कइ एँ देशेक इतिहास हमरा सभकेँ रँनरँक अछि, से ध्यान बहए । आग १३, अगस्त १९४७ केँ हम ज़
प्रण ली, रचन दी ।

सभ रँचा: हम सभ रचन दै छी, हम सभ पुवा ञ्जानदावीसँ ज़ाण ज़ी नगा कइ एँ देशेक नर इतिहास
निखरै ।

(“१३ अगस्त” ज़ नावा दुनु निष्कर्ष रँजै छथि आ “स्वतंत्रता दिवस” ज़ सभ मिलि कइ (दुनु लोक केँ
छोड़ि कइ) रँजै छथि । रँचा आ निष्कर्ष सभ मजदूर सभसँ सडा आपस नइ तै छथि । मजदूर सभ
हएव रँसि कइ ठक-रूक कइ नलैए । दुनु लोक ओतै हतप्रभ ठाठ बहैए । हएव गर्दीक पाड़ा कोणमे
देखइ नलैए जेना ककरो एरौक प्रतीक्षा कइ बहन हूँअ । तखन दुनु हवरँड । कइ ज़ागए आ एकठा
कसी आनि कइ बाथैए । एकठा ४०-४३ रँथक अभियन्ता मटंगव अरैए । अभियन्ता कलक हाँकि बहन
अछि, कसी देखिते ओ धरँसँ ओग कसीगव रँसि ज़ागए । हएव सँसि हिर कइ ठाठ होगए । ठक-रूक
रँद भइ ज़ाग छै आ मजदूर सभ ब्रिज भइ ज़ागए, ओ दुनु लोक कोण दिस दँका नग छनि ज़ागए
आ ब्रिज भइ ज़ागए । अभियन्ता रँजइ नलैए ।)

अभियन्ता: (कसीकेँ समझैत) एना । एना हिन बहन अछि ज़, ज़ गंगा ब्रिज । सीमेन्ट, रँन्ह, मिश्रीक
कँक्रेसँ रँनन ज़ पुन कठपुनासँ रँनी हिलैए । ज़हिया आरै छी, मर्यादातिथेक काज छलैत बहै छै ।



रन-ले, एक दिस; एक्क दिसका मात्र भन्ने क२ बहि गेल अछि । एक्क दिस पुन खूजन छै, दोसर दिस कोना छनत, अदहा पुनभव मर्यादातिक काज भन्ने बहन अछि । (तखल ओ आतामी कणमे हिन२ नलीए आ ओकर राजरै खवखा छै छै ।) ए पुन तँ एत हिलि बहन अछि जत गामक कठपुता ले हिले ।

(तखल एकठा ठिकेदाव अछै ।)

ठिकेदाव (अभियन्ता): हग ञ्जनीमियव । तौछै रहह क२ रहह बहि गेलै । राबुरै एना क२ चानमिँ चानू, उना क२ चानू, जेना ओ चाँव दलि हूँ अ ददा ह्य मेहो चानलौ । ठीक छै ठीक छै । तूँ कहे छलै जे बोधी रैनरी जेन जेना चाले छी तहिना पुन रैनरी जेन चानू, तखल नीक बोधी सन नीक पुन रैनत । ठीक छै ठीक छै । ह्य एतेक सीमेष, एतेक राबुर, एतेक.. ह्य कहल बही जे ह्य तौहव सत गण मानरै, ददा तखल लता, दोसर ञ्जनीमियव, गुन्डा, एकवा सतकेँ कमिष कत२ सँ देरै ? तौवा कहलसँ राबुर चान२ नगलौ आ कमिष रैन क२ देरि । ह्य तँ किछु ले भेल ददा तौहव रैनरी भन्ने गेलौ, तौहव दकाला रैन भन्ने गेलौ । रैचा सतक नाम युनसँ कठार२ पडलौ, गाम पठा२ पडलौ रैचा सतकेँ । ह्य कहल बहियो तौवा, जे राबुर चानरै, एतेक सीमेष, एतेक राबुर, सत मिश्रमँ देरै । ह्यवा की ? गलाक पुन, सडक... जतेक मजगुत बहते ततेक ल नीक । ह्यवा जेन नीके । ददा ह्यवा रूमन छन जे तौहव रैनरी भन्ने जेतौ । छिह ञ्जनीमियव, लताक दहिना हाथ.. पहिल ह्यल कहल बहए तौवा लोनवक नीचाँमे पिछ । क२ देल.. रैगाम छिह ञ्जनीमियव । देख, पहिल ह्यवा लोच छन जे तौछै ओकरे सत जेकाँ छै, अण लै रैद रैले ए सत क२ बहन छै । ददा रौदमे ह्य देखलौ जे ले, तूँ अण छै । ददा ह्य की कक ? ह्य अण रैचाक नाम युनसँ ले कठरी सके छी । ददा जौ तौवा सन छिह ञ्जनीमियव आरि जाए... कहियो मे दिस आरै... तखल ह्य ह्यसँ राबुर चानरै शुन कवरै आ रहह चानन राबुर, एत राबुर एत सीमेषमे गिलाएरै । एत राबुर, एत सीमेष, सतठी ओहिना जेना अहाँ तूँ कहे छलै । ददा जखल तौवा सन कियो आरै तखल किल । तखल तँ...

(अभियन्ता आ ठिकेदावक प्रश्न । नागन जेना ब्रिज लोककेँ अभियन्ता आ ठिकेदावक गणक रियममे रूमन ले भेल जेना ए सत आतामी छन । दृष्टी लोक ब्रिज हितिँ घुँ अमथिबसँ उका रैज२ नलीए आ तखल मजदुर सत मेहो ब्रिज हितिँ आगम आरि जाए आ ह्यसँ ठकठक क२ नलीए । दृष्टी लोक उकाक अराज आहु-आहु तेज क२ नलीए आ ह्य ठक-ठक अराज मछिम पडि जाए आ उकाक अराजक सग पर्दा थमै ।)

कल २

दृष्ट १

(ञ्जनीमियविग कालेजक दीक्षासु समारोह, रिद्यार्थी सत ठाठ अछि आ शिक्षक (रा शिक्षिका) भाषा द२ बहन छथि । अभियन्ता मेहो रिद्यार्थी सत मर ठाठ अछि ।)

शिक्षक/ शिक्षिका १: अहाँ सतक आग ए ञ्जनीमियविग कालेजमे अतिम दिस अछि । एतका जीरन आ अमन जीरनमे रैत अन्त छै । आर अहाँ सतकेँ धुवा-गर्दामे जेरैक अछि । काज कवरैक अछि । मोन नगा क२ काज कवरैक अछि । एतेक काज कवरैक अछि जे ए खेत मोना उगजार२ नाग ।



लोकक जीरणमे समृद्धि आरि जाए । दिन-बाति ले देखरौक अछि । यह हमर प्रकदक्षिणा छैत । ए दीक्षासु समारोहमे अहाँ सभसँ हम यह आग्रह करै छी ।

हमर देशे, हमर लोक रहु अक्षिकनसँ स्वतंत्र भेल अछि । अदा ए स्वतंत्रता मासिक कपसँ आरि जाए तखन ले । आर्थिक कपसँ हम दोसवासँ स्वतंत्र भऽ जाग, ककरो आगाँ हाथ ले पसावऽ पडए, रँजराक स्वतंत्रता तखन आरि सकत । अतिश्रुता माल रँलणहार, मर्जक । मडक रँलणहार, नहव रँलणहार, पुना रँलणहार । अतिश्रुता माल जोडेरँना । ए पुन लोककेँ लोकसँ जोडत । मडक सभ रँलत । लोकक जीरणमे गति आएत, दोगत जिनगी । नहवि, पोखरिसँ भवन गलाकामे मोना उँपजत ।

(रिद्यार्थी सभक कवतन ध्रुमि ।)

निष्कर्ष/ निष्क्रिया २: अहाँ सभकेँ रँडका-रँडका काज कवरौक अछि । रँडका-रँडका राँह रँलरौक अछि । ओहीँ विकास हेतै, ओहीँ तेजसँ विकास हेतै । मगले रिद्यमे अही तबहेँ विकास भेल छै । भावतकेँ स्वतंत्रता भेटेल छै, आ ए स्वतंत्रता तखन काँय बहि सकत जखन तेजसँ विकास छैत । आ तेजसँ विकास छैत रँडका-रँडका छैकछी आ रँडका-रँडका राँहसँ ।

निष्कर्ष/ निष्क्रिया १: उना तँ हमरा विकासक उग रँडका पथसँ मतिमता अछि, कावण रँडका छैकछीमे हमर लोक मजदूर रँमि कऽ ले बहि जाए, रँडका मजगुत पक्का राँह रँलरौमे जेतक पाग चाली तत ए देशे नग छैहो ले, तखन रँडका कछी राँह कतेक गामकेँ अगल पेटमे जेतै, ओतेक मजगुत ले बहते, छुँतेत भँलौत बहते, मदिखन ओकर मलान्तिये होगत बहते ।

निष्कर्ष/ निष्क्रिया २: अदा अजयप्रबधक ए दीक्षासु समारोहमे विकासक पथक दिशो ले तय कएन जा सकैए । ओ तँ दिशी आ पठलामे तय छैत । आरँ...**(जोबसँ रँजैत)** ए दीक्षासु समारोहमे सभसँ रँशी नयँव नऽ कऽ पास केनिहार छात्रकेँ हम रँजरँ चहि छियहि ।

(अतिश्रुताकेँ हाथक गिावासँ रँजरौए आ मेडन पहिारौए) ।

(रिद्यार्थी सभक कवतन ध्रुमि । निष्कर्ष/ निष्क्रियाक प्रस्ताव ।)

अतिश्रुताक मित्र: दोस । अतिश्रुताक पढ़ागमे तँ तँ राजी मारि गेल छै । आरँ अमल जिनगी शुरू छैत । देखी ओतऽ के राजी मारैए ।

अतिश्रुता कोला अतिश्रुताक जीत छै जे ओकर रँलएन पुन कतेक मजगुत छै, ओकर रँलएन नहवि आ राँह पागिक विकासमे राँधा तँ ले दै छै । ओ लोकक जिनगी सुखी रँल पाँरैए आकि ले । काज समसँ पूर्ण होग छै आकि ले ।

अतिश्रुताक मित्र: रँडका काजमे कल-माल गनती तँ होगते बह छै । जे कही भाग हमरा तँ रँडका छुलव, रँडका छैकछी, रँडका टिमि रँड नीक नछैए । पूँआक सुगङ्ग तँ हमरा रँचेँ नीक नछैए, तौवा तँ रँमले छै ।

अतिश्रुता आ हमर माएकेँ पूँआसँ थोँथी होग छै, हमरा पूँआ नीक ले नछैए । तौवा तँ रँमले छै ।

अतिश्रुताक मित्र: देख भाग हमरा आ तौवामे की अस्तु अछि । हम तँ उग पथगव आगाँ रँटि जाएँ जे दिशी राँ पठना हमरा जेल निर्धारित कवत । मजगुत रँडका पक्का राँह रँलरौले कहत तँ मे



रैलवे, कमजोर रैडका कटा रौन् रैलवेले कहत तँ मे रैलवे। जे उंगवका हकिम कहत मे कवरै।

अभियन्ता चाहे ओ नीक हूँ रौ खवाप।

अभियन्ताक मित्र: उंगवमे रैलवेले तँ कोला ग्रा तँ तँ ले रैलवेले। आ ग्रा लोक अथवा गप किए कहते ?

अभियन्ता तखन एतए पठि कए, जेन अर्जित कए कए की हकिम ?

अभियन्ताक मित्र: जोड भाग। आग खूनीक मोका तँ, आग तँ जीतन तँ तँ आग तोले गप सही, हकिम आगये धरि।

जारी...

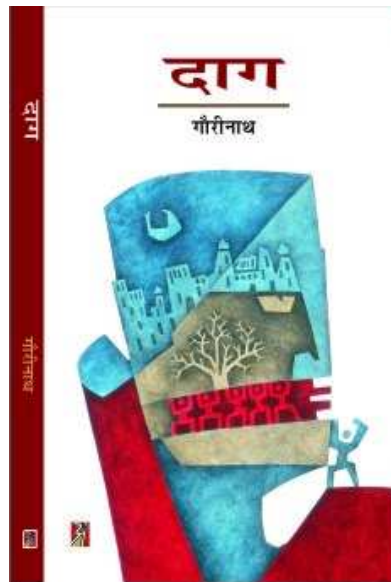
ए बलापन अथवा मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ।



पुनः मन्दन-१. दाग (उंगव्याम) : जौबीनाथ- लोकार्पण २. "मगव बाति दीप
जबय"क देसव हेल (चव)क पहिन मगव बाति दीप जबय ०५ दिसम्बर २०१२ मेथि दिस मन्थारै लै
दवर्तगामे ३. सम्मेलन २-४ नवम्बर २०१२ गडिया हरिष्टेष्ट मेन्स्टेव भारतीय भाषा महोत्सव SAMANVAY 2-
4 November 2012 IHC INDIAN LANGUAGES' FESTIVAL/ ३ नवम्बरके मेथिनीमे जौबीनाथ,
ज्यातिवीरपुर रिद्यापति आ मेथिनीमे प्रेमक गीतगव भेल रैलवे

१

दाग (उंगव्याम) : जौबीनाथ-
लोकार्पण



लोकार्पण, चर्चा आ नाट्य-प्रस्तुति

दाग (उपन्यास) : गौरीनाथ

प्रमुख वक्ता : सुकान्त सोम, सुरेन्द्र स्निग्ध, हृषीकेश सुलभ, प्रेम कुमार मणि
तारानन्द वियोगी, मोना झा, डॉ. विनय कुमार

'दाग'क पहिल अध्याय 'ब्रह्म-शक्ति'क नाट्य-प्रस्तुति

रूपांतरण आ निर्देशन : कुणाल

स्थान : आई एम ए हॉल, दक्षिण गांधी मैदान, पटना

तिथि आ समय : 25 नवम्बर, 2012, संध्या 04:30 बजे सँ 7:00 बजे

विशेष : अंतिका प्रकाशनक पुस्तक आ पत्रिका प्रदर्शनी

एहि अवसर पर मित्र सहित अपने सादर आमंत्रित छी।

निवेदक

जयदेव मिश्र, सचिव आ समस्त भंगिमा परिवार, भंगिमा पटना, दूरभाष संपर्क : 9334339348

रैहूत दिस भेल, एक्केस रर्य, माहलायाक प्रति अश्वरागक एक ठो विशेष क्षण से मैथिली से लिखराक लेल
उन्नाथ भेल बली-1991 से- एहि एक्केस रर्य से नगभग दू गोष्ट कथा-संग्रह जोगव कथा आ दू गोष्ट
रोटारिक (आलोचनात्मक, संपादकालेक आ विवरणालेक) पुस्तक जोगव लेख यत्र-तत्र प्रकाशित आ
छिड़िआयन बहिनो ओकरा सब ले पुस्तकाकाव संग्रहित कवरौक माहस एखन धरि नग भेल । आ प्रायः
अनके कारणे, जकब टर्टा रैहूत आरथक नग । अदा, आ उगनाम एहि लेल पुस्तकाकाव अगल सभक
समक्ष प्रस्तुत क बहल छी जे एकवा पत्र-पत्रिका द्वारा प्रस्तुत कवरौक अविधा हमरा लेल नग छल ।
अदा हमरा नग आ रिशेस छल जे मैथिलीक ओ पाठक रक्षा पठ चाहताह जे प्रायः तेवर रर्य सँ
अतिका पठेत आयन छथि । मैथिली पत्रकारिताक दीर्घकालीन ओहि गतिहास-जे मैथिली पत्रिका
पाठकविशेष आ घाष्टी से रैहवागत अछि-ले खुमि मारित कलेत जे पाठक रक्षा अतिका ले निवतव
घाष्टीबहित रैलोल बहलाह हुनक म्हर पव हमरा आगतयो रिशेस अछि । निश्चये ओ पाठक रक्षा हमर
उगनाम सेहो कीनक पठताह आ हमर पुवणा रिशेस ले आलो दृष्ट कवताह ।

-लेखक

Price : 150.00 INR

स्त्री आ मुद्र दू ले लीन आ मर्दनीय माणरना कर्मकृतिक अरमाणक कथा जे अगल तथाकथित
ब्रह्मशक्ति छद्म अहंकार से परिवर्तनक अज्ञोत देखिए ल पले यए...अखन देख पड़ छै त
पाथडक कीन-कराट ओछि ले यए, अहंछिना कछै यए, घिनाग यए आ अततः एक ठो दाग से रैदले यए
जे कर्मकृतिक सृति शैयक संग परिवर्तनक म्हराहक, स्त्री आ मुद्रक, म्हर्य-प्रतीक सेहो अछि ।

उगनाम पठनीय अछि, रिचारातजक अछि आ मैथिली से लेछग ।

-कृपान



लौरीलाथ मैथिलीक छर्तित आ मागन कथाकाव छुथि । पठनीयता आ लोचकता हिनकर गद्य मे रैस देखागत अछि । माँजन हाथेँ ओ अ उगन्नास लिखनि अछि । लौरीलाथ मैथिली साहित्यक आँखु पव गलाग रना लेखक मे छुथि जे जाति-रिमर्श केँ अपन रियस रतु रैलोननि । आन भारतीय भाषा मे साहित्य जे लोकतांत्रिकीकरण लेन, तकव सवि तक हेरौक मैथिली एखला प्रतीक क बहन अछि । अ उगन्नास मैथिली साहित्यक लोकतांत्रिकीकरण लेन कयन एक ठो सार्थक आ सशक्त प्रयास अछि ।

दाग अलक अंतर्द्व सँरहक रीट सँ छँपेत अछि रिश्तेसगीयता, लोचकता आ लेखकीय असाधदारीक तीन ठो तानन ताव पव एक ठो समायनन छै जकाँ । एत सार्तावाद आ जँल्लारादक मितेराँ सँ पहिलक दीग सनहक तेज त ज्ञायर देखागत अछि । धूखू लोटेत नपुंसक तामस आ रागरीय जाति दंत अछि । नरतुवियाक आर्थिक कारणेँ जाति कष्टवताक तेजरेँ सेहो । दलित रिमर्श अछि, ओकव पड़तान सेहो । दलितक जँल्लगीकरण नहि त ज्ञाय, तकरो टिता अछि । दलित रिमर्शक मन्त्राताराद आ मन्त्रीरादक नजबिछे पड़तान सेहो ।

आकाव मे रैसी पेय नहियो बहेत एहि मे न्यामिक सँ सनहक रिश्ताव अछि अलक लोचक पात्रक गाथाक रँखान सँग । आजूक मैथिल गाम जेना जीरतता सँ एहि उगन्नासक पात्र रँनि केँ सोमाँ अरैत अछि, से अलायामे हल्लियवलाथ केँ केँ मल पाड़ि दैत अछि । गामक नरजूरक सँरहक दन यात्रीक नरतुवियाक योग्य रंशज अछि ।

जँ आजूक मिथिला, ओकव दमो-दिमो आ सँगहि ओत होगत सामाजिक परिवर्तन कपी अमृत मंथनक थाँठी रँखान टाली, तँ दाग केँ पठू ।

एहि लोचक आ अरैत पठनीय उगन्नासक रागक पाठक समाज द्वारा सद्गुतित स्वागत हेत आ गाम-देहात सँ नक नगव पलापछा मे एहि पव छर्त हेत, एहेन हमरा पूर्ण रिश्तास अछि ।

-रिश्तासद मा

मन्त्री आ दलित एहि दू रिमर्श केँ एक सँग समेटेरना उगन्नास हमरा जगतरेँ मे मैथिली मे नहि लिखन सेन अछि । अ उगन्नास एहि विधि केँ लेतेत नरियाक लेखन लेन प्रश्न-रिश्ता सेहो तैयार करैत अछि ।

दाग अपन केनराम मे यात्रीक नरतुविया आ दलितक पृथ्वीपत्रक सँरेदना केँ सेहो रिश्ताव प्रदान करैत अछि । तहि अर्थ मे अ मैथिली उगन्नास पर्वपराक एक ठो महत्वपूर्ण कड़ी सारित हेत । नरतुवियाक रँस-पाठीक विकास-यात्रा केँ गतिशील हरा मट मे देखन जा सकैत अछि । जाति, धर्म, लिंग आदि सीमाक अतिक्रमण करैत मन्त्रा ओ मन्त्राताक पक्ष मे लेखकीय प्रतिरुद्धताक प्रयास थिक स्वतन्त्र सनहक पात्रक निर्माण जे अपन दृष्टि सँ जातीय-रिमर्श सँ आगाँक रँष्टे खोजैत अछि, 'पहिल मन्त्रा रँचटे तखन ल प्रेम !'

अन्तिमर कथा आ शिंपक सँग मिथिलाक नर रँगाव केँ थारना उगन्नास थिक दाग ।

-श्रीधरमा

उसाव-पुसाव



अ उगन्नाम हम नगभग दम रर्य पहिल निथरै शुक्र कयल बही। 2003 मे। एकैसम शिताईक नर गाम मे तखन धरि जे किछु थोड़के सामाजिकता रचन छन, एहि रीच सेहो थमे जकाँ भ गेल। थगन केँ के देखे यए, हारी-रौमारी धरि मे तकेरना नगँ। अहाँक नीक जकब दोसब केँ अणमोहाँत नलो छै। जोत-निष्ठाक पहाड़ समुद्र समुद्र आ हार्दिकता केँ धरा आ नया-नयमान सँ जोड़ि देनक अछि। ...गाम सँ रौह बहरना भाग-भातिज केँ रौदखन करौक यणे रौदन अछि। खेती-किसानीक जगह रागाव आ रौहरी पाग पब जौव। स्थितगव होगते लोक शेर जकाँ आमेकेन्द्रित भ बहन अछि आकि नर तबहक दरंग रैन बहन अछि, नगँटे पब उतबि बहन अछि। संगति की अ कय दुखद जे जाति-धर्म, पाँजि-प्रतिष्ठा मनक मामिला मे एथला; थोड़के कय सही; उग्र कोष्टक सामाजिक एकता, आडर्यव आ शुद्धता देखागते अछि ? ...

सरस समाज दलित-अछुतक कथा पब अदो सँ मोहित होगत बहन आ एरुव आरि रिराह आदिक सेहो अलक छैना सोनाँ आयन। दूदा दलित हरकक संग गामक सिबमोव पडितजीक कथाक भाषि जायसँ, घब रौमायसँ आ ओकब सारनरी हेर पागवारी लोकनि केँ नगँ अवरोत छनि तँ एकवा की कहलै ?

खेतिहर समाज जेन खेती-किसानी सँ रँटि ताग आ पाग कहिया धरि बहत से नगँ कहि सकरै। ...

उना मिथिला-मैथिल-मैथिलीक मामिला मे 'पुरा-दुरा'क हस्तक्षेप पश्चिमक श्रेष्ठता-अर्थि केँ कहियो स्वीकार्य नगँ बहन-थामक शुद्धतारानी लोकनि आ पोगा पडित लोकनि केँ ! ...

निश्चये ओहल रात्रि केँ मैथिल समाजक अ पाठ रौजाय नगतनि जे मयबथ आ मयबथ मे भेद करै छथि, एक केँ श्रेष्ठ आ दोसब केँ हीन रूनेत छथि ! ...

सिवाही-प्रतापगज-नलितग्राम-हावरिसगज रीचक आ कात-करोष्टक 'पुरा-दुरा' गाम-घबक किछु शेर, (ककनी, कबकष्टिया, टोहरी, दोदर आदि), किछु धुनि, तिम-तिम तबहक उटावा आ रतनीक रिरिबता कोसी-पश्चिमक किछु पाठक केँ अपविटित भनहि नगनि, अँकड़ जकाँ प्रायः नगँ नगराक चाहियनि किएक तँ कोसी पब नर रैनन पुन चानु भ गेल अछि...जाति मे भागनि आकि अजाति मे, रौष्टी-रौहिन घब-घब सँ भागरे कबतनि...ताग आ पाग धमले बहि जयतनि ! ...नर-नर रौष्ट आ पुन आकर्षक होगत छै। से जले अछि छान-पगहा तोड़री जेन आफन-राफन नर तुबक मैथिल कथा। है, पडिजी रूनेतो तकरा स्वीकार नगँ चाहित छथि।

उगन्नामक अग्रिम पाँति पूवा क हम रिशामक दूदा मे बही...कि पडिजी, माल पडित भरणथ मिश्र, आरि गेनाह। पडिजनि-पडित कका, अँकड़क अग्रक उतब के देत ? कछु, ओकब कोन अपवाद ? ... पडित कका किछु ल रौजनाह, रौक रैन गेनाह ! ...दूदा हूका अँथि मे अलक तबहक मिश्रित आध छननि। ओ पहिल जकाँ दूरमा नगँ भ पारि बहन छनाह, दूदा भार छननि-खड्ड करै छह ! हमवा नगँठ कक बाधि देनह आ आरौ पछै छह...जाह, तौवा कहियो टेल सँ नगँ बहि हेतह ! ...

अँकड़क छाती पब जे दाग अछि, तेहन-तेहन अलक दाग सँ एहि लेखकक गत्र-गत्र दागराक आकाँक्षी पडित समाज आ रिश आलोचक लोकनि नग निश्चये अँकड़क सरानक कोला उतब नगँ हेतनि। स्वतन्त्रक तमस आ ओकब नजबिक दागक दाग सेहो हूका लोकनिक आमे पब मागत नहि रूमागत हेतनि ! ... दूदा सुधी पाठक, दलित समाज सँ आगाँ आरि बहन नरहरक लोकनि आ स्वीगत लोकनिक नर पीठ ी जकब एकव उतब तकराक प्रगाम कबत, से हमवा रिशाम अछि।

-श्रीवीणाथ 01 सितम्बर, 2012



२

"सगव बाति दीप जवय"क दोसर खेज (चक्का)क पहिन सगव बाति दीप जवय ०१ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सम्प्राके के दवउंगामे

--"सगव बाति दीप जवय"क दोसर खेज (चक्का)क पहिन सगव बाति दीप जवय ०१ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सम्प्राके के दवउंगामे

-आयोजक छथि श्री अवरिन्द ठाकुर

--"सगव बाति दीप जवय"क पहिन चक्कामे रहूत बाम घुमपेटीया घुमि गेल बहनि आ आ अपन मुन उद्धेष्ट दुब भऽ गेल छल ।

-लोक भवि बाति सुतेत बहनि, जातिरादितक सब सोना आरि गेल छल, नारी रैना कऽ लोगत समीक्षा आ ब्रह्मरादी-आमंत्रण धरि गप गहुँटि गेल छल । सहि अकादेमिक हस्तक्षेपसँ सामना आब गवरैछ । गेल । १३म सगव बाति दीप जवयमे पठनामे किछ गोठे द्वारा शिवर पीनापब धनाकब ठाकुर बिबोध सेहो एकठे केनहि । तकर बाद ओहीमेसँ किछ गोठे ए गोठाले दियो नऽ गेल, रुदा रिभिन्न कावसँ आ सहि अकादेमिक दरारपब मैथिली पोथी प्रदर्शनी ले नगाउन जा सकल, कारण आयोजक तकर अनुमति ले देनहि, ए सहि अकादेमिक कथा गोठाले १३म --"सगव बाति दीप जवय"क मागता ले देन जा सकल (ओना किछ ब्रह्मरादी कथाकाब आ घुमपेटीया लोकनि एकवा १३म सगव बाति दीप जवय कहि बहन छथि । ।) । १३म --"सगव बाति दीप जवय"क आयोजन रिता बानी द्वारा छेलेमे भेल जतए मात्र एकठा कथाकाब गहुँटना । कियो मना ले उठेनहि आ सगव बाति दीप जवयक पहिन चक्काक दुखद अन्त भऽ गेल ।

--"सगव बाति दीप जवय"के खेपसँ जियेरौक प्रत्येक स्वागत कएन जा बहन अछि । "सगव बाति दीप जवय"क दोसर खेज (चक्का)क पहिन सगव बाति दीप जवय ०१ दिसम्बर २०१२ के "किवा जयन्ती"क अरम्भपब आयोजित भऽ बहन अछि । आशा अछि जे आ नर "सगव बाति दीप जवय"क दोसर खेज (चक्का)क पहिन सगव बाति दीप जवय पुनः अपन ओग पथपब आगाँ रैछत, जे प्रभावक, टोपरी ए जेल मोटल छल ।

३



**समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ अडिया हरिष्टे सन्धेव भारतीय भाषा महोत्सव SAMANVAY 2-4
November 2012 IHC INDIAN LANGUAGES FESTIVAL/ ३ नवम्बरके मैथिलीमे जौहाराद
जातिबिम्बपुरि रिद्यापति आ मैथिलीमे प्रेसक गीतपव भेन रहस**

-भारतीय भाषा महोत्सव २ नवम्बरके प्रावन्तु भेन- -जातिबिम्बपुरि रिद्यापतिक जौहाराद आधावित
“उगना ले” पव कथक नृवागना शौभना नावायाक नृव लोकके मंत्रिद्वय केनक

-समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ अडिया हरिष्टे सन्धेव भारतीय भाषा महोत्सव SAMANVAY 2-4
November 2012 IHC INDIAN LANGUAGES FESTIVAL/

- ३ नवम्बरके मैथिलीमे जौहाराद, जातिबिम्बपुरि रिद्यापति आ मैथिलीमे प्रेसक गीतपव भेन रहस

-रहसमे भाग लेननि उदय नावाया मिह नटकेता, देवर्षिक नरीष, रिता बानी आ गजेन्द्र ठाकुर; आ
मोडेलेष्टव बहनि अवरिन्द दास

-आकाशिराणी दवर्षगा, हिन्दी अखराव सभक दवर्षगा मन्थनी, सी.आ.ग.आ.ग.एन. , साहित्य अकादेमी, लखनऊ
बुक ट्रेस्ट आ अतिका- मिथिला दर्शन, जखन-तखन केव लेखकक प्राणागत, रिद्यापतिके पाग पहिवा क२
रिद्यापति पर केनिहार चेतना समितिक पत्रिका घब राहव, नावखन्त मन्थन आ जातिरादी बगमचक
नाटकक मेझारनी आदि, ए सभ द्वारा मैथिली साहित्यके जौहारादी रत्नराक प्रयासक बिरुद्ध गएव-जौहारादी
समानावत धावाक चर्च गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेन

-जातिबिम्बपुरि गएव जौहारा रिद्यापति आ जातिबिम्बपुरि पश्चात रत्ना कष्टव मन्थनी-अरुण रत्ना
रिद्यापतिक रीट अन्तुव गजेन्द्र ठाकुर लेखकित केनहि

ए मँ पहिल हिन्दी आ मणिपुरीक कार्यक्रम मेहो भेन ।

ए बचनपव अपन मन्त्र ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



डा.कामन्द ना ‘कान’

कवकता रिद्येनिद्यावयमे मैथिली- बाज्जा ठकुराथ टोखरी



१. बाबुसाहेब - बाबुसाहेब विदेहाजील बिदेह

कनकता रिश्तेरिद्यानयमे मैथिलीक अध्यापक प्रोबन्धक लेखक सदनमे डा. जयकांत मिश्र (मैथिली साहित्यक गतिविध, साहित्य अकादेमी) लिखल छथि - स्वर्गीय सब आशुतोष झुखड़ी कनकतामे मैथिलीक महान सभायक कहल जाय सकैत छथि । कमाव गंगा लाल मिह, बाबू गंगापति मिह, जयमोहन ठाकुर, रिद्यालाल ठाकुर आदि महानुभाव लोकनिक प्रयाससँ तथा दुर्गागज प्रबन्धिकाँ बाबा ठाकुराथ टोषवीक उदाव रितीय सहायतासँ १९१७ ई. मे कनकता रिश्तेरिद्यानयमे मैथिली चेतन स्थापित भेल ।

डा. स्वतन्त्र सा (मैथिली: वृत्त ओ पवित्र, चेतना समिति) तालोकनिक हिति आ सहयोगकेँ स्थापित करैत लिखल अछि जे मैथिलीक अध्यापक हेतु दु ठाँ अध्यापक नियुक्त भेल छल । एहिमे एक गोठेक लेखन बजोवक बाबा स्व. ठाकुराथ टोषवी द्वारा देल दुरा बासिसँ तथा दोसर गोठेक लेखनक बासि रेलीनिक स्व. बाबा कीर्तिलाल मिह प्रभृति द्वारा देल दुरासँ देल जागत छल तथा ई लोकनि क्रमशः बजोव तथा रेलीनिक राखीत कहल जाय ।

एहि प्रसंग जयमोहन ठाकुर (रिश्तेरिद्यानयमे मैथिलीक प्रवेश, चेतना समिति) लिखल अछि- जखन हम पुर्णियाँसँ घुमि केँ कनकता पहुँचलहुँ तखन ज्ञात भेल जे बाबा श्रीठाकुराथ टोषवी सेहो उदावदातापूर्वक साढ़े तीन हजार ठाँका देलक मुला सब झुखड़ीकेँ देलथि अछि । ओ ठाकुराथ टोषवी चेतन स्थापित करैक अग्रबोध कएलथि अछि । एहि तबलेँ दुनु (बाबासाहेब कीर्तिलाल मिह) मिलाकेँ एगारह हजार ठाँका तालोकनिक कार्य चलायक हेतु संगीत भए गेल । अर्थात् रिश्तेरिद्यानयमे मैथिलीक अध्यापन कार्य प्रोबन्ध लेखक निमित्त आरम्भक निमित्त उपाय करैक हेतु जे दु उदावदाता मान्यतावा अग्रवागी आर्थिक सहयोग कएल आ कनकता रिश्तेरिद्यानयमे सर्वप्रथम मैथिलीक अध्यापन कार्य प्रोबन्ध भए सकल एरँ जाहिसँ मैथिली शिक्षक राई खुजल, ओहिमे एक छथि बाबा ठाकुराथ टोषवी ।

बाबा ठाकुराथ टोषवी बाबा बुद्धिनाथ टोषवीक पुत्र छल । हिनक जन्म ११ नवम्बर १८८४ ई. केँ दुर्गागज, कटिहारमे भेलनि । ओ अगल रोजावास भए कमाव दुवाराथ टोषवीसँ मात्रा दुओ मास छोट छल । हिनक पिता बाबा बुद्धिनाथ टोषवीक देहान्त जेष्ठ १८८५ ई. मे भए गेलनि । ओहि समयमे दुनु भाए नारायण छल । जेना महाराज महेश्वर मिहक देहान्तसक उपासक हुनक दुनु पुत्रा महाराज नरेश्वर मिह एरँ महाराज बमेश्वर मिहक अपरव्यक्तक कारणेँ दबडंगा बाज कोठेँ आफ राड्सक अन्तर्गत चल गेल छल, ओहिना बाबा बुद्धिनाथ टोषवीक जमीनदारी कोठेँ नागि गेलनि ।

बाबा ठाकुराथ टोषवीक प्राबन्धिक शिक्षा नरद्विप जिलाक प्रमुखगवमे भेलनि । १५ वर्षक अवस्थामे ओ कनकता रिश्तेरिद्यानयसँ प्रथम श्रेणीमे गेब पाम कएल । प्रेसिडेन्सी कालेजसँ अंग्रेजी तथा दर्शन विषयक संग स्नातक भेलनि । अग्रिम शिक्षाक हेतु दर्शनशास्त्रा नए एम. ए. मे नाम लिखाओल । किन्तु १९०४ ई.मे जखन जमीनदारी कोठेँ झुञ्झ भेलनि तँ औपचारिक शिक्षा समाप्त कए जमीनदारी प्रबन्धक दायित्व संभालि



लेन। बाज्जा बुद्धिनाथ टोपवीक जमीनदारी रीतिव आ रीगा न- दुनु बाज्जामे डुननि। ओकव सुप्ररंक्षक हेतु रीतिव फेदक प्ररंक्ष रुमाव डुननाथ टोपवी तथा रीगा न फेदक प्ररंक्ष बाज्जा ठकनाथ टोपवी सम्भवन। बाज्जा ठकनाथ टोपवीक रिराह कोठनथ, मधुरंगी ग्राम निरामी पण्डित ज्ञानकीनाथ माक कन्यामे डुननि। बाज्जा माहरके "तीन पुत्र एर तीन कन्या भेनथिन। हिनक परिवारवमे कतेको खाद्रीस पिताके " कन्यादानक सौभाग्य नहि कोठत डुननि। बाज्जा माहरके " अ सौभाग्य भेठननि। बाज्जा ठकनाथ टोपवी मनुषि सुग उच्चशिक्षा प्राप्त नहि कए सकन डुनाह दुदा, समाजमे शिक्षाक व्यापक प्रचार हो, तदर्थ आजीवन प्रयत्नशील डुनाह। एहि हेतु 1915 अ. मे अपन पिताक नाम पर वामनगवमे युन स्थापित कएन। शिक्षाक क्षेत्रमे हिनक अरदानक उल्लेख करैत मिथिला मिहिर (16 जून, मस 1928 अ.) निथेत अडि- 'शिक्षा प्रचार मे अपन सदा आगे बहते थे। अपनी बाज्जानी वामनगु मे अपन सुगीय पिता के स्मरण मे बुद्धिनाथ अष्टछुषि नाम से एक हाइस्कूल स्थापित कर उसमे अलको विद्यार्थियों को अपनी ओर से सर खर्च देते थे।'

ओहि युनमे मैथिन छात्रक निःशुल्क शिक्षाक व्यवस्था छलैक। खान आ मेधारी छात्रक आवास आदिक प्ररंक्ष बाज्जक दिशि कोठत डुन। रीगामे बहिनो हुनक समस्त पारिवारिक सुख आ सुलोकव मिथिलास डुन। ते " ओत मैथिन छात्र संथा पयाप्त बहत डुन। ओ मैथिन छात्र संघक स्थापना कएन जेकर नियमित रीतिव कोठत छलैक। ओहि रीतिवमे मैथिली निरंक्ष तथा करिता पाठ कोठत डुन। मिथिलास को

ओहमे एक छात्रमे डुनाह कशीनाथ मा जे पछाति मैथिलीक करि कथाकावक रूपमे ख्यात भेलाह। प. कशीनाथ मा जखन मैथिलीक पास कए लेननि त ओहि युनमे हुनक मिहति एक शिक्षक रूपमे भए गेलनि। तदुपरांत, ओ अपन अग्रज काशीनाथ मा (डा. काशीनाथ मा 'किरण') के " गामस आनि लेननि। किराजी ओतिस मधुनिक एर बाज्जा ठकनाथ टोपवीक आर्थिक सहयोग पारि कनकता रियेनियानस अस्ट्रेस

पास कएननि। एहि तथाले " स्पष्ट करैत बाज्जा ठकनाथ टोपवीक पुत्र रुद्रनाथ टोपवी (देहरास, 2004 अ.) निथेत छथि-

At Ramganj, he established a High School in 1915, in the memory of their father. The Maithil Students from

Mthila area were taught free of tuition fee, they were allowed free food and seats in the Maithil Hostel of the school.

Poor students of the area were also allowed teaching free of fees. A Maithil Chhatra Sangha was established in which

essays and verses were read. Late Pandit Kashi nath Jha, who passed Matriculation from there was appointed as a teacher

of the school. Pt. Kashi nath Jha was the elder brother of Mthila's eminent writer and thinker, Dr. Kanchi nath Jha

"Kiran", took great interest in Maithili literature. The students were encouraged to write more and more and read them in



रिभाजनक उपवास्तु 1951 ई. मे बाज्जा ठँकनाथ टोपवीक पुत्र आदि पुरी पाकिस्तानसँ ज्ञान रचय पड़ेनाह, ताववि ओतय दुर्गापूजा खुर् धुमधामसँ होगत छल । बाज्जा ठँकनाथ टोपवी दुर्लभ पुस्तक तथा पाण्डुलिपिक संग्रह कए रिमाण पुस्तकालयक स्थापना कएल छलाह । जखन हुनक एक प्राध्यापक मेरानिरुतिक उपवास्तु रिजेत जय नगनधिन तँ हुनक समस्त संग्रह बाज्जा साहेब कीनि जेल । रुद्रनाथ टोपवी लिखन श्रद्धि - Huge collections

of manuscripts on Talpatra, Bhojapatra and thick papers on different subjects, collected by his ancestors were being

transcribed by eminent pandits for years. He spent hours in reading books in night.

बाज्जा साहेब संगीतक रँड प्रेमी छलाह । रैतिश्रिक संगीतकाव मल्लिक जोकनि हुनक दरबारमे श्रद्धेत बहेत छलनि । शैतबँज एरँ फोष्टेग्रहणी हुनक खरी छल । डाँत्र ज़ीरनमे हूँठरौन, हेलरँ एरँ घोडसरौरी प्रिय छलनि । ओ एक रुमेल शिकावी मेहो छलाह । जखन कोनो सबकावी अमाना अथवा रँगानक परँगव श्रद्धेत छलनि तँ हुनक समानमे रिशेय शिकाव श्रद्धियाण होगत छलैक । एहि जेल हुनका अपन ज़मीनदारीसँ रौहव नहि जय पड़ैत छलनि ।

मिथिला मिहिव एरँ मिथिलामोदक 'मैथिल महामता' रिषयक रिपोर्छ एरँ समाचारमे बाज्जा ठँकनाथ टोपवीक उल्लेख निश्चित कससँ भेटैत श्रद्धि । एहिसँ स्पष्ट होगछ जे ओ मैथिल महामताक श्रद्धिरेशेयमे नियमित कससँ समितित होगत छलाह । ज़हो स्पष्ट होगछ जे ओ समाजोपकारी, सुधारामेक प्रयास एरँ प्रस्तारक समर्थक छलाह । ओ एक नीक रञ्जा छलाह जे मिथिला मोद (उद्भाव, 61 1911 ई.) मे मैथिल महामताक तेसव

श्रद्धिरेशेयक (3-5 नरम्बर 1911 ई. दरभंगा)क प्रकाशित निम्नरिखसँ स्पष्ट होगत । ओ निश्चेत श्रद्धि - द्वितीय दिन (4 नरम्बर 1911 ई.) 2 रँजे त्रीमाण कनिष्ठ बज्जोवारीमि ठँकनाथ टोपवी (B.A.) महोदयक सुन्दर रञ्जता जेल । सरँज्जत श्रद्धि जे बाज्जा ठँकनाथ टोपवी कनकता रिन्निरिखानयमे मैथिलीक प्ररेशेक जेल उन्नावतापुरीक दण देल । किन्तु मैथिली भाषा-साहित्य एरँ संस्कृतिक विकास एरँ संरक्षक स्फ़ेदमे हुनक ओह ठो श्रद्धिदान नहि श्रद्धि । जखन ओ अपन पिताक नामाव युन स्थापित कएल तँ ओहिमे मैथिल ज़ाँवक जेल रिशेय राररञ्ज छल । मैथिल डाँत्र संघक तत्रारारणमे बचनक पाठ कवाए ओ सर्जनामेक प्रतिभाकेँ प्रामोहित करैत छलाह । मिथिलासुवक संरक्षक जेल प्रशिक्षण श्रद्धियाण छलैल छलाह । ओहिना जखन मैथिल महामतामे रा ओकव रौहव सद्गुद यात्रा पव घमिण होगत छल तँ एहि रिषयक निरँङ्ग लेखन प्रतियोगिता आयोजित कवाओल । एहि सङ्गसमे पण्डित ज़ाँवकीनाथ ना, राकवणतीर्थक नामसँ एक निरदण मिथिलामोद, उद्भाव - 61, शाले 1833, सन 1319 मानमे प्रकाशित श्रद्धि । निरदण श्रद्धि - 50 ठोका पुवकाव त्रीमाण बज्जोवारीमिसँ - आधुनिक कानमे मैथिल ज़ाँवकेँ उल्लेख रिनागत ज़ाँवक श्रद्धित - एतद्विषयमे मिथिला भाषा मध्य जे मैथिल ज़ाँवक रिद्वल्ल प्रमाण सहित सरँज्जत लेख लिखताह, तनिका 50 ठोका मुनक पदक (मेडल) देल जेतहि । लेख 15 दिसम्बर 1911 ई. सँ पुर्व निरदककेँ पठा देरौक श्रद्धि । सद्गुद यात्राक पक्ष-रिषयमे मिथिलामोद(1911ई.) मे अलक लेख प्रकाशित भेटैत श्रद्धि । समुद्र थिक जे ओही प्रतियोगिता हेतु लिखन जेल हो । समाज सुधारक संग माहताभा मैथिलीक विकासक प्रति बाज्जा

साहेब कतेक साक्षात् छलाह, से एहि निरँङ्ग प्रतियोगिताक आयोजनसँ स्पष्ट होगत श्रद्धि । समान्यार्ति प्रतियोगिता तँ होगत छल, सद्गुद मैथिलीमे निरँङ्ग लेखन प्रतियोगिताक आयोजन प्रायः सरँप्रथम बाज्जा ठँकनाथ टोपवी, सएह आवस्तु कवाओल । बाज्जा ठँकनाथ टोपवी महाराज वमेश्वर मिहक प्रियप्रात्र छलाह । ओ समय-समय पव मिथिला, मैथिल एरँ ज़मीनदारीक समान्यार रिचार करैत बहेत छलाह । ओ



जखन कोला गन्नीव समाजक समाधानक लेन गरुब रा रायसबायसँ भेटै कबरौक हेतु जागत डुनाह, उँ बाजा ठँकनाथ टोषवी

हूक सँगमे बहेत डुनथि। आब जखन हूक देहरमान भेलनि उँ महाबाज बमेथेव मिह बाजा ठँकनाथ टोषवीकेँ Muthpicee of North Bengal कहि अगल मौक सँरेदना राख कएन। एहन माहताया अगुवागी बाजा ठँकनाथ टोषवीक, मात्रा 44 रयक अरुनामे जेठ पुर्णिमा बरि, प्रातः काल 3 जून 1928 केँ देहासु भए

गेलनि। बाजा साहँक रोग आ देहरमानक प्रसंग मिथिला मिहिव, निथेत अछि - रँहूव रोग से ग्रस्त बहल पब ती सान्ध, सँरेन ठुव प्रतारशानी जान पडते थे। मूँ से कइ दिन पहले उँनी के उँगसना से रुद्ध अन्नसु हो गये, जिसके निराकार्य दिनाजपुव मेँ 'अजकमेश' कवाये। काल रँनी था, रँवा होल राना था; अजकमेश से फायदा नही पहुँचा, उँनठे रँहि फुल गया, टित रिकन हुआ, दिनाजपुव से कनकठ आये, रँडू-रँडू डाकँठौ ल देखा, दरौ की, पबहुँ मिथुव काल के आगे किसका चलाता है, उँसका दरौ कोन कब सकता है? गत बरिबाव ता. 3 जून, 1928 ई. के भोव मेँ दूथी परिवारौ को रोते हुये छोड़ कब गम सँसार से सदा के लिये चल रँसे।'

बाजा साहँर पुत्रा नरानिग डुनथि। पविनामतः हेव हूक जमीनदारी केँस आफ रॉडिक अन्नसुत चन गेल। मैथिनक एक केन्द्र समाष्टु भए गेलैक। एहि प्रसंग कदनाथ टोषवी निखल छथि - With his passing away hundreds of relations, employees and dependents became unsettled, and the Estate being

taken over by the court of wards, they all went away to other places or their home. The family shifted to Calcutta for the

education of the children.

रँगनादेने निर्माणक रौद रँगन सौहार्दपुर्ण रातारकामे बजौबक एक रिश्वासपात्र दुर्गागज आरि बाजा साहँरक पुत्र (देहरमान 2004 ई.)सँ घुमि चनरौक अगुवाप कएल डुनथि जे रँगरँजु झजिबू बहमानक हलाक उँगवानु भावत रिबोधी रातारकामे रिनीष भए गेल। बाजा साहँरक पुत्ररँधू जे हूक नरजात पौत्र (प्रो. जी.एन. टोषवी, पुर्न अरुफ, रातकोतव समाजशोम्त्रा रिभाग, न.शा.मि.रि.रि. दवर्तगा) केँ अगल आँचवमे नुकाकेँ पड़ एन डुनाह, अगल आँथिमे मैथिली भाषा-साहित्य एरँ सँस्कृतिक प्रतारशानी केन्द्रक उँकेर्य आ त्रामदीक चित्रकेँ आँथिमे जौरण भरि (देहरमान 2009 ई.) जौगोल बहनीह। एहि सँग बाजा साहँरक परिवारक भारामेक सुत्रा वामगङ्गसँ भर्ष भए गेलैक। जेना कदनाथ टोषवी निखल अछि जे बाजा साहँरक देहरमानक रौद कतेको मैथिन परिवार आश्रिय रिनीष भए गाम रा अग्र चन गेनाह, ओहिमे कशीनाथ मा रा कटिनाथ मा 'किबशे' ठाँ नहि डुनाह, कोगनथ ग्रामरामी पण्डित गोररुष मा, प्रमिह गोषु रौँ मेहो डुनाह। गोषु रौँ पुत्र श्री सुधीव अमार मा, आ.ग.पी.एस. (मेरानिबूत) जखन 2006 ई. मे अगल पिताक आश्रिय नूनक अग्रयामे वामगङ्ग रँगनादेने अगल पुत्रक सँग पहुँचोह उँ ओतय मन्दिर देखन। हूक कनमराग देखन। खेत-पखाव देखन, जाहि पब हूक मेलजबक सन्तानक लोव-काबुली अधिकार छैक। आ रिना केरौव-थिडकीक ठाँत नुष्टएन एरँ खडहव रँगन बाजा साहँरक महन देखन। बाजा साहँरक नुष्टएन एरँ खडहव भेल महन प्रहक अगुवागीकेँ मैथिली भाषा साहित्यक विकास-गाथा छौहि पारि कहैत बहेत अछि। बाजा साहँरक देहरमान पब मौक राख कवैत मिथिला मिहिव निथेत अछि - 'आँथे भव आती है, कलेजा हफ्ता जाता है, लेखनी खर्ची बली है। न रोये रिना कलेजा हफ्ता नही होता, गमनिये मेवा निखना रोना समनिये। काल! उँ सट्टट काल ही नही, फुव ठुव मिथुव ती हो। अती पण्डित वामगङ्ग मा की मूँ मौक जवा ती मलिन होल नही पाया था कि हमारे समाज गगन के अन्तु नक्षत्रा बाजा ठँकनाथ टोषवी री.ए. को उँठा ले गया।'



किन्तु जाधवि मैथिली भाषा साहित्य बहत एरि बिदेहविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक सम्पर्त जखन-जखन आउत, बाज्जा ठकनाथ टोपवीरक नाम पहिन शैलीक मातृभाषा अक्षरांगीक कगमे आदवक संग स्पर्ष कएन जागत बहत ।

ए बचनपत्र अपन मतिब ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



नरेंद्र कुमार झा

आर्थिक संकष्ट मे चेतना, दु दिनक हत समारोह

मिथिलांचलक प्रतिनिधि सांस्कृतिक संस्था चेतना समिति द्वारा प्रति वर्ष आयोजित विद्वत्समीय विद्यापति स्मृति पर समारोह ए वर्ष दु दिवसीय हएत । 26 आ 27 नवम्बर केँ आयोजित ए समारोहक दबमिाल करि गोष्ठी विद्यापति गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकक मंचन कएन जाएत । सूत्रसं भेटेन जनतरेक अक्षरांगी चेतना समिति, आर्थिक संकष्टक दोबरे अछि तेँ ए वर्ष मात्र दु दिनक समारोह हएत । समितिक मठ विद्यापति भवनक गोष्ठेक एक वर्षसं पुनर्निर्माणक काज चलि बहन अछि तेँ समितिक आमादनी घटि गेल अछि । आमादनी घटिनाक संग महंगीक एँ दोबरे खर्च कम लेँ भेल आ समितिपब आर्थिक संकष्ट आरि गेल अछि तेँ अपन समिति संसाधनक काबज आर्थिक संतुलन रक्षण बखराक लेन रैहू प्रतिष्ठित आर्थिक आयोजनक समय अरुमिमे कठिनी कएनक अछि ।

समारोहक आयोजन लेन लेन रैमावक दबमिाल विद्यापति मठ, कर्मि अध्यापक आ जूनियर मास्टरसक समितिक आर्थिक संकष्टक जनतरेँ दैत समारोह मात्र दु दिन आयोजित कबराक निर्णय सुलोननि तेँ समितिक मठाधीनि सभक स्वातिमान एकाएक जागि उठन आ ओ एंगब अपन विरोध जलोननि ह्दा तीस सदस्यीय एँ प्रतिभा सम्पन्न कोब कठिनी एंगब काज लेँ देनक आ अपन निर्णयपब मोहब नहोराँमे सहन बहन । ओना तेँ देसमे बिदेशी निवेशक काबज आर्थिक संकष्टक रदवि नगराक आर्शिका विरोधी दल केँ भँ बहन अछि ह्दा एँ आर्थिक संकष्ट सभसं पहिन शिकाव जेना चेतना समिति भँ गेल अछि ।

समितिक एँ निर्णय बाज्जाणी पठनाक सक्रिय सामाजिक-सांस्कृतिक मैथिलजन आक्राम्यमे छथि । ओ समितिकेँ आर्थिक संकष्टसं उराँवरक लेन अपन योगदान देरँ चहित छथि ह्दा चेतनाक मठाधीनि कतिधरि जेना अचेत भँ गेल छथि । हुनका समाजसं सहयोग लेरँ मे कोला कटि लेँ छथि । ओ अपन असहनताकेँ उजागर लेँ होमए देरँ चहित छथि तेँ रारा विद्यापतिक मठ रैनन चेतना समितिक मठाधीनक गर्दमिमे घटि रैनराँक लेन सेहो ओ अपन समयक रैरिदी रूमि बहन अछि । पठनामे एक समय समितिक सक्रियताक काबज तीस दिन विद्यापति स्मृति पर समारोह प्रदेशे भरिमे चर्चाक विषय रैलैत छन । समय दब समय आम मैथिलक प्रति समितिक उदासीनता सँ एँ समारोहक दबवा घटैत जा बहन अछि आ कहियो हाडिग पार्क सभ पौष मैदान एँ समारोहक लेन छोट पछि जागत छन तेँ आरि उद्घाटन समारोह आ करि सन्धानक लेन जगह पौष भँ जागत अछि । मैथिल जनक एँ समारोहक



प्रति घण्टेत कटिक काका समावोह पब अस्तित्वक संकष्ट आरि गोन अछि । तीन दिनक राखिक आयोजन आरि दु दिनसय भन् बहन अछि ।

दु दिनक कार्यक्रम आयोजित करौक निर्णयक रौदारक जेन समिति सेहो जोडगव तर्क बखल अछि । समिति सूत्र ए सरीध से तर्क दन् बहन अछि जे रिवाजति भरणक पुनर्निर्माण आ कार्यक्रम सूत्र ले भेठनाक काका अरुपि घण्टागन गोन अछि । कार्यक्रम प्रति रर्य निश्चित समयपब निर्धारित अछि त समिति कार्यक्रम सूत्र आवधिक कवरौमे रिनय किय केनक, एगव योष अछि । दवअसन समितिपब राखिरादने एकाधिकाव हारी अछि । ए एकाधिकावक दूलीती देरौक सालस केओ ले कबन् टालि । एक दिस समिति ए राखिक आयोजनकेँ उगचारिकता रूमि बहन अछि त राजबलीक मैथिल जल सेहो एकव जयरारी आयोजन रूमि अपन उगहिति दर्ज करौक प्रयास करैत छथि ।

(कूथागली पाक यात्राक रिहाव सबकावक आन समद www.prdbihar.gov.in or www.prdbihar.gov.org पब उगदई अछि ।

ए बचानपब अपन मतब ggajendra@videha.com पब पठाओ ।

३. पत्र



३.१ जगदीश चन्द्र ठाकुर अखिल- की जेठव आ की लेवा लाव (आमे गीत)- (आगा)



३.२ जगदीश प्रसाद यादव लोटेक दर्जन गीत



३.३.१ कृष्णी कायत-पाँट ठी रौव करिता २



जगदीश सा मन्-रौव गजल



३.४. बाबुदेव माछव जीक दू लोष्टे करिता



३.५. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिव'-रौब गीत



३.६. उम प्रकाश-गज्जल



३.७. बागबिनास साहू- रौब करिता



३.४.१. किशोर कावीर- घोषानारैना गाग २.



अजीत शि-दीश्वारी ३.



श्याम दक्षिण- उरौया उरौया उरौया



जगदीश चन्द्र ठाकुर अखिल

की जेठन आ की हेवा जेन (आमे गीत) – (आगाँ)

बाबुके बहे डगमि हमावा
बुनियाव रणराकेव टिता
ओ देखथि लोकिक फिया-कर्म
आ काज पडन मोमा सभठा
पोथीस हमार प्रेम देखि
ओ डगा रहूत किछ डेवा जेन,
हम मोटि बहन डी जिरणमे
की जेठन आ की हेवा जेन ।
से गिता प्रेमस हारि जेना
आ जित जेन पोथी-गतवा
की गाम-घब, की फिया-कर्म
ओ रिसवि जेना टिता सभठा,

की जगभूमि की सब-कष्ट
सभ दुनियादावी रीना जेन,
हम मोटि बहन डी जिरणमे



की बैठेन आ की हेवा गेल ।

हमबहि मोमामे एक बाति

बाँरुजी अतिम मसि लेननि

तजि ज़िर्ग-शीर्ग एहि कायार्के

बर कायारे प्रस्थान लेननि

टनितो-टनितो एहि दुनियाँ

ओ डना रूत किछ सिखा गेल,

हम मोटि बहन डी ज़िरणमे

की बैठेन आ की हेवा गेल ।

घबनहुँ कए रबखक रौद गाम

ऊँजडन ऊँपठन ग़िनठन देखनहुँ

जै घबर्के बाँरु रैना गेल

ओ ग़ घबर्के खसल-पडल देखनहुँ

सभठो नताम सभठो लरौ

सभठो ग़नारै डन सुखा गेल,

हम मोटि बहन डी ज़िरणमे

की बैठेन आ की हेवा गेल ।

डन पथवागल सँरैध शैय

किछ रैचारिक अग़रैध शैय

मलर्के आनन्दित कबरौल



VIDEHA

एथनहू धरि डन किड गंध शेष

मागक हाथक पावन कोठी

मागक सत्ता दूध सुना गेल,

हम मोटि बहन डी ज़रिये

की बैठन आ की हेवा गेल ।

हम देखनहूँ उन्कापात कते

हम सहनहूँ समारोह कते

परिजन-प्रियजनम रिड्डन केव

सताप कते, आघात कते

सुख-दुख केव नश्यतक पाठ

अस्तिन्न गुरु रसि पढ़ । गेल,

हम मोटि बहन डी ज़रिये

की बैठन आ की हेवा गेल ।

(कहनिः)

ई बचोपब अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



अगदीने प्रसाद माछ

लौठेक दर्जन गीत

जोति हब.....

जोति हब हबराह तकड़ा

जिखगी गीत गले छै ।

जे-हुँट, हुँट जे रँगि रँग

छेष्टी-ठान रँगल छै ।

गे भोजी, छेष्टी..... ।

बूँष पगीह मराती पकड़ा

बस अमृत भरोत छलै छै ।

प्रति-वृत्त पवप्रति पकड़ा

तरे-हुँगले मिर मजे छै ।



VIDEHA

गे भोजी..... ।

नती रनि नतछि - पमवि

नतमरदन करैत बहे छै ।

छोटी जन छयछि - छयछि

खुन पमीना एक करै छै ।

गे भोजी..... ।

उरु पाणि छयछि - छयछि

मीन-मरोरब मेहो मजे छै ।

मीन-भान कशिक कमेप

मक स्थन गठित बहे छै ।

गे भोजी..... ।

शेखर-

हकछि - अरौज

नत- आदत

नतमरदन- आदतक फल

कशिक- कौशिन कना ।

हब हबक.....

हब हबक हबन्तमे

मीन-दोन तेहन रले छै ।



VIDEHA

पुव-पुवकव पुवम्सव

राष्ट-याष्ट घष्टरी छले छे ।

हल-हलक हलन्तमे...

एक-दू-तीस टाबि बहितो

गति गङ्गीस गाड़ ी धड़ छे ।

रैहिसार-हिसार रैगि रैग

धड़ धड़कि धड़त बहे छे ।

धड़ धड़कि..... ।

लक-अयोधिया सष्ट-हष्ट

सगी-सग छलेत बहे छे ।

निबशि पबथि राष्ट-रैठेली

फल कवनी भोलीत बहे छे ।

फल कवनी..... ।

शब्दार्थ-

हलन्त- घष्टरी

धड़ - भाँडा, धड़कन

निबथि- शुद्धि, परिवर्तन ।



हिम-गिरि.....

हिम-गिरि उठ उठुंग उमड़ि

निकल अमृत धाव रैहै छै ।

सिख-सिख सिहर-सहर

गग अकास रैहैत बहै छै ।

गग अकास..... ।

उतरे-दड़िल धड़ैल धाव

सिख-सगव देखै छै ।

बग-बग फूल माल सजि

मल गग साजि सजै छै ।

मल गग..... ।

हष्ट-सष्ट, सष्ट-हष्ट रैस-रैस

सागव-सिख धड़ैत बहै छै ।

गग-अकास उतड़ि -उतड़ि

गग-अकास..... ।

शेर्दार्थ-



प्रथम मैथिली पत्रिका *पत्रिका बिदेह* ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

सिंह-सिंह- द्रवित भ२ ठघड़र,

धड़-ध- धवती (धवती)

रैस-रैस- भेय रैना रैसर ।



सुख भुट्टि.....

सुख भुट्टि अकाम

बग-बग तारा सजे छै ।

तीन मिनि डड तबाजु

सभक तौन-गपेत बहे छै ।

सभक..... ।

कथला दयाँ रायाँ कथला

कीब-किबदानी करैत बहे छै ।

तेकठीक आस रिय पौल

उदा-अस्त करैत बहे छै ।

उदा..... ।

मातो सगब देखि सतलैया

कटकट रककट करैत बहे छै ।

भोव हागत भरछाँ - भरछाँ

थकतका थकतका मेज सजे छै ।

थकतका..... ।

शेखरार्थ-



डूँड-तबज्जु- मेघमे तीण तावा गिलि मोसा-मोसा बहैत ।

सतभैया- मेघमे सात तरेगण, जेकवा कछरैटिया मोहो कहन जाग डै ।



खुज्जिते आँधि.....

खुज्जिते आँधि तड़पि तड़पि

पृथिवी पग पधव पड़ै छै ।

धवती-अकाम रीछे-रीछ

थम्भ भेन देखै छै ।

थम्भ..... ।

अकाम अमरीत रँवसि

थोँगछ धवती भरीत बहै छै ।

आमा-आम गिनि रँसि

रँवहामा गरैत बहै छै ।

भाय यौ, रँवहामा..... ।

पव-रत रँत-पव रंग-रंग

हेन सङ्गद हेलेत बहै छै ।

राँव ङुपव ठेव-रँसि रण

दुगस हेन हेलेत बहै छै ।

मीत यौ, अहीकेँ कहै छै

दुगस..... ।



झड़जन मयलब.....

झड़जन मयलब पकड़ि - पकड़ि

ताम बिकदारनी तले छै ।

दोहन-दोहरी रुदि-चमकि

बटि-बटि बाम बटे छै ।

संगी, बटि-बटि..... ।

झुसक झुसकी मसकि-मसकि

कन-आनन अलैत बहे छै ।

लंगवा-ब्रमहा, जवन-मवन

रेणु-रण रीगा तले छै ।

संगी, रेणु-रण..... ।

शुब-सुब, मुड़ झुड़ि - मुड़ि

पग-प्रेम पलैत बहे छै ।

नष्ट-टुड़ि, थंझा दली

भोज अँल गारि कह छै ।

संगी, अँल..... ।



VIDEHA

शेर्दार्थ-

आङ्जन- अश्वश्रम, एक नम्रैव

आनहव- रैझा रैथारी

दोहन- दोछी (अन्नमे दोहन, हनमे दोछी, अर्थात् दु नम्रैव ।)

हँसी, खूमी, आशेकी, आसक गह्यादिक लिक छै ।

शुव- योछा

सुव- करि सुवन्तस ।



लोधुमि-रौन.....

लोधुमि-रौन डगव डगवि

थन-सागक थुथुन थुथरौं छै ।

आस सूर्ज असतन पारि

तब-हुंगव चमकए नली छै ।

तब-हुंगव..... ।

अरौं ककआएन कान देखि

पग-पगना पाछु घाँटे छै ।

पाँचम पलव पहन पलीव

बग-बग बैग बगछए नली छै ।

दीर सँसक दिव्य पारि

सगुमियाँ कहँए नली छै ।

सगुमियाँ..... ।

बाति दरी दरीदरीगत प्रभा

भाव-बककरी जगलै छै ।

द्व-द्व, द्व-द्व द्व

प्रात सूर्ज घाँटे अरौं छै ।

प्रात सूर्ज..... ।



प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



दोह - दोह.....

दोह - दोह दाँव घोव-घन

राँव नहि भेटै छै ।

कावी-भावी भावी करि-करि

अनह घाँव रँगै छै ।

अनह घाँव..... ।

अनहव घव साँपे-साँपे

रिसरिसाह रँगै छै ।

गजोतो अनवोथ भ२ भ२

घोव-घनघोव करै छै ।

घोव-घनघोव..... ।

नीना रँव नीनाधव रँव-रँव

बाशि बास बटै छै ।

मत् मत् मत् मत्-मत्

ममती छलि धड़ै छै ।

ममती छलि..... ।



प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

शेर्दार्थ-

दोड़- ठेकाव

कवि-कवि- कवई

श्रवणोप- सनहन्ताव

मत- रिटाव

मत- निमोक्षण ।



छेछे-छेछे.....

छेछे-छेछे छेछिया देनले

झूह-बाक भसका देनले ।

छेछे-छेछे..... ।

काष कषक छीनि-रीनि

रैलीव रौक रैना देनले ।

बाक-झूह-काष तकि

छेछे-छेछे छेछिया देनले

छेछे-छेछे..... ।

रैलीव-रौक छिनि-छिनि

मलि आँखि मसका देनले ।

गर्ह महक महक गर्ह

दिन-बाति गर्हा देनले ।

दिन-बाति..... ।

माँस लेना लेनी खुनि

भोव-भुकरा के छे ।



VIDEHA

बातु पाव थोपि-थोप

पाछे मन धड़कैत छल छै ।

पाछे मन..... ।

शेर्दार्थ-

झीमि-झीमि- झीम क२ झिड़कैत ।



टांगल टेल.....

टांगल टेल खब-थीब थितिने

टांग-झूठ झुसकी भले छै ।

हाम-परिहाम अङ्गहाम

लोक मुर्ज पहुँचै नली छै ।

लोक मुर्ज..... ।

तन-तना तक ताकि तरेगन

हिया-हिया देखेत बहे छै ।

बग एक बोलिनाग आनि

मानछैन बाति गढेत बहे छै ।

मीत यौ, मानछैन..... ।

अमिने-अस्त स्वा पाणि

साम पहिने अलखोन करै छै ।

बनि सगुनिया ताब-ताबा

आगुक अम्भ भलेत बहे छै ।

आगुक दम्भ..... ।



दीनक दोथ.....

दीनक दोथ कहे छी हे रँहिसा

दीनक दोथ कहे छी ।

रात-रात रँतिया कतिया

हँष्ट-हँष्ट हँष्ट हँष्ट छै ।

रँत-बगब बगडा -बगडा

पीसि पीस पीस छै ।

हे रँहिसा, पीसि-पीस..... ।

घले-अंगल रीज कोठा क

छीष्ट-गाडा बोपेत बहे छै ।

हुल कोठा क हुलक तेहल

जिबगी पाठ पढ़ेत बहे छै ।

हे रँहिसा, जिबगी..... ।

मिनाँ पीर नम-नम मिसा

मिनाएन घाँ तकेत बहे छै ।

बातिक हाव न दिसक माव न

जिबगी गीत गँरैत बहे छै ।



प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

हे रत्ना, जिन्गी..... ।



सगब समझदर.....

सगब समझदर सड़ा सवित

तन-मन आस सिबजै छै ।

दुर्गा देरी हे माँ कानी

असतन आस धड़लै छै ।

मीत यौ, असतन आस..... ।

थन तन मन पशु धन

पवरत सीस सजलै छै ।

तेब धाव तेरिआएन घाँ

मन मन माँ कहलै छै ।

मीत यौ, मन मन..... ।

पाणि रैमि रैमिया रूँकि

जिहगी तानि नटे छै ।

हे माँ, नगब रीच बीति-बीत

सती-सारित्री गुँठै छै ।

मीत यौ, सती..... ।

ए बचसापब अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाऊ ।



१. रूखी कायत-पाँच ठी खैव करिअ २. जगदीशन्द सा मय



बौल गज्ज

१



रूखी कायत

पाँच ठी खैव करिअ

१

रैथी

ढोड२ कक्का

रैथी-रैथी क२

अँतबक खेन ।

सोच२ तूँ एक रैव

रैथी-रैथी मे

की फबक भेन ।

रैथी कलत२

पव रैथी पोछत२ लोव

रैथी पव एक फन

रूदा रैथी पव दु फन

कबत२ गजोत ।

थाकि-हायि क२ जरै तूँ



VIDEHA

कतौ मैं एरैहक कक्का

मन रैवमारै नः

आगु जेतः रैथी ।

फुड दिन कः

मेजमाण रैनि गु तौवा

घब आगन डः

तौहव दूनाब आ

आशीय नः कः

टुप-टाप छलि जेतः रैथी ।

तरे फुष्टतः तौहव कोठ

आ अतवमन मैं

एतः एगो आराज कि

अगना जलम तूँ हेल

अग आगन मे अहियहन रैथी ।

२

काबि-रैजाव

काबि-धन काबि-रैजावी

काबि छदवमँ निगुठन

हमर देशे अछि ।

केना रैदाग कवरै अकवा

मगदव काबि-ग्राह अछि ।

मिटाँ-मिटाँ की देखरै

जरेँ उंगले अधकाव अछि



कोला दोसब ले बग अतः

मगदव कावी-रंजव अछि ।

बाह्रपति होए या प्रवासवती

सर कः सर दरिद्र अछि

कि करै रेशिमी कतेक रुद तक

अकवा देहमे समेन अछि ।

भगारु अग दिसक कः

अगल घब सँ

ले तँ अ रुझी तक

थाग नः तैयार अछि

मोछ - रिछक अगलामे

अही कः हाथमे

कैलक सबकार अछि ।

३

शेदक खेन

छु- अ सँ अनाव

आ सँ आम

बठैत जी पोथवा गेल

आर ले खेनर हय

अ शेदक खेन ।

मा- तँ चनु उबारै

छलि गतग



हवियव अगल

मान ओकव

पिश्रव भग्या क२

आरि कछु सरि गिनाक२

कतेक उडि बहन अछि पठिग ।

छु- अतो तँ अछि सरानक जान

माँ हगवा पहिले ए रँता दिख

एक सँ आगाँ कतेक होग छै

से सिखा दिख

माँ- तँ कछु आरि

कहियो ले उरैरै

अग थोन सँ

ले उममरै अकक अग जान सँ

तरि हग अहाँ क२ सरि सिथैरै ।

सरि सरानक जरैरै

अहाँ क२ रँलेरै ।

४

माँ रँता तँ एगो रात

माँ रँता तँ एगो रात

थोन तँ ए मेघक बाज

ले सरि बहे छै ओत२

कि छै ओकवा सरैक काज ।



VIDEHA

भोवक सुन्दर सुबज

दुगल क२ किए जवरै ठै

माँस पडैत हव

कत२ हवा जाग ठै ।

बागत क२ अरै ठै मामा

सजा क२ मोतियक थाव

कि ओतै ठै रूत रूडका सभाव ।

कहियो देखे छी कनिये

कहियो रैसी

कहियो तँ माहे ले देखाग य२

तूँ रैता माँ मामा एना किए

बुका-डुप्पी क२ खेन खेले य२ ।

सुन रूँडिआ हमर रौत

रिना पठल ले खूनत ए बाज

जेना-जेना अहाँ पठैत जएँ

सरँ भेद क२ भेदैत जएँ ।

३.

अनहार घरमे हल

हम रैषी छी तँ

हमर कोन दोष

हमहूँ तँ एगो जाण छी

हमरो आँखि य२

काण य२ झूठ य२



VIDEHA

हम ले निश्चय छी ।

ले चमारु एना केँटी

हमर मन डबाँग यऽ

देखियौ हमर कछन हाथ सँ

नाले खुन रैह यऽ ।

अनहाव घब सँ तँ

निकनऽ दिख

एक रैब तँ हमरो

अग निथुन समावकेँ देखऽ दिख ।

केना लेनक अतऽ जग मिता

उग बहगुकेँ जानऽ दिख

हमरा ले याक

जकवा लाग गुजे छै

उग मयक मूँह देखऽ दिख ।

२



जगदीश सा मय

रौन गजल

छले दुखदुख छले गुनगुन तमामा घुमि कए आरी
जिनेरी उतए छालेत तोहब भेटैतो रारी

पटेकेँ छुटव समस्त भेल गमकुनक शुक छुट्टी
दमो दिन बाति मेना घुमि कए नर रतु सत पारी

कबीया रैबबिया कदि कदि कए नाटे रैजायै रिन
छले चव ओकरा संगे हमहुँ लग्ना कनी गारी

रैनन मेनजल अछि रैकडी परति रैनन अछाले छै
रैबद सग रौक दिनभरि चुप्प बहए पहिबल जारी



बुँसलकौ और तौरो होमयावी मल्ल तँ बुँठिया लौ
नगोल धाँस रक कतएसँ सञ्जति नीकगव दारी

(रौहरे हज्ज)

ई बज्जलगव अणस मतिब ggaj_endra@videha.com गव गिआड ।



बाज्जदेर मतिब

दूँष्टी करिता

अणसदावी

अणसदावी गिँकैत छै रौनाम

नाथ, करोड़ आ ठँका-छेदांग

सभ बैंग दाम सभ बैंग नाम

जेहल अणसदावी तेहल दाम

देहाती दाम मेहरी नाम

जेहल ठँका तेहल काम

अणस कहँ सुनु हमर रौनाम

हमर के नगा सकैत अछि मोन

दूँष्टी बहन अछि गुवना खोन

महज्जहि हुँष्टत नरका रौनाम ।



VIDEHA

रैगमानी कठहँसी हँसैत अछि

डूँट आसनगव रएह रँसैत अछि

उकरे भेटैत आदव समान

गमानदावी पारैत अगमान

हमँ ले रँचन छी पुवा

नगन अछि रैगानीक धुवा

थोछजोँ ए पाव-सँ-उग पाव

ले भेटैत पुवा गमानदाव

रँजजोँ अहाँ रौबमँराव

कछ के अछि गमानदाव ?



रीखा

रीखा ले अछि खाली रीखा

माष्ट, पाणि, हरा प्रकाश

मैं गिलटे आस

डूँरि देत आस

आँखि देख बहन अछि माँट

रीखा मय आँकबक नाट

कानकेँ क२ बहन जाँट

अन्तबसे रौसल गाढ

एक-मैं-अलक पसवत

छेकल जागत आगाँ समवत

दैत अछि प्राण राह

रैठौत अछि सरैलक आह ।

किड अछि रौसी

किड अछि कम

अहीमे गिलत अछि

मत-बज-तम ।



एकवा अन्तवमे शक्ति अपाव
जाएत एक दिन धवतीक पाव
रीजक प्रमोक्षण अछि माव
हवफण रौलेत नर अ काव ।

ई बचोपव अपन मतेर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिद'

बौद्ध गीत

सब अहिमाकेव प्रजारी दुना महामो गंधी
तुलक रडकी पैय रंखावी दुना महामो गंधी ।
ओ कहमनि, एके छथि अग्ना-अग्निव
एके अछि मंदिर-मस्जिद
एके थिक कारी-काशी,
भावतरासीकेव मुन एक थिक
जाति एक थिक
सब छथि भावतरासी
बूमि पडेए पडेए तर-तय लबी दुना महामो गंधी



VIDEHA

ऊनक रँडकी पौघ रँखावी छुना महामो गंधी ।

सवाग्रहकेव

केननि

तेहेन प्रचाव,

भागन तुला

नत-गत

सात सङ्गदव पाव

ब्रँहा, रिष्टुं ठुव त्रिपुवारी छुना महामो गंधी

ऊनक रँडकी पौघ रँखावी छुना महामो गंधी ।

उ कहनि

सौमे दुनियाकेँ

रँगय एकठाँ गाम

सभकेँ भेटै

बोजी-बेष्टी

स'त दुआरैँ घाम

दुनियामे सभसँ उपकारी छुना महामो गंधी

ऊनक रँडकी पौघ रँखावी छुना महामो गंधी ।

ए बचोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



उम प्रकाश

गजन

कबेजक रौत ले कहियो रँगन एतय

कियो सुनक कहौ मोनक कहन एतय

सुखान गढुकेँ पछैरैमँ की लेते

हवत कोना जखन गाढे जवन एतय

हँसी कीलेत बहलौ सदिखल एँठाँ

नए छी हम ब्रका आमो मवन एतय

निखनकेँ भाग्य बिधि सरहक अनग कनसमँ

कपावक गग कियो ले गठि सकन एतय

गडे पव मुन "उम"क आह ले निकले

भ२ गेलौ सुन काँछे छी गडन एतय

रँहने-रुज्ज

महा-गङ्गा (द्वन्द्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ) - ३ लेख प्रहसक पाँतिये



ई बच्चापन अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाई ।



रामरतन माहू

रौन करिता

मेघक रविश्रुती-

ताबरौतौव पुवराँ रौँ

दिन-राति रौँ ले थके

गति मन्द पड़ा ते

गर्मी छठन असमान

ऊँसियाँ कबलाँ शुक भेल

एहेन अचबज कहियो ले भेल

गर्मी भगलै ले

मेघक रविश्रुती शुक भेल

तंडाव कोसँ गबजैत ठमकैत

सेना संगे मेघ धमकि गेल

आगु-आगु अन्हव रिहयि

पाछु मंगे शीतल रयाव

ठग-ठग ठमकैत रिजुबी चमकैत



VIDEHA

मेघक रविश्वती आरैए नगन

देखते मेघक रविश्वती

गर्मी ज्ञान रैटा भागए नगन

मेघक रविश्वती पढावैत गेन

मम-मम रैखा रैबसि गेन

गर्मीक पबकोगसँ छुट्टी भेल

मेघक रविश्वती घुमि घब गेल ।

ए बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



१. किशोर कारीग- घोठानारना पाग २.



अज्ञात मित्र-दीश्वरती ३.



शाय

दबिहरे- ओरैया ओरैया ओरैया

१



किशोर कारीग

घोठानारना पाग

(हान्य करिता)



VIDEHA

अ पोछेबी त हमरा सँ

उठल नहि उठि बहन अछि

कलक अछि जोड गगा दिय भाँज

अ छि घोषाचारना गाँज ।

हम पुछलियन अ की छि

उ हमरा काँन मै कहलनि

कोयना रौचनना सभ्ठा कसैया

हम एही पुरी मै बखल छि .

हमरा सात पुस्त लोकक पुजब

एही कसैया स छनी जायत

हम धवती मै पैंब नही बागारि आँज

अ छि घोषाचारना गाँज ।

दुपेटाग पौड़के अछि निय

झुदा केकरो सँ कहैँअ नहि भाँज

सबकारी सँपित हम केलियन बाँज-भाँज

अ छि घोषाचारना गाँज ।

कोयना बुखडक रैँठ-रैँखा दूआले

महियाँडन के सँजबी भेल

लोक हो-हो केलक झुदा



कोयला दगाली के बहना हमले ता भेल ।

खेब मंत्री पद भेटैत की नहि ?

ताहि दुखाले दुपेटाप पोष्टरी रललौह

मन्त्रि अगल नाम केल छि भाग

अ छी घोषणाकरना पाग ।

देखारथी दुखाले सबकारी खजाना पब

रैडका-रैडका ताना गठकल छि

रूदा बाति होएते देवी हमीह

भेय रैदनी खजाना गुष्टि लेत छी ।

मंत्रीजी के कहन के नहि मानत ?

सबकारी मामला मे कियक किछु रोजत ?

दुपेटाप मन्त्रि काज होयत छेक ओ भाग

अ छी घोषणाकरना पाग ।



श्री चैतन्य

दी न-लैन हो रा धनराज
आ गो भवय सते छलैन
रा छै-घाछैय गदियेन
ती बलुछिये भवय महैन ।

ग करौन सठ लथे मथैन
ब अ-बखलव गानि मथैन
र मिहारी एहि पवरे जुगाऊन ।

म अय छहु, मिथिला मलैन
हा थ माथ पव सते छलैन
न त-मति हमसत, हे भगवान ।



११८



श्याम दहिवर

उरैया उरैया उरैया
 उरैया उरैया उरैया
 हंगामा हंगामा हंगामा
 ज़िन्दगी उरैया हावव अछि मेरुन
 हारि जाव पाविसि आ ज़िन्दा जाव बैदल
 अमेरिका तऽ सलजे सुकवाती नटेन
 दुनियाक लोक सेहो फुगुआ गलैए
 गोबरीक उंगव करीबीक तार रैठव
 बलुआ लउसक फुगु पव रैलैकमेलक दूर वलव
 उज्जवत अवक नग
 फुलकत अवक नग
 दुरत ल रैक कोला एखाअछी की लेलमेल
 दुनियामे समताक ठंका छिायत
 वादेनके मानरुमऽ अवका छिायत
 फुलत ल रैम कतउ
 मवत ल लोक कतउ
 सङ्गमे तेव आ सङ्गमे लोस लेलैत
 मडबले लेलै आरि लेला चलायत
 सुकनीक देलमे एखनोना फुलायत
 चिरायर ल लेलै
 टाँडरि आरि कुकी
 गंगाक रैदवा पेछाएमे नहायर
 लोभ्याक लेलैके टाँ पव पठाएर
 बुझा आरि खोलाक माया ल पहिबत
 गीला ल कहिउ लेलै चलायत
 टनडलाग किनि लेता ज़िन्दा आ छी नेह
 लेलैके पवसु हावाउत फुलायर ।

शीव बहू शीव धक मोल भवमाँ नग
 पाणिमे माँ अछि फुगु कूँड नग
 कण्ठमे अछि नाचव अलैया रिखालमे
 लवरेलमे खोली पुवार रैवकाँड नग
 देखव छवि कलैव आ देखव छवि लिटल
 देखि लेलहुँ बुने देखवहुँ लुकव फुस
 उरैयाक देखावे तेव कते बाखव अछि

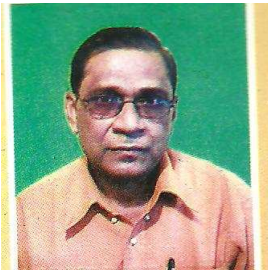


VIDEHA

उकलै तऽ अष्टकव वगैरै तऽ दीखै
नलै अछि छोट । पलै तऽ दीखै
खीण कते आ रैलै कते
दुवकी छलै की सबलै छलै
सम्भवत अवल की सुतलवत पाकिस्तान
लैबिया खेलावत की टेल पलतलवत
कारुण रैलैयत की पलतलवत गऽ कम
की लैल देल पलै छलैयत
छलै पाकै खुस ।

ई बलापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।

बिदेह बुतन अंक मिथिला कला संगीत



राजनाराय मिश्र

द्विमास मिथिला स्नागड शो

द्विमास मिथिला (<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)



उमेश मिश्र

मिथिलाक रसपति स्नागड शो



VIDEHA

मिथिलाक ज़ीर-जुड़ु झागड मो

मिथिलाक ज़िणगी झागड मो

मिथिलाक रणस्पति/ मिथिलाक ज़ीर जुड़ु/ मिथिलाक ज़िणगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

बिदेह बुतन अंक गद्य-गद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): खखर उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अश्वराद रिलीज्ड उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. द्विगुणता- प्रभा खेतमक हिन्दी उपन्यासक सुशीला मा द्वावा मैथिली अश्वराद

द्विगुणता

३. कमलमयी दीक्षित (मूल लण्कासँ मैथिली अश्वराद लीमती कगा धीक आ ली धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैडक देगे-भ्रमा

बिदेह पत्र



१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिब' - ब्रौण गज्जन



२. बाबुदेव माछव- ब्रौण करिता

१



जगदीश चन्द्र ठाकुर - अग्रिम

रौन गज्जन

१

बोवहि सभके आरि जगा

कोजली हमरा आंगन आ ।

घ बहमे भ२ गोन दूजोना

सभके धेमेक पाठ पढ़ । ।

रात-रातमे थापडि फुटै

सभके सुंदर रौन सिखा ।

स भ घ ब नागय अगल

एहेन मलक दीप जड़ । ।

नझी आरिथु स भ घ बमे

दरिद्रताके दूर भगा ।

मडुब भरी गामे पौसन



सभ जनके डेगुम रैछा ।

२

कत खसलिये यो पापा

कोना क एलिये यो पापा ।

पाष तमाफन थठका थेलौ

दाँत गमेलिये यो पापा ।

लीभब काज कबत कहिया धरि

शेवार पिगेलिये यो पापा ।

थेलि देनक असकन घ बसे

कोना कमेलिये यो पापा ।

महन छोटिक जहनमे एलौ

कते थठलिये यो पापा ।

लोकतंत्रके जर्जब केलिये

मुस रैलिये यो पापा ।

२



बाबुदेव यादव

बोध करित

झीगब झीग

नमगब रौमक झीग

गब नाटेत झीग

अगल देहकेँ जावि-जावि

तेयो छैमेकेँ मगहामि

अगहबकेँ नमकामि

हराम करैत गामि

एक धुममे छलि बहन

ममताक जेन गलि बहन

जेतरेँ ममता छै तेतरेँ

दोग-दागमे छैलि बहन

रैछैमेकेँ देखैत रैछै

हवा ल जाग कही करैछै ।

देत अकामि मभकेँ



मङ्गल अङ्कामँ तबि बाति

किन्ना ले देखते केकरो

बंग, कप आ जाति ।

ए बचोपब अणन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

रैछा लोकनि द्वारा स्वीय लोक

१. प्रातः काल अँलङ्कृत (सूर्योदयक एक घंटा पहिले) सरप्रथम अणन दुनु हाथ देखरौक चली, आँ अँ लोक रैजरौक चली ।

कवात्रे रसते नक्षीः कवमरा सबसती ।

कवमले हितो अँला प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षी रँसते छथि, कवक मध्यमे सबसती, कवक मूलमे अँला हित छथि । तबमे तहि द्वाले कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. मध्या काल दीप लेशरौक काल-

दीपमले हितो अँला दीपमरा जगदर्शनः ।

दीपात्रे शिखरः प्राकृतः सन्ध्याज्यातिर्मोक्षसुते ॥

दीपक मूल भागमे अँला, दीपक मध्यभागमे जगदर्शन (शिखर) आँ दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे सन्ध्याज्याति ! अहाँकेँ समझाव ।

३. सूर्योदय काल-

वाम कर्ण लक्ष्मण रैषतेय बृकोदवम् ।

शेयल यः सलेखि दूःस्वप्नसुश नष्टति ॥

जे सब दिन सूर्योदय पहिले वाम कर्णलक्ष्मण, लक्ष्मण, गकड आँ भीमक साक्षा करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भँ जागत छति ।

४. नहैरौक समय-

गङ्गा च यद्वले तैर जोदारवि सबसति ।



ॐ दीर्घायुर्भवेत् । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अगण देशेमे सुयोग्य आ सूर्यत विद्यार्थी उपेक्ष होथि, आ शत्रुके नानि कथिहाव सैनिक उपेक्ष होथि । अगण देशेमे गाय थुरै दुध दय रानी, रैवद भाव रहण कबएमे सक्षम होथि आ घोड़ । ह्वित कर्पे दोगय रैना होथि । स्त्रीगण नगवक लहलह कबएमे सक्षम होथि आ हरक सभामे ओजपूर्ण भाषा देरैयरेना आ लहलह देरैयरेमे सक्षम होथि । अगण देशेमे जखन आरथक होय रया होथि आ ठुमक-रुंठी सरदा परिपक्व होगत बहए । एरै एमे सभ तबहै हमरा सभक कला होथि । शत्रुक बुद्धिक नानि होथि आ मित्रक उदय होथि ॥

मन्त्राके कोन रत्नक गङ्गा कवरैक छाही तकव रनि एहि मन्त्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राटकवृत्तांगमान्ड काव अछि ।

अथवा-

अँल - विद्या आदि प्राप्त परिपूर्ण अँल

बाँद्रे - देशेमे

अँलरुँसी-अँल विद्याक तेजस हकत

आ ज्ञायता- उपेक्ष होथि

बाँजः - बाँज

शुले- रीना डब रैना

गयरा- रीना छेरैयरेमे निष्ठा

२तिरानी-शत्रुके ताका दय रैना

महावयो-पौघ बथ रैना रीव

दोष्टी-कामना(दुध पूर्ण कबए रानी)

प्रेमरौतमड्रानाशः प्रेम-लौ रा रानी रौतमड्राना- पौघ रैवद नाशः -आशः -ह्वित

महिः - घोड़ ।

प्रवर्द्धि-रौतमड्राना- प्रवर्द्धि- रारहावके पाका कबए रानी रौतमड्राना-स्त्री

जिष्णु-शत्रुके जीतए रैना

वप्रेयाः - बथ पव ह्वि



मन्त्रेयो-उत्तम सभामे

हराश-हरा जेहण

मज्जमान्श-बाज्जाक बाज्जामे

रीनो-मित्रुकेँ पवाजित कबएरना

मिकामे-मिकामे-मिश्चमहकत कार्यमे

मः-हमर सभक

पुर्ज्या-मेघ

मर्यतु-मर्या होए

मनरना-उत्तम मन रना

मयसः-मयसिः

पाटुत-पाक

मोक्षमो-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेन योगक बम्हा

मः-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

मिथिथक अमरनाद- हे अरना, हमर बाज्जामे अरना नीक धार्मिक रिवाज रना, बाज्ज-रीव,तीव्रदाज, दुध दए रानी गाय, दोगय रना जन्तु, उद्यमी नारी होथि । पाज्ज आरम्भकता पडना पब मर्या देथि, मन देन रना गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संवर्धित करी ।

बिदेह नृत्य एक भाषाक बचन-लेखन

गणिशिकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गणिश- प्राजेक्टकेँ आगु रैठ डि, अपन स्मार आ योगदान ए-मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोय (ऑनलाइन पढिन लेब सर्च-डिक्शनरी) एस.एस. एस.कु.एन. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपानक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा रनाउम मन्त्र नारी आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठक्रम



१. लपान आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा रचनायन मलक गेली

१.१. लपानक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रचनायन मलक उँचाकी आ लेखन गेली

(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादवरक धाकाकेँ पूर्ण कर्गसँ सञ्ज नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उँचाकी तथा लेखन

१. पठमाक्षर आ अक्षराव: पठमाक्षरबाहुज्जत ७, ए३, ण, न एरि म अरैत अछि । सयूत भाषाक अक्षराव शिद्दक अस्तुमे जाहि रक्षक अक्षर बहैत अछि ओही रक्षक पठमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्रि (क रक्षक बहरौक कावणे अस्तुमे ७ आएन अछि ।)

पथ (ट रक्षक बहरौक कावणे अस्तुमे ए३ आएन अछि ।)

खल (छ रक्षक बहरौक कावणे अस्तुमे ण आएन अछि ।)

सखि (त रक्षक बहरौक कावणे अस्तुमे न आएन अछि ।)

खल (प रक्षक बहरौक कावणे अस्तुमे म आएन अछि ।)

उपह्रास रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पठमाक्षरक रीदनामे अरिकाशि जगहपव अक्षरावक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अर्र, पठ, खल, सखि, खल आदि । राकवणरिद पठित गोरिन्द माक कहरि छनि जे करर, छरर आ छररसँ पूर्ण अक्षराव निखन जाए तथा तरर आ पररसँ पूर्ण पठमाक्षर निखन जाए । जेना- अर्र, छर, अर्र, अर्र तथा कषण । दूदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मालैत छथि । ओ लोकनि अर्र आ कषणक जगहपव सेहो अर्र आ कषण निखैत देखन जागत छथि ।

नरीण पछति किछु स्वरिधाज्जक अरर्र छैक । किछक तँ एहिमे समय आ स्थानक रीदत होगत छैक । दूदा कतोक रैव हस्तलेखन रा दूदनामे अक्षरावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि भेलसँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अक्षरावक प्रयोगमे उँचाकी-दोषक सम्वारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ नऽ कऽ पररर धरि पठमाक्षरक प्रयोग कवरि उँचित अछि । मसँ नऽ कऽ तऽ धरि अक्षरक सञ्ज अक्षरावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोणा रिवाद नहि देखन जागछ ।

२. ठ आ ढ : ठक उँचाकी "व ह" जकाँ होगत अछि । अतः जतः "व ह"क उँचाकी हो ओतः मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ठ निखन जएरौक छली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेठ्ठा, ठस, ठेरी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ढ = ढाँगा, ढैर, गठर, मठर, बूठर, माँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठ, पीठ आदि ।

उपह्रास शिद्द, सतकेँ देखनासँ ओ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिद्दक शुकमे ठ आ मर तथा अस्तुमे ठ अरैत अछि । गह निगम ड आ डक सम्वर्त सेहो नागु होगत अछि ।



३.र आ रँ : मैथिलीमे “र” क उच्चारण र कएन जागत अछि, ऋदा ओकवा रँ कएने नहि लिखन जएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रैनुनाथ, रिनुा, नर, देरता, रिष्ट, रँनि, रँदना आदि । एहि सभक स्थानपर फ्रान्से: रैनुनाथ, रिनुा, नर, देरता, रिष्ट, रँनि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहू-कतहू “य” क उच्चारण “ज” जकाँ करैत देखन जागत अछि, ऋदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली । उच्चारणमे यरु, जदि, जङ्गना, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जएरौना भेट, सभकेँ फ्रान्से: यरु, यदि, यङ्गना, युग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, ज्ञाए, लेखत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतिनी- कयन, ज्ञाय, लेयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया भेटक मुकमे ए मात्र अछैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि भेट, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे भेटक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य” क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अन्वसर्ष कवरौ उपायु मागि एहि पञ्चतकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसभावक उच्चारण-शैली सक अपेक्षा एम् रैनी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएर आदि कतिपय भेटकेँ केन, हेर आदि कएने कतहू-कतहू लिखन जएरौ सेहो “ए” क प्रयोगकेँ रैनी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चतकमे कोना रीतपर रँन दैत कान भेटक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणनहु, ओकवहु, तकोनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरँ हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकोने, छेष्ट, आना आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशित: यक उच्चारण थ लागत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी), यष्टको (थष्टको), वृषेनि (वृथेनि), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+ ध्वनि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे भेटसँ ध्वनि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फ्रिक्वासी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिल अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूचक छिने रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।



पठ२ गेवाह, क२ जेन, उठ२ गडतोक ।

(थ) गुरकानिक प्रत आथ (आए) प्रत्यमे य (ए) वृष्टु भ२ जागड, द्वाद जोग-मुटक रिक्की नहि नगाउन जागड । जेना-

गुरी कप : थए (य) गेन, पठाथ (ए) देरै, नहाए (य) अवाह ।

अगुरी कप : थए गेन, पठा देरै, नहा अवाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उठावण फियापद, मंडा, ओ विशेष तीनुमे वृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

गुरी कप : दोसवि यानिषि छनि गेनि ।

अगुरी कप : दोसवि यानिषि छनि गेन ।

(घ) रतिमान प्रदन्तक अन्तिम त वृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

गुरी कप : गठेत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अगुरी कप : गठे अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अरमाण गक, उंक, एक तथा लीकमे वृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

गुरी कप : छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरितैक, होगक ।

अगुरी कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरितै, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्य ह, ह् तथा हकावक जोग भ२ जागड । जेना-

गुरी कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गेनह, नहि ।

अगुरी कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गेनह, नग, नगि, ले ।

९. ध्रुमि श्रुताश्रुता : कोला-कोला ध्रुमि अणवा जगहसँ छष्टि क२ दोसवि ठाम छनि जागत अछि । थाम क२ द्वाय ग आ उंक सङ्ग्रहमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ गेन शिष्टक मया रा अन्तमे जै द्वाय ग रा उ आरैए तँ ओकव ध्रुमि श्रुताश्रुतित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मेनि (मेण), पाणि (पाण), दाणि (दाण), माष्टि (माष्ट), काड (काड्ड), मास (माडस) आदि । द्वाद तसेम शिष्ट, सभमे ग निख्य नागु नहि होगत अछि । जेना- बमिके बगय आ स्वर्गिके स्वर्गडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हन्त () क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हन्त () क आरम्भकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उठावण नहि होगत अछि । द्वाद संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टके मैथिली भाषा सङ्ग्रही निख्य अणुमाव हन्तरिलिख बाखन गेन अछि । द्वाद बाकवण सङ्ग्रही प्रयोजनक लेन अवरम्भक श्रुतपव कतहू-कतहू हन्त देन गेन अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राप्ति आ नरीन दुनु शैलीक सवण आ समीक्षण पक्ष सभकेँ समेष्टि क२ र्प-रिग्यास कएन गेन अछि । श्रुत आ सगममे रैतक सभहि हन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवण होरंरना हिमरस र्प-रिग्यास गिनाउन गेन



अङ्कि । रतमान समामे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यामसँ मैथिलीक क्कन जेरै पडि बहल परिश्रेष्कमे लेखनमे सहजता तथा एककतापब ध्यान देल गेल अङ्कि । तखन मैथिली भाषाक मुल विशेषता सब कृषिगत नहि होगक, तादृ दिस लेखक-मंडल सचेत अङ्कि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताब यादवक कहबै छनि जे सबलताक अक्सरूपमे एहन अवस्था किम्वं ल आरै देवैक चाली जे भाषाक विशेषता छैसि पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताब यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग नऽ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, णैना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-नैनी

१. जे नैद, मैथिली-साहित्यक प्राप्ति कर्म आग धरि जाहि रतनीमे प्रचलित अङ्कि, से सामान्यतः तहि रतनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

अथ

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अङ्कि

अग्राह

अथ, अथनि, एथेन, अथनी

ठिया, ठिना, ठ्या

जेकब, तेकब

तिनकब । (लेखनिक रूपेँ ग्राह)

अङ्कि, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप लेखनिकतया अपेक्षागत जायः भऽ लोव, भय लोव री भय लोव । जा बहल अङ्कि, जाय बहल अङ्कि, जाय बहल अङ्कि । कब लोवह, री कबय लोवह री कबय लोवह ।

३. प्राप्ति मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अङ्कि यथा कहयनि री कहयहि ।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखल जाय जतः श्रुतः 'अ' तथा 'उ' सदृश उच्चारण गऽ लो । यथा- देखैत, छलैक, लौथा, छैक अदि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित नैद एहि रूपेँ प्रयुक्त होयतः जेह, सैह, अह, उह, छैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत नैदमे 'अ' के कृप कबबै सामान्यतः अग्राह विक । यथा- ग्राह देवि आरैह, मायिनि लोमि (महेश्वर यात्रामे) ।

७. व्युत्पन्न रूप 'ए' री 'य' प्राप्ति मैथिलीक उद्भव आदिमे उँ यथारत लिखल जाय, किन्तु आधुनिक प्रयोगमे लेखनिक रूपेँ 'ए' री 'य' लिखल जाय । यथा- कयल री कयल, अयल री अयल, जाय री जाय अदि ।



१. उच्चारणमे दु स्वरक रीत जे 'य' ध्वनि स्रुतः आनि जागत अछि तकर लेखमे शुल लेकनिक कर्णे देव जाय । यथा- धीया, अठेया, रिखाह, रा धीया, अठेया, रिखाह ।

२. सांस्कृतिक स्रुत स्वरक शुल यथासंभव 'ए' विखव जाय रा सांस्कृतिक स्वर । यथा- ऐषण, कनिषण, किवतनिषण रा ऐषाँ, कनिषाँ, किवतनिषाँ ।

३. कावकक रिक्तस्थानक निम्नलिखित कग ग्राह्य- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'ये' ये अक्षराव सरखा लज्जा थिक । 'क' क लेकनिक कग 'केव' बाखव जा सकैत अछि ।

४. पुरिकाविक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कय' अक्षर लेकनिक कर्णे वगाव जा सकैत अछि । यथा- देखि कय रा देखि कय ।

५. माँ, भाँ आदि शुलमे माँ, भाँ आदि विखव जाय ।

६. अर्क 'न' ओ अर्क 'म' क रौदवा अक्षराव नहि विखव जाय, किंतु भागीक सुविधाई अर्क 'ड', 'ए', तथा 'ण' क रौदवा अक्षरावो विखव जा सकैत अछि । यथा- अर्क, रा अर्क, अक्षर रा अक्षर, कर्क रा कर्क ।

७. लवत छि निश्चयतः वगाव जाय, किंतु रिक्तस्थानक सग अकारांत श्रवण कय जाय । यथा- लीयान्, किंतु लीयानक ।

८. सब एकव कावक छि मेदमे सँ क विखव जाय, लँ क नहि, स्रुत रिक्तस्थानक लेख फराक विखव जाय, यथा यव गवक ।

९. अक्षराविकलेँ छन्दरिन्दु द्वारा रउ कय जाय । परंतु छन्दक सुविधाई हि समान छँव मात्राव अक्षरावक श्रवण छन्दरिन्दुक रौदवा कय जा सकैत अछि । यथा- हि केव रौदवा हि ।

१०. पूर्ण विवाय गामाँ (।) सृष्टि कय जाय ।

११. समस्त गद सँ क विखव जाय, रा लक्षणसँ जेहि क , लँ क नहि ।

१२. विष तथा दिष मेदमे रिक्तावी (२) नहि वगाव जाय ।

१३. अर्क देवतागरी कयमे राख जाय ।

१४. किंतु ध्वनिक लेख नरीन छि रौदवाव जाय । जा अ नहि रौदवा अछि तबित एहि दुनु ध्वनिक रौदवा पुरित अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ विखव जाय । आकि ए रा ओ सँ रउ कय जाय ।

ह.- लारिन्द सा ११/१३ लीकावु आरुव ११/१३ सुलेन्द सा सुल ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा संपादन गामाँ

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौल कय कग ग्राह्य):-

दुनु न क उच्चारणमे दौतमे जीह सँ- जेना रौजू नाय, दूदा न क उच्चारणमे जीह मूँमे सँ (ले सँ) उच्चारण दौय अछि)- जेना रौजू गणे। तावरा नेमे जीह तबसँ, यमे मूँसँ आ दुनु



समे दाँतसँ सँठत । निगो, सब आ गोकुल राजि कइ देखू । मैथिलीमे स केँ ऐदिक सँकृत जकाँ थ
मेला उँचवित कएन जागत अछि, जेना रया, दोय । य अलको स्रगव ज जकाँ उँचवित होगत अछि
आ न उ जकाँ (यथा संयोग आ गणने संज्ञा आ गइसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क
उँचवा र ने क उँचवा स आ य क उँचवा ज मेला होगत अछि ।

उहिना ज्ञान ग रोगीकान मैथिलीमे पहिल राजन जागत अछि काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ज्ञान
ग अक्षरक पहिल मिथिला जागत आ राजनो ज्ञानीक छली । काका जे हिन्दीमे एकदो दोषपूर्ण उँचवा
होगत अछि (मिथिल तँ पहिल जागत अछि द्वाद राजन रौद्रमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक
दोषक काका हम सब ओकर उँचवा दोषपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचवा)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचवा)

गँठि- ग हूँ ग ट (उँचवा)

आरि अ आ ग ज ए ई ओ उँ अ अः म अँ सत जेन मात्रा मेला अछि, द्वाद एँमे ज एँ ओ उँ अ अः
म केँ संज्ञाक्षर कण्ठमे गत कण्ठमे प्रयुक्त आ उँचवित कएन जागत अछि । जेना म केँ वी कण्ठमे
उँचवित करै । आ देखियो- एँ जेन देखिओ क प्रयोग अछि । द्वाद देखिओ जेन देखियो
अछि । कूँ हूँ धवि अ समितित जेनासँ कूँ हूँ रौद्र अछि, द्वाद उँचवा कान लल्लु यउँ गेदक
अनुक्त उँचवाक प्रवृत्ति रौद्र अछि, द्वाद हम जखन मलाजमे ज अनुमे रौद्र अछि, तखना पुनका
लोककेँ रौद्र स्वर्णि- मलाज, रात्रमे ओ अ यउँ जू = ज रौद्र छथि ।

हव उँ अछि जू आ एँ क संज्ञा द्वाद गत उँचवा होगत अछि- गा । उहिना अ अछि कूँ आ य
क संज्ञा द्वाद उँचवा होगत अछि छ । हव ने आ व क संज्ञा अछि ऐ (जेना ऐमिक) आ स आ
व क संज्ञा अछि स (जेना सिम) । ए जेन त+व ।

उँचवाक ऑडियो फागन बिदेह आर्काइव <http://www.videha.co.in/> गव उँगन अछि । हव
केँ / सँ / गव पूर्व अक्षरसँ सँठ कइ लिखू द्वाद तँ / कइ लै कइ । एँमे सँ ये पहिल सँठ कइ
लिखू आ रौद्रना लै कइ । अकक रौद्र एँ लिखू सँठ कइ द्वाद अथ ठाँग एँ लिखू लै कइ जेना

छलै द्वाद सब एँ । हव उँ अ म सतय मिथु- छथ म सतय लै । हवमे रौद्र द्वाद हवमे रौद्र
प्रयुक्त कइ ।

बहए-

बह द्वाद सकेँ (उँचवा सकेँ-ए) ।

द्वाद कथला कान बह आ बह ये अर्थ तिम्रता मेला, जेना मे कया जगहमे गार्किंग कवरौक अग्रस
बह ओका । पढ़नागव गता नागव जे दुन दुन नामा अ डाँगरव कण्ठ हसक गार्किंगमे काज करैत
बह ।

छलै, छल ये मेला एँ तबहक जेन । छल क उँचवा छल-ए मेला ।

संयोग- (उँचवा संज्ञा)

केँ/ कइ

केव- क (



केव क प्रयोग गद्यमे ले कर, गद्यमे कर सके छी ।)

क (जेना वागक)

वागक आ सँग (उँचावा वाग के / वाग कर सेहो)

सँ- स२ (उँचावा)

चन्द्रबिन्दु आ अश्वत्थाम- अश्वत्थामे कँठ धरिक प्रयोग लोगत अछि रुद्रा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावा लोगत अछि- जेना वागसँ- (उँचावा वाग स२) वागकेँ- (उँचावा वाग क२/ वाग के सेहो) ।

केँ जेना वागकेँ तेन हिन्दीक को (वाग को)- वाग को= वागकेँ

क जेना वागक तेन हिन्दीक का (वाग का) वाग का= वागक

क२ जेना जा क२ तेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ तेन हिन्दीक से (वाग से) वाग से= वागसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) ए८ टाक शेर, सरहक प्रयोग अछि ।

के दोसर अर्थ प्रयुक्त भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अछि ।

नमि, नहि, ले, नग, नँग, नग, नग, नग ए सभक उँचावा आ लेखन - **ले**

उर क रँदनामे रु जेना मरुगुर्ण (मरुगुर्ण ले) जउ अर्थ रँदनि जउ उतहि मात्र तीन अक्षरक संज्ञाकवक प्रयोग उँचि । सप्तति- उँचावा स स ग त (सप्तति ले- कावा सही उँचावा आसागीसँ सभर ले) । रुद्रा सरौतम (सरौतम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पौडिअ/ पौडि लेन/ पौडिअ लेव

पौडिअ/ पौडिअ (अर्थ परिवर्तन) पौडिअ/ पौडि

उ लोकनि (हठी क२, उ ये रिक्कावी ले)

उअ/ उहि

उहिअ/

उहि लेव/ उहि व२

जअरौं लेखन



VIDEHA

गँउअर्या

देथियोक/ (देथिओक ले- तहिना अ ये द्यन्न आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अवृत्ति)

झर्को / जेर्को

तँग/ तँ

लेयत / लयत

नमि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौंस/ सौंस

रेंड /

रेंडी (सोबरुव)

गाए (गाँग नहि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले ।)

बहलौ/ गहिलौ

हमलौ/ अलौ

सरें - सड

सरेंरुक - सडरुक

धवि - तक

गग- रौत

रूसरें - समसरें

रूसलौ/ समसलौ/ रूसलहँ - समसलहँ

हमरौ और - हम सड

आकि- आ कि

सकेड/ कलेड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होअ/ होनि

जाअ (जानि ले, जेना देन जाअ) ऋदा **जानि-रूमि** (अर्थ परिवर्तन)

गअर/ जाअर

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

ये, कै, मँ, गव (मिहँसँ सँ क२) तँ क२ व२ द२ (मिहँसँ सँ क२) ऋदा दूरी रा रौसी रिभङ्गि सँग
बहनागव गहिल रिभङ्गि ठाँकै सँडु । जेना **अमे मँ ।**



एकरी, दुरी (रूपा कय री)

रिकावीक प्रयोग मेदक अग्रमे, रीटमे अन्तरगत कर्णे ले। आकावातु आ अग्रमे अ क रीट रिकावीक प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ दिअ, आ, आ ले)

अन्तर्द्वितीयक प्रयोग रिकावीक रीटमाये कवर अग्रमे आ मात्र शर्षक तकनीकी नृणताक पविटायक)-
उना रिकावीक रीटमाये क २ अग्रमे कहन जागत अछि आ रीटनी आ उटाका दुनू ठाम एकव लाग रहैत
अछि। बहि सकेत अछि (उटाकाये लाग बहि रहैत अछि)। रूपा अन्तर्द्वितीयक मेहो अग्रमे गनमिर
केसमे लागत अछि आ रीटमे मेदमे जतए एकव प्रयोग लागत अछि जेना *raison d'être*
एतए मेहो एकव उटाका लेजेन डेटव लागत अछि, मात्र अन्तर्द्वितीयक अग्रमे ले दैत अछि रवण
जोडेत अछि, मे एकव प्रयोग रिकावीक रीटमा देनाग तकनीकी कर्णे मेहो अग्रमे)।

अग्रमे, एहिमे/ एमे

अग्रमे, जाहिमे

एअन/ अअन/ अअन

ले (ले नहि) मे (अग्रमे बहि)

तए

मे

दए

तँ (तए, त ले)

सँ (सए, स ले)

गाड तव

गाड वग

सॉस अग

जो (जो go, कले जो do)

ते/तअ जेना- ते दुआले/ तगमे/ तगले

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगम/ जगले

अ/अअ जेना- अ कावण/ अम/ अगले/ रूपा एकव एकरी आस प्रयोग- नावति कतेक दिस कहेत
बहेत अग

ले/वअ जेना लेम/ नगले/ ले दुआले

नहँ/ लो



लखौं लखौं लखौं लखौं लखौं लखौं

खौं खौं खौं

खौं खौं खौं खौं खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं खौं खौं खौं खौं

खौं खौं खौं खौं

खौं खौं खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं खौं खौं

खौं खौं

खौं खौं ...

समय गेबैदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे छन्द
आ रिभक्ति जूठैल छन्दे जना छन्देसँ, छन्देमे गत्यादि ।

खौं खौं खौं

खौं

खौं खौं खौं खौं खौं खौं

खौं खौं खौं खौं खौं खौं

खौं खौं खौं खौं



VIDEHA

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उअ

स्रीथि/ स्रीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

तने/ तनेली/

तवहि

ते/ तँग/ तँ

जधरै/ जधरै

नग/ न

डग/ ड

नहि/ नै/ नग

गग/

गे

डनि/ डनहि

टुकन अडि/ टाव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हस्थ

शीटॉक सूटोमे देन विकल्पमेसँ लैंग्ज एडिटव द्वावा कोन कप टुकन जेरॉक टाली:

रौलड कएन कप त्राह:

१. होयरैना/ होरैयरैना/ होमयरैना/ हेरैरैना, हेमरैना/ होयरॉक/ होरैयरैना / होयरॉक

२. अ / अ२

अ

३. क' जेल/क२ जेल/क३ जेल/क४ जेल/क' व२/व३/व४

४. ड' जेल/ड२ जेल/ड३ जेल/ड४

जेल

५. कव' जेनाह/कव२



गोवह/कवय गोवह/कवय गोवह

७.

विश्व/दिव विश्व, दिव, विश्व, दिव /

१. कव' रंवा/कव' रंवा/ कवय रंवा कव' रंवा/कव' रंवा /

कव' रंवा

५. रंवा रंवा (श्रुत), रंवा (श्रुत) ६

.

श्रीश्री श्री

१०. श्रीश्री श्री

११. दुःख दुःख १

२. छवि छवि छवि छवि छवि छवि

१३. देवविह देवविह, देवविह

१४.

देवविह देवविह/ देवविह

१५. छवि/ छवि छवि/ छवि/ छवि/ छवि

१६. छवि/छवि छवि/छवि

१७. एथला

एथला

१८.

रंवा रंवा रंवा

१९. ७ / ७२ (संस्कृत) ७

२०

७ (संस्कृत) ७ / ७२

२१. रंवा/रंवा रंवा/रंवा/रंवा/रंवा

२२.

जे जे /जे २ २३. ना-शुक्र ना-शुक्र

२४. रंवा/रंवा/रंवा/रंवा



VIDEHA

२३. तथगत/ तथगत

२४. छा

बलव/बलव बलव/बलव बलव

२५. निकनय/निकनय

वागव/ वगव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वगव निकव/ रैलवे वागव

२६. उतय/ जतय जत / उत / जजय/ उजय

२७.

की कुवव जे कि कुवव जे

२८. जे जे /जे२

२९. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३०. ओलो/ ओलो

३१.

हंस/ हंस हंस

३२. लो आकि दम/लो किरा दम/ लो रा दम

३३. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३४. छह/ सात छ/छ:/सात

३५.

की की / की२ (दीदीकावापुस २ रजित)

३६. जराय जराय

३७. कवयताह/ कवयताह कवयताह

३८. दलान दिशि दलान दिशि/दलान दिस

३९.

.. लोवह गवह/गवह

४०. किड आब/ किड ओव/ किड आब

४१. जाग छव/ जाग छव जाति छव/जेत छव

४२. गहुँटा छे जाग छव/ छे जाग छव गहुँटा/ छे जाग छव



VIDEHA

४३.

छरौन (श्रव)/ छरौन(खोजी)

४७. वय/ वय क / क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४१. व /व२ कय/

क२

४४. एथन / एथल / अथन / अथल

४६.

अखिले अखिले

३०. गखिव गखीव

३१.

धाव गौव कनार्थ धाव गौव कनार्थ/कनार्थ

३२. जेकाँ जेकाँ

झकाँ

३३. तहिन तहिन

३४. अकव अकव

३३. रैहिन रैहिन

३७. रैहिन रैहिन

३१. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

३४. नहि/ ले

३६. कवरी / कवरौय/ कवरौय

७०. तँ/ त २ तय/तय

७१. तैयावी ये जेठ-भाय/ते, जेठ-भाय/जय

७२. गिजौये दू भाग/भाय/भाय

७३. अ गौथी दू भाय/ भाय/ भाय/ जय। गौरत झरत

७४. गाय ये / गाय दू गाय गाय

७३. देहि/ दय दय/ दय/ दय/ दय/ दय/ दय



VIDEHA

७७. द / द२/ द३

७८. उ (संयोजक) उ२ (संलग्न)

७९. तका कय तकाय तका

८०. पैले (on foot) पैले कयक/ कैक

१०.

तहमे तहमे

११.

गवरीक

१२.

रैजा कय कय / क२

१३. रैजाय/रैजाय

१४. रैजा

१५.

दिया दिका

१६.

तहमे

१७. गवरीक/ गवरीक/

गवरीक/ गवरीक

१८. रौब रौब

१९.

तेह तेह(अक)

२०. ते ते

२१.

से/ के से/के

२२. अक/अक

२३. अक/अक

२४. अक



/ शुभक/ शुभ

+३. सखलक सखलक +३.

हुषि

+१. कवगयो/उ कलेयो ल देवक /कवियो-कवगयो

++ शुषि

शुषि

+६. सगड १-साँछी

सगड १-साँछी

६०. गख-गख गेल-गेल

६१. खेखेखे

६२. खेखेखे

६३. वग

६४. लेख-ले लेख

६५. सुसव सुसव

६६.

सुसव (सुसव अर्थमे)

६७. येह यख / गख/ गेह/ सख

६८. ताव

६९. अखाय- अखाय/ अखाय/ अखाय

७०. सिख- सिख

७१.

सिख सिख

७२. खख खख

७३.

खख (in different sense)-last word of sentence

७४. छत गव अखि खख

७५.



VIDEHA

ल

१०७. **खेवाँ** (pl ay) - **खेवाँ**

१०९. **शिकावत-** शिकायत

१०८.

ठग- ठग

१०९

. गड़ गठ

११०. **कसिए/ कसिये कसिये**

१११. **बाकस- बाकसे**

११२. **लोख/ लोय लोख**

११३. **खडवदा-**

उकदा

११४. **बूँसेवहि** (di f f e r e n t m e a n i n g - g o t u n d e r s t a n d)

११५. **बूँसएवहि/बूँसेवहि/ बूँसयवहि** (u n d e r s t o o d h i m s e l f)

११६. **चलि- चव/ चवि लाव**

११७. **खयाँ- खयाय**

११८.

मोन पाँचवहि/ मोन पाँचवहि/ मोन पाँचवहि

११९. **कैक- कयक- कयक**

१२०.

वग वग

१२१. **जखेवाँ**

१२२. **जखेवाँ जवउवाँ- जखेवाँ/**

जखेवाँ

१२३. **लोखत**

१२४.

টিস্টে- (t o t e s t) টিথগত

১২৬. **কবজাযো** (*willing to do*) কবোযো

୧୨୭. ଜେକବା- ଉକବା

୧୨୮. ତକବା-ତେକବା

१२७.

বিদেশৰ স্থানমে/ বিদেশৰ স্থানমে

১৩০. কবরঁয়নহঁ/ কবরঁএনহঁ/ কবরঁেনহঁ কবরঁেবোঁ

१३९.

ହାସିକ (ଝିଞ୍ଚାଣ ଯାତ୍ରାବଳ)

୧୩୨. ଓଢ଼ନ ରଞ୍ଜନ ଐକମୋଟା/ ଐକମୋଟା କାଗଜ/ କାଗଜ/ କାଗଜ

১২২. আঁষে ভাগ/ আঁষ-ভাগে

১৩৪. **শিচা / শিচায়/শিচাএ**

୧୩୬. ବ୍ୟସ/ ଲ

୧୩୬. **ବିଚା** କ୍ଷଣ

(କ) ଗିଫ୍ଟ ଡ୍ରାଏ

୧୩୭. ତଥା ଲ (ସ୍ୱ) କହେତ ଶକ୍ତି । କହେ/ ସ୍ୱଳେ ଦେଖେ ଛବି ଧ୍ୱଜା କହେତ-କହେତ/ ସ୍ୱଳେତ-ସ୍ୱଳେତ/ ଦେଖେତ-ଦେଖେତ

§ 34.

କଢ଼କ ଖାଟେ/ କଢ଼ାକ ଖାଟେ

१३८. कयाञ-धयाञ/ कयाञ- धयाञ

580

वग वग

୧୪୯. ଥେବାଉଁ (for playing)

ۛۛۛ.

ডখিহা/ ডখিব



VIDEHA

१४३.

होखत होख

१४४. का कियो / कउ

१४५.

कगे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. रैलगाथ/ रैलगाथ/ रैलगाथ

१४८. छलगाथ

१४९. ककरी कर्मी

१५०. छवछ छर्छ

१५१. कर्म कवग

१५२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै डुराँरै/ डुराँरै

१५३. एथुनका/

एथुनका

१५४. कथ/ विथ (राकक अंतिम गेह)- वर

१५५. कथक/

कथक

१५६. गवरी गर्ग

१५७

. बबरी बरी

१५८. सुना लवाल सुना/ सुना

१५९. एनाथ-लगाथ

१६०.

तेना ल खेववलि/ तेना ल खेववलि

१६१. नदी / ले



VIDEHA

१३२.

छटा छटा

१३३. कतहु/ कतौ कही

१३४. उमरिगव-उमरगव उमरगव

१३५. भविगव

१३६. धोन/धोधव धोएन

१३७. गग/गग

१३८.

क क

१३९. दवरैज/ दवरैजा

१४०. ठाघ

१४१.

ध ध

१४२.

घ घ

१४३. बौबलैक

१४४. बँड

१४५. तौ/ तू

१४६. तौहि(गद्यमे ग्राह)

१४७. तौली / तौलि

१४८.

कवरी/कवरी

१४९. एकैठा

१५०. कवितथि /कवतथि

१५१.

कूँट/ कूँट

१५२. बाखनहि बखनहि/ बखननि



VIDEHA

१४३.

वगवहि/ वगवनि/ वागवहि

१४४.

वृनि (उँटावा वृज)

१४५. **वृद्धि (उँटावा वृज)**

१४६. **एवनि लावनि**

१४७. **रितउल/ रिचेल**

रिचेल

१४८. **कवरँउवहि/ कवरौवनि**

कलेवहि/ कलेवनि

१४९. **कवएवहि/ कलेवनि**

१५०.

आहि/ कि

१५१. **गुँटि**

गुँटि

१५२. **रैती जवाय/ जवाय जवा (आनि नगा)**

१५३.

मे मे

१५४.

हौ मे हौ (हौमे हौ ब्रित्तिमे ली क)

१५५. **खेव खेव**

१५६. **खेव(spacious) खेव**

१५७. **होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/ होयतहि/ होयतहि**

१५८. **हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ**

१५९. **खेका खेका**

१६०. **देखाँ देखा**



VIDEHA

२०१. देखाई

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

साहेरें साहेरें

२०४. लोलेह/ लोवहि/ लोवनि

२०५. लेखक/ लेखिका

२०६. केला/ कएनहूँ/ केला/ केबू

२०७. किछु न किछु/

किछु ल किछु

२०८. घुमेनहूँ/ घुमाउनहूँ/ घुमेला

२०९. एलाक/ अलाक

२१०. अः/ अह

२११. नग/

नग (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक/ कलक

२१३. सरोलक/ सभक

२१४. गिला२/ गिला

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

जा

२१७. आ२/ आ

२१८. भ२ /भ' (" शर्लक कमीक आतक)

२१९. नियम/ नियम

२२०

.लेखक/ लेखिका

२२१. पहिल अक्षर ठा रीदक/ रीदक ठ

२२२. तहि/तहि/ तयि/ तै

२२३. कहि/ कही



२२४. ठँ/

ठँ / ठँ

२२५. नँ/ नँ नँ/ नँ/नँ

२२६. हे/ हँ / एहीहँ/

२२७. डँ/ डँ/ डँ/ डँ

२२८. दँ/ दँ/ दँ/ दँ

२२९. ओ (come)/ ओ (conjunction)

२३०.

ओ (conjunction)/ ओ (come)

२३१. कँ/ कँ/ कँ/ कँ

२३२. लँ-लँ-लँ-लँ

२३३. लँ-लँ-लँ-लँ

२३४. लँ-लँ-लँ-लँ

२३५. लँ न लँ- लँ ल लँ

२३६. लँ-लँ-लँ-लँ

२३७. ओ (come)-ओ (conjunction-and)/ओ । ओ-ओ /ओ-ओ

२३८. लँ-लँ

२३९. लँ-लँ-लँ-लँ-लँ

२४०. लँ-लँ-लँ-लँ

२४१. लँ-लँ-लँ-लँ

२४२. ओ-ओ ओ ओ ओ (conjunction), ओ कहन (he said)/ओ

२४३. लँ लँ/ लँ लँ/ लँ लँ/ लँ लँ

२४४. लँ/ लँ/ लँ/ लँ

२४५.

. लँ/ लँ

२४६. लँ / लँ/ लँ/ लँ

२४७. लँ



/ जाँ जाँ

२४५.सभ/ सरौ

२४६.सभक/ सरौलक

२४७.कहि/ कही

२४८.कला/ काला/ कलहूँ

२४९.शबकती भय गय/ भय गय/ भय गय

२५०.कला/ कला/ कला/कला

२५१.अः/ अह

२५२.जले/ जगल

२५३.लवनि/

लवनि (अर्थ परिवर्तन)

२५४.कलहि/ कलहि/ कलनि/

२५५.नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)

२५६.कनीक/ कलक/कनी-मनी

२५७.गठवहि गठवनि/ गठवगल/ गठवगलहि/ गठवगलनि/

२५८.निधय/ निधय

२५९.लेकटखव/ लेकटखव

२६०.गलि अकब कहल ठा रीटमे कहल ठ

२६१.आकावाभुमे रिकारीक प्रयोग उँटित ले/ अप्पोज्झाहीक प्रयोग हास्यक तकनीकी न्यूनताक परिचायक
उकव रौदना अरग्रह (रिकारी) क प्रयोग उँटित

२६२.कव (पद्यमे ज्ञाह) / -क/ क२/ के

२६३.देहि- ठहि

२६४.नलोय/ नलोये

२६५.होएत/ हएत

२६६.जाएत/ जएत/

२६७.आएत/ अएत/ आउत

२६८



२९४.म२/ सँ (हुदा द२, न२)

२९५.७.ब्र/तीन अक्षरक मेन रँदना प्रत्यक्षक एक आ एकठा दोसरक उँगयोग) आदिक रँदना ब्र
आदि । महु७.ब्र/ महु७/ कर्ता/ कर्ता आदिये त महु७क कोना आरम्भकता मैथिलीमे ले अछि । बउर

२९६.बैसी/ बैसी

२९७.रौना/रौना रँवा/ रना (बहुरँवा)

२९८

२९९.रावी/ (रँदनेरावी)

३००.राती/ राती

३०१.अनुबर्द्धिय/ अनुबर्द्धिय

३०२.समय/ समय

३०३.समयबका/ समयबका

३०४.वाली/ वाली (

बेहैत/ बेहैत)

३०५.वागव/ वागव

३०६.हरा/ हरा

३०७.वायवक/ वायवक

३०८.आ (come)/ आ (and)

३०९.गमताग/ गमताग

३१०. २ केव बारहाव मेदक अनुमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३११.कहेत/ कहे

३१२

बहू (हुवा)/ बहे (हुवे) (meaning different)

३१३.तागति/ तागति

३१४.खवाग/ खवाग

३१५.रौग/ रौगि/ रौगि

३१६.जाग/ जाग

३१७.कागज/ कागज/ कागज



VIDEHA

३७. *मिले* (meaning different - swallow)/ *मिथ* (थम्)

३१. *बहिर्द्वय*/ *बाह्यद्वय*

VI DEHA FOR NON RESI DENTS

MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1. The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2. The _Sci ence _of _Wor ds - GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3. On _the _dice _board _of _the _mill ennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4. NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr . Rajiv Kumar Verma and Dr . Jaya Verma

DATE-LI ST (year - 2012-13)

(१४२० श्रमवी साव)

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31



VIDEHA

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

Mundan Din:

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17



May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

FESTIVALS OF MITHILA (2012–13)

Mauna Panchami –08 July

Madhusravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July

Raksha Bandhan– 02 Aug

Krishnastami – 10 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat – 17 August

Vishwakarma Pooja– 17 September

Hartalika Teej – 18 September

ChauthChandra–19 September

Karma Dharma Ekadashi –26 September

Indra Pooja Aarambh– 27 September

Anant Caturdashi – 29 Sep

Agastyar ghadaan– 30 Sep

Pitri Paksha begins – 30 Sep

Jimootavahan Vrat a/ Jitika–08 October

Matri Navami – 09 October

Somvati Amavasya Vrat – 15 October

Kalashstapan– 16 October



VIDEHA

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat r i k a R a v e s h - 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober

Maha Navami - 23 Oct ober

Vi j aya Dashami - 24 Oct ober

Koj agar a - 29 Oct

Dhant er as - 11 November

Di y ab a t i , shyama pooj a - 13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a - 14 November

Bhr at r i dwi t i y a/ Chi t r agupt a Pooj a - 15 November

Chhat hi - 19 November

Devot t han Ekadashi - 24 November

r avi vr at ar ambh - 25 November

Navanna par van - 25 November

Kar t i k Poor ni ma - Sama Vi sar j an - 28 November

Vi vaha Panchmi - 17 December

Makar a/ Teel a Sankr anti - 14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a - 15 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 17 Febr uar y

Mahashi var at r i - 10 Mar ch

Hol i ka dahan - Fagua - 26 Mar ch

Hol i - 28 Mar ch



VIDEHA

Var uni Trayodashi -07 April

Chai ti navar atr ar ambh - 11 April

Jur i shi t al -15 April

Chai ti Chhat hi vr at a -16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya -13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -bar asai t - 08 June

Ganga Dashhar a -18 June

Somavat i Amavasya Vr at a - 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra - 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma -22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.पत्रिकाक सबठो पुरान अंक ब्रैल-बिदेह ई, तिवहूता आ देवनागरी कगमे Vi deha e j our nal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ईअंक ३० पत्रिकाक पहिल-

बिदेह ईमा सँ आगाँक अंक ३० पत्रिकाक-

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Downl oad

३.डिजिटल सँकलन आँ मैथिली. Maithili Audi o Downl oads

४.मैथिली वीडियो सँकलन Maithili Vi deos



३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहयोगी विकसित सेहो एक लेब जाई ।

३. बिदेह मैथिली क्लिप :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीजेशन :

<http://videha-aggregation.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अर्बुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्व-कप "आत्मसर्विक गाँव" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडेट्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलासक) जानबूत (रैनांग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल लेब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



VIDEHA

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका रेडियो आर्काइव

<http://videha-radio.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१७. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरत्न)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०. श्रुति प्रकाशन

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendratthakur123.blogspot.com>


२४. मंगल कथा

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  Videha Radio

२७.  Join official Videha facebook group.

२८. बिदेह मैथिली बाष्प उद्गार

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया



VIDEHA

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आथर

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाशु

<http://maithili-hai.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहारी कथा

<http://viharikatha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochnablogspot.in/>

महोदयपूर्ण मुद्रा: (१) बिदेह द्वारा धारारिक रूपे ई-प्रकाशित कय लेव गजेन्द्र श्रीराम निरंज-
शरद-समीक्षा, उपाध्याय (महाराष्ट्र), पद्म-संज्ञक (महाराष्ट्र), कथा-गल्प (गल्प-गुह),
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (द्वयारुह आ अमरुति मल) आ बौद्ध-किलोव सहित बिदेहमे संपूर्ण ई-
प्रकाशिक बौद्ध प्रिंटेड कार्यमे । ककषेनम्-अनुसंधान संस्कृत-१ ई १ Combined ISBN No.978-81-
907729-7-6 बिदेह एहि पृष्ठमे नीचे आ प्रकाशिक साइट <http://www.shruti-publication.com/> पर ।



महोदयगुरु सुजा (२)सुजा: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोश (अष्टवर्णन पछि लेब सट-डिक्शनरी) एम.एस. एम.क्यू.एच. सर्व आधरित -Based on ms-sql server Maithili - English and English-Maithili Dictionary. बिदेहक भाषांगिक- बलावेषन दुँभये ।

ककषेत्रम् अन्तर्गत- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निरंज-शरीर-समीक्षा, उपास (महोदयगुरु), पञ्च-संग्रह (महोदयगुरु टोपडगुरु), कथा-गण (गण संग्रह), बाँके(संस्कृत), महाकाव्य (द्वयसंग्रह आ अमरुति मर) आ रीतसिद्धि-किलोबद्धगत बिदेहमे संपूर्ण अ-शकलिक रीद छि कर्षये । ककषेत्रम् अन्तर्गत, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

७२ पृष्ठ : मुद्रा भा क. 100/- (for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/-per copy for Delhi /NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print-version publishers's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail shrutipublication@shrutipublication.com

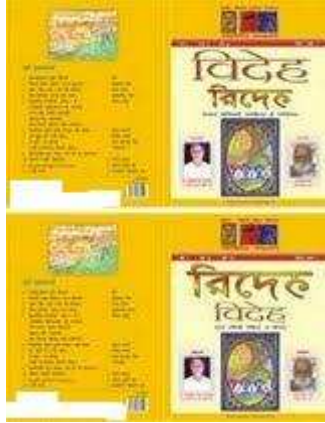
बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देवगुरु बिदेह क, छि सङ्कलन :बिदेह-अ-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छव बला सङ्कलित ।



प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका बिदेह ११८ म अंक १५ नवम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५९ अंक ११८)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print-version publisher's site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[बिदेह अ-पत्रिका बिदेह:सदेह: मिथिलासभ आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात अडक- निरख-परिचय-
समीक्षा/उपग्राम (सहस्रवर्षीय), पद्य-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपिचारा), कथा-गल्प (गल्प गुरु), नाटक (संस्कृत), महाकाव्य
(ब्रह्मावत आ अश्वमेध यज्ञ) आ रीति-रिवाज-कला-विकास-संग्रह इत्यादि अतिरिक्त मादें ।]

१. श्री गोविन्द मा- बिदेहकें तबंगजागव उतारि रिपुभविमे माहताया मैथिलीक नहरि जगाउन, थोद
जे अगलक एहि महाविद्यालये हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ । सुलित छी अगलकें सुमाओ आ
बढनामेक आलोचना प्रिय नलीत अछि तै किछु निथक मोन भेल । हमर सहायता आ सहयोग अगलकें
सदा उपनद्ध बहत ।

२. श्री बालमन्द के- मैथिलीमे अ-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ छना कइ जे अगल माहतायाक प्रचार कइ बहन
छी, से धन्यवाद । आगाँ अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दइ बहन छी ।

३. श्री विद्यानाथ मा "रिदित"- सदाव आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल हागमे अगल महिमामय
"बिदेह"कें अगला देहमे प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोनो उपनद्ध "मिथिल"सँ
नहि नागल जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक मुलाकिल आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि
लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट होत ।

४. प्रा. उदय नावागण सिंह "नटिकेता"- जे काज अहाँ कइ बहन छी तकर चर्चा एक दिन मैथिली
भाषाक इतिहासमे होएत । आनन्द भए बहन अछि, अ जानि कइ जे एतेक छोटा मैथिल "बिदेह" अ
जर्नलकें पठि बहन छथि । ...बिदेहक टानीसग अँक पुरवरीक लेल अभिनन्दन ।



३. डा. गंगेशि गुंजन- एहि रिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक सम्वन्धशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग, गतिहाम मे एक ठो रिश्ति हवाक अध्यास आवँत कबत, हमरा रिश्तिम अछि । अशेष शुभकामना आ रँधागक सङ्ग, सम्वन्ध...अहाँक पोथी ककफेदम् अतर्किक प्रथम दृष्ट्या रँहूत भरा तथा उपायोगी रँमागछ । मैथिलीमे तँ अगला स्वरूपक प्रायः ग्रा पहिले एहन भरा अरतावक पोथी थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक रँधाग स्वीकार करी ।

७. श्री बागेशि मा 'बागेशि' (आरंभ स्वीय)- "अगला" मिथिला सँ संबंधित...रिश्ति रँहूत अरगत भेलहूँ । ...मेय सब कर्मेन अछि ।

१. श्री ज्ञानेश्वर त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- गृष्टबल्लभ पत्र प्रथम मैथिली पक्षिक पत्रिका "रिदेह" केव लेन रँधाग आ शुभकामना स्वीकार कर ।

+. श्री प्रह्लादकाय मा 'मोक्ष'- प्रथम मैथिली पक्षिक पत्रिका "रिदेह" क प्रकाशक समाचार जानि कलक चर्चित हूदा रँसी आह्लादित भेलहूँ । कानटफेकेँ पकडि जाहि दुबदृष्टिक परिचय देलहूँ, ओहि लेन हमर मंगलकामना ।

६. डा. शिरधामदा यादव- ग्रा जानि अगाव हर्ष भए बहन अछि, जे नर सुचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रलेख दिखएवाक साहसिक कदम उठाउन अछि । पत्रकारितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "रिदेह"क सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आद्याचरण मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताछमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबताह- ग्रा तँ भरिया कहत । ग्रा हमर ++ रँयमे १३. रँयक अग्रतार बहन । एतेक पैघ महान यत्नमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहूति प्राप्ति होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहँ ।

११. श्री रिजय ठाकुर- मिथिला रिश्तिरिश्ता- "रिदेह" पत्रिकाक अँक देखलहूँ, सम्पूर्ण ठीम रँधागक पात्र अछि । पत्रिकाक मंगल भरिया हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ग्रा-पत्रिका "रिदेह" क रँनेमे जानि प्रसन्नता भेल । 'रिदेह' निवृत्त पत्रकारित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अगल स्वर्ण पमाव मे कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ग्रा-पत्रिका "रिदेह" केव सफलताक भंगरतीसँ कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री तीरमाथ मा- "रिदेह" गृष्टबल्लभ पत्र अछि तँ "रिदेह" नाम उचित आब कतेक कर्पेँ एकव रिश्ति भए सकैत अछि । आग-कालि मोनमे उद्वग बहैत अछि, हूदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देर । ककफेदम् अतर्किक देखि अति प्रसन्नता भेल । मैथिलीक लेन ग्रा घटना छी ।

१५. श्री बागेशि मा 'बागेशि' (आरंभ स्वीय)- "रिदेह" पत्रिकाक देखि बहन छी । मैथिलीकेँ अन्तर्विष्टीय जगतमे पहुँचेलहूँ तकवा लेन हार्दिक रँधाग । मिथिला बने सभक सँकलन अपूर्व । लपलाक सहयोग भेलैत, मे रिश्तिम करी ।

१६. श्री बागेशि मा 'बागेशि' (आरंभ स्वीय)- "रिदेह" ग्रा-पत्रिकाक माध्याम सँ रँड नीक काज कए बहन छी, नातिक अतिशय देखलहूँ । एकव रँयिक अँक जखन छिष्ट निकार तँ हमरा पठासर । कनकतामे रँहूत गोठेकेँ हम मागठक पता लिखाए देल छियहि । मोन तँ होगत अछि जे दिदी आरि कए आशीर्वाद दैतहूँ, हूदा उमर आरं रँसी भए लेन । शुभकामना देने-रिदेशिक मैथिलीकेँ जोडवाक लेन । .. उकृष्ट प्रकाशक ककफेदम् अतर्किक लेन रँधाग । अद्भुत काज कएन अछि, नीक प्रवृत्ति अछि सात खडमे । हूदा



अहाँक सेरा आ से निःस्वार्थ तखन बुझल जागत जई अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपब दम निखल नहि बहिकै। ओहिना सभकेँ रिनहि देल जगतिक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान् अहाँक सुचार्थ बिदेह द्वारा ज-प्रकाशित कएल सभेँ सामग्री आर्काइवमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/> पब रिना मुलाक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो बहिकै। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशिक अनुमति न२ क२ छिई कएमे प्रकाशित कएल छथि आ तकर ओ दम बखल छथि ताहिपब हमर कोना निराशा नहि अछि। - गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

११. डा. प्रेमोक्तिक मिह- अहाँ मैथिलीमे गृहबल्लभपब पहिल पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषावागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषावागसँ प्रेरित छी, एकब निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ सुचित करी। गृहबल्लभपब आध्यात्मिक पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भ२ गेल।

१२. श्रीमती मेघालिका रमा- बिदेह ज-पत्रिका देखि मोन उल्लास भ२ गेल। रिक्त कतेक प्रगति क२ बहन अछि... अहाँ सभ अपन आकाशकेँ भेदि दियो, समस्त रिक्तबक बहनकेँ ताब-ताब क२ दियो...। अपनक अद्भुत पत्रक ककम्प्रेत्रम् अतर्किक विषयसभक दृष्टि सँ गावमे सागब अछि। रंभाज।

१३. श्री हेतुकव मा, गृह-जाहि समर्पण भारसँ अपन मिथिला-मैथिलीक सेरामे तपब छी से खुब अछि। देशक राजधानीसँ भय बहन मैथिलीक शिक्षाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अरुण करत।

२०. श्री योगानन्द मा, करिणपब, नहेरियामबाय- ककम्प्रेत्रम् अतर्किक पोथीकेँ निकटसँ देखबक अरुण भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकठाँ उद्भूत ओ समामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कनमरन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "बिदेह"क देरनागरी सँकषण पठनामे क. ८०/- मे उपलब्ध भ२ सकल जे रिक्ति लेखक लोकनिक भाषा, परिचय पत्रक ओ बचनरनीक सम्यक प्रकाशिसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे रहूत बाम करिता, कथा, विरोध आदिक सचि सँग्रह देखि आ आव अरु प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रंभाज स्वीकार कएल जाओ।

२२. श्री ज्ञानकांत- बिदेहक द्वादित अक पठन- अद्भुत मेहनति। चरम-चरम। किछ समालोचना मवथाह..द्वाद मव।

२३. श्री भाग्यन्द मा- अपनक ककम्प्रेत्रम् अतर्किक देखि बुझल जेना हम अपन दुपल अछि। एकब रिशानकाय आप्रति अपनक मरिसमारेमताक परिचायक अछि। अपनक बचन सामर्थ्यमे उन्नतब बृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक रंभाज।

२४. श्रीमती डा नीता मा- अहाँक ककम्प्रेत्रम् अतर्किक पठनहुँ। जातिवैध्वंस शिष्टारनी, प्रथि मत्त शिष्टारनी आ सीत रंसु आ सभ कथा, करिता, उपन्यास, रान-किशोर सहित सभ उत्तम छन। मैथिलीक उन्नतब विकासक नम्र दृष्टिगोचर होगत अछि।

२५. श्री मायाणन्द मिश्र- ककम्प्रेत्रम् अतर्किक मे हमर उपन्यास मनीषक जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... ककम्प्रेत्रम् अतर्किक पोथीक लेल शुभकामना। (श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक कएमे नहि लेल जाय। - गजेन्द्र ठाकुर)

२६. श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककम्प्रेत्रम् अतर्किक पठि मोन हर्षित भ२ गेल..एखन पुन पठयमे रहूत समय नागत, द्वाद जतेक पठनहुँ से आह्लादित कएलक।



२१.श्री केदावलाथ टोषरी- ककक्षेत्रम् अतर्षिक अद्भुत नागन, मैथिली साहित्य जेन अ पोथी एकठा प्रतिमास रैषत ।

२२.श्री सखनन्द पाठक- रिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक छनहूँ । एकर अर्थात् निखन - ककक्षेत्रम् अतर्षिक देखनहूँ । मोष आह्लादित भऽ उठन । कोला बला तवा-उगरी ।

२३.श्रीमती ब्या सा-सम्पादक मिथिला दर्शनी । ककक्षेत्रम् अतर्षिक छिष्ट फार्म पठि आ एकव प्रारता देखि मोष प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शैली, एकवा जेन प्रशस्त कऽ बहन छी । रिदेहक उत्तमोत्तर प्रगतिक शुभकामना ।

२४.श्री नरेन्द्र सा, पठना- रिदेह नियमित देखेत बहैत छी । मैथिली जेन अद्भुत काज कऽ बहन छी ।

२५.श्री रामलाल ठाकुर- कोलकाता- मिथिलासुख रिदेह देखि मोष प्रसन्नतासँ भवि उठन, अर्थात् निखन पविदृष्ट आनन्दकारी अछि ।

२६.श्री तारानन्द रियोगी- रिदेह आ ककक्षेत्रम् अतर्षिक देखि चकरिदोब नागि गेल । आश्चर्य । शुभकामना आ रैषाङ्ग ।

२७.श्रीमती प्रेमनता मिश्र “प्रेम”- ककक्षेत्रम् अतर्षिक पठनहूँ । सब बला उच्चोर्षिक नागन । रैषाङ्ग ।

२८.श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रंगुसबाय- ककक्षेत्रम् अतर्षिक रङ्ग शीक नागन, आर्गाक सब काज जेन रैषाङ्ग ।

२९.श्री महाप्रकाश-सहस्र- ककक्षेत्रम् अतर्षिक शीक नागन, निखनकाय रंगहि उत्तमोर्षिक ।

३०.श्री अग्निप्रकाश- मिथिलासुख आ देवासुख रिदेह पठन..अ प्रथम तँ अछि एकवा प्रशंसामे हृदय हम एकवा दुःसाहसिक कहै । मिथिला छिष्टकाक सुन्दर हृदय अग्नि आ अर्थात् अर्थात् रैषाङ्ग ।

३१.श्री मज्जर सुखेमान-द्वर्तगा- रिदेहक जेतक प्रशंसा कएन जाय कम होएत । सब छिष्ट उत्तम ।

३२.श्रीमती प्रोफेसर रीणा ठाकुर- ककक्षेत्रम् अतर्षिक उत्तम, पठनीय, रिचार्जीय । जे का देखेत छवि पोथी प्राप्त कबरोक उगाय पुढेत छवि । शुभकामना ।

३३.श्री भवानन्द सिंह सा- ककक्षेत्रम् अतर्षिक पठनहूँ, रङ्ग शीक सब तबहै ।

३४.श्री तारकान्त सा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- रिदेह तँ कल्लेष्ट प्रोफेसरका काज कऽ बहन अछि । ककक्षेत्रम् अतर्षिक अद्भुत नागन ।

३५.डा बरीन्द्र कुमार टोषरी- ककक्षेत्रम् अतर्षिक रङ्ग शीक, रङ्ग मेहनतिक प्रशंसाम । रैषाङ्ग ।

३६.श्री अमरनाथ- ककक्षेत्रम् अतर्षिक आ रिदेह दुनु साक्षीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

३७.श्री पदार्थ मिश्र- रिदेहक रैषाङ्ग आ निवृत्तता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना ।



४४. श्री केदार काष्ण- ककषेत्रम् अत्रुर्मिक जेन अलक धन्यवाद, शुभकामना आ रैवांग स्वीकार कवी । आ नटिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागन जेना कोला उपायस अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि अदा पोथी उल्लेखी पब ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सब विधा समाहित अछि ।

४३. श्री धनक ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन छी । फोर्छे लोनरीमे छि एहि शितालीक जगतिथिक अनुभव बहेत त२ नीक ।

४३. श्री आशीष सा- अहाँक पुस्तकक संरचना एतरी निखरी सँ अगला कए नहि लोक सकनहुँ जे अ कितारै मात्र कितारै नहि थीक, अ एकठा उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुस्तक मेरा सँ निर्वतव समूह होगत टिबजीरन कए प्रोत् कवत ।

४१. श्री शम्भु कामा सिह- रिदेहक तपेवता आ फिनामीनता देखि आनन्दित भ२ बहन छी । निश्चितकषेण कहन जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिहासमे रिदेहक नाम स्थापितकषेण निखन जाएत । ओहि ककषेत्रक घटना सब तँ अठावहे दिसमे खतम भ२ गेल बहए अदा अहाँक ककषेत्रम् तँ अशेष अछि ।

४५. डा. अजित मिश्र- अलक प्रयासक कतरौ प्रश्ना कएन जाए कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज हाग-हागानुब धरि पुजनीय बहत ।

४६. श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ककषेत्रम् अत्रुर्मिक आ रिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक सान्ध ठीक बहए आ उमोह रँगन बहए से कामना ।

३०. श्री कामा बाधकामा- अहाँक दिशो-निर्देशमे रिदेह पहिन मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

३१. श्री सुनन्द सा प्रदीप- रिदेह:सदेह पठन बही अदा ककषेत्रम् अत्रुर्मिक देखि रैछ । अ देरी जेन राधा भ२ गेलहुँ । आरँ विमोस भ२ गेल जे मैथिली नहि मरत । अशेष शुभकामना ।

३२. श्री विभूति आनन्द- रिदेह:सदेह देखि, ओकर रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।

३३. श्री मालम्वे मल्लिक- ककषेत्रम् अत्रुर्मिक एकब तराता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशीन ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि देखल बही । एहिना तरियामे काज करैत बही, शुभकामना ।

३४. ककषेत्रम् अत्रुर्मिक रिस्तार - कोनकाता.एस.आ.आ.आ - श्री रिद्यानन्द सा., दुगाङ्गक संग प्रारता देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रैखसँ हम लगावैत छनहुँ जे सब पौष शिवमे मैथिली नागवैरीक स्थापना होअए, अहाँ ओकरा रेरैगब क२ बहन छी, अलक धन्यवाद ।

३५. श्री अरविन्द ठाकुर- ककषेत्रम् अत्रुर्मिक मैथिली साहित्यमे कएन गेल एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३६. श्री कामा पर- ककषेत्रम् अत्रुर्मिक पठि बहन छी । किछ नयुक्ता पठन अछि, रैहूत मार्गिक छन ।

३७. श्री प्रदीप रिहारी- ककषेत्रम् अत्रुर्मिक देखन, रैवांग ।



३.५.डा मणिकान्त ठाकुर-कैनिहोर्गिया- अगल रिक्का नियमित मेरामँ हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह मदेह भऽ जेन अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय । दुख होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ परिते छी ।

३.७.श्री देवर्षिक नरौण- बिदेहक निवृत्तता आ रिशोन स्वरूप- रिशोन पाठक रक्षा, एकटा ऐतिहासिक रँगरेत अछि ।

३.८.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखल, रूत नीक । एखन किछ परेशानीमे छी, रुदा शीघ्र सहयोग देरौ ।

३.९.श्री फजलुर रहमान हामिनी- ककफ्रेटम् अंतरात्मिक मे एतेक मेहनतक जेन अहाँ साधुरादक अधिकारी छी ।

३.१०.श्री नरका ना "सागर"- मैथिलीमे चमकोरिक कर्पे अहाँक प्रेममे आह्लादकारी अछि । ..अहाँकेँ एखन आव..दुब..रूत दुबधरि जेराक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न बनी ।

३.११.श्री जगदीश प्रसाद मिश्र- ककफ्रेटम् अंतरात्मिक पठनहूँ । कथा सभ आ उपास सहस्रौठनि पूर्णकर्पे पठि जेन छी । गाय-घबक भौलोलिक विवरणक जे सुझा रूनि सहस्रौठनिमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपास मैथिली लेखनमे विविधता अलनक अछि । समालोचना शीघ्रमे अहाँक दृष्टि रौचकिक नहि रवन् सामाजिक आ कलाकारि अछि, से प्रशंसनीय ।

३.१२.श्री अशोक ना-अध्यात्म मिथिला विकास परिवर्ध- ककफ्रेटम् अंतरात्मिक जेन रंधाङ्ग आ आगाँ जेन शुभकामना ।

३.१३.श्री ठाकुर प्रसाद रुद्र- अद्भुत प्रयास । धन्यवादक संग प्रार्थना जे अगल माष्टि-पानिकेँ ध्यानमे बाधि अकक समायोजन कएन जाए । नर अक धरि प्रयास सवालनीय । बिदेहकेँ रूत-रूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सटाव (आलेख) नगा बहन छथि । सभसँ ग्रहणीय- पठनीय ।

३.१४.रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'बिदेह'आ 'ककफ्रेटम् अंतरात्मिक रिक्का पत्रिका आ रिक्का पोथी ! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रसंगे सँ मैथिली क विकास होयत,निर्मदेह ।

३.१५.श्री रूचिनाथ चन्द्र नान- गजेन्द्रजी, अगलक प्रसन्न ककफ्रेटम् अंतरात्मिक पठि मोन गदगद भय जेन , हृदयसँ अश्रुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

३.१६.श्री पवनेश्वर कागडि - श्री गजेन्द्र जी । ककफ्रेटम् अंतरात्मिक पठि गदगद आ लहान भेलहूँ ।

३.१७.श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठेत बहैत छी । धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजबगब आलेख पठनहूँ । मैथिली गजब कतऽ सँ कतऽ छनि गेलैक आ ओ अगल आलेखमे मात्र अगल ज्ञान-पठिचान लोकक चर्च कएल छथि । जेना मैथिलीमे मठक पबपवा बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे आ स्पष्ट निखल छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छथि तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरीक द्वारा, एहिमे आन कोना काबि नहि देखन जाय । अहाँसँ एहि विषयक विस्तृत आलेख सादर आग्रहित अछि । -सम्पादक)



१५. श्री मांवेष्टेव मा- बिदेह पठन आ मंगलि अहाँक मैगनम उगम ककफेक्ट्रम् अतर्गिक मेहो, अति उतुम। मैथिलीक लेन कएन जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुनगीय अछि।

१२. श्री हलप्रष्ठ मा- ककफेक्ट्रम् अतर्गिक मैथिलीमे अगन तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन कोमल देखबामे आन जे लेखकक अनीतरकर्म जूडन बहरोक कावर्ग अछि।

१३. श्री सुकांत मोम- ककफेक्ट्रम् अतर्गिक मे समाजक गतिहास आ रतिमान अहाँक जूडन रीडन नीक लागन, अहाँ एहि फेक्ट्रमे आव आगाँ काज कवर मे आगो अछि।

१४. श्री प्रोफेसर मदन मिश्र- ककफेक्ट्रम् अतर्गिक सन कितार मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशान मंगलकव मोध कएन जा सकैत अछि। भविष्यक लेन शुभकामना।

१५. श्री प्रोफेसर कमला टोपरी- मैथिलीमे ककफेक्ट्रम् अतर्गिक सन पोथी आरैए जे गुण आ कण दूनुमे निम्न होअ, मे रीत दिन अँकाफा डन, उ आरै जा क२ पूर्ण लेन। पोथी एक हाथ मे दोसर हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ मेहो अहाँ आगो अछि।

१६. श्री उदय चन्द्र मा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएनहुँ अछि मे मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएन डन। शुभकामना। अहाँकै एखन रीत काज आव कवरोक अछि।

१७. श्री प्रष्ठ कमार कृष्ण: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँ भैँठे एकठा सक्तीय फण रनि गेन। अहाँ जतेक काज एहि रँसमे क२ गेन डी तारिँ हजाव गुण आव रँगीक आगो अछि।

१८. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेन भैँ, नहि भैँठैत अछि। अहाँक ककफेक्ट्रम् अतर्गिक सम्पूर्ण कर्ण पठि गेनहुँ। ब्रह्मरूप रीडन नीक लागन।

१९. श्री वीरेंद्र . कमार मा- बिदेह ई-पत्रिकाक सभ अँक ई-पत्र मे भैँठैत बँहैत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका डैक एहि रीतक गर होगत अछि। अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकै हार्दिक शुभकामना।

बिदेह



मैथिली माहिर आदान

(८)२००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन। बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका ई-पत्रिका। ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-संपादक: उमेश मिश्र। सहायक संपादक: मिर कमार मा आ झरारी (मेलार कमार कर्ण)। भाषा-संपादक: नाथेंद्र कमार मा आ पञ्जीकर विष्णुनाथ मा। कवि-संपादक: ज्योति मा टोपरी आ बरि लेखा मिश्र। संपादक-लोच-अक्षर: डा. जया रर्मा आ डा. बरारी कमार रर्मा। संपादक- नाटक-वर्ग-चर्चा-चर्चा-



लेख ठाकुर । सम्पादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुन्य मंचन आ धियका सा । सम्पादक- अग्रवाद
विभाग- विनीत उपेव ।

बचनाकाव अपन यौनिक आ अथकाशित बचना (जकर यौनिकताक संपूर्ण उतवदागिह लेखक गणक मया
डहि) ggajendra@videha.com के मेन अटैचमेण्टक कगमे .doc, .docx, .rtf वा .txt
फॉर्मेटमे पठा सकेत डहि । बचनाक संग बचनाकाव अपन संपिष्ट परिचय आ अपन यौन कएन गेन
होए पठेताह, से आशिा करैत डी । बचनाक अंतमे ठागप बहय, जे आ बचना यौनिक अडि, आ
पहिन प्रकाशिक हेतु बिदेह (पत्रिका) आ पत्रिकाके देन जा बहन अडि । मेन प्राप्ता होयराक बाद
सथामभर शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली
पत्रिका आ पत्रिका अडि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संपिष्ट बचना
प्रकाशित कएन जायत अडि । एहि आ पत्रिकाके त्रीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०५ आ १३ तिथिके आ
प्रकाशित कएन जायत अडि ।

(c) 2004-12 संपिष्टिकार स्ववक्ति । बिदेहमे प्रकाशित सभ्ठा बचना आ आर्काइवरक संपिष्टिकार
बचनाकाव आ संपिष्टिकारक नगमे डहि । बचनाक अग्रवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काइवरक उपयोगक
अधिकार किराक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि सागठके प्रीति सा ठाकुर,
मधुनिका टोपरी आ बग्गि प्रिया द्वारा डिजाइन कएन गेन ।



सिंहिबडु

